प्रयागराज, रविवार 01 फरवरी 2026 से शनिवार 07 फरवरी 2026 तक

वर्ष-14 अंक-05
पृष्ठ- 8 मूल्य: 3 रूपये

आधुनिक भारत का आधुनिक नजरिया

आधुनिक समाचार

हिन्दी साप्ताहिक

नगर संस्करण 13

डाक पंजीयन नं. 99/2018-20

E-mail:-adhuniksamachar2014@gmail.com

website:www.adhuniksamachar.com

संक्षिप्त समाचार

देवघर में आठ साइबर अपराधी गिरफ्तार,14 मोबाइल फोन जब्त

नई दिल्ली। झारखंड के देवघर जिले में पुलिस ने छापेमारी कर आठ साइबर अपराधियों को गिरफ्तार किया और उनके कब्जे से 14 मोबाइल फोन जब्त किए। अधिकारी ने बताया कि यह छापेमारी बृहस्पतिवार को पलाजोरी थाना क्षेत्र के अंतर्गत लुसियो पहाड़ी इलाके के पास की गई। पुलिस को सूचना मिली थी कि एक गिरोह फोन कॉल के जरिए खुद को कस्टमर केयर कर्मी, बैंक अधिकारी और सरकारी कर्मचारी बताकर लोगों को ठग रहा है। साइबर डीएसपी राजा मित्रा ने बताया, 'हमने आठ साइबर अपराधियों को गिरफ्तार किया है। प्रारंभिक जांच में सामने आया है कि आरोपी खुद को कस्टमर केयर कर्मी और बैंक अधिकारी बताकर फोनपे उपयोगकर्ताओं और पीएम किसान योजना के लाभार्थियों को कैशबैक का लालच देकर ठगते थे।

लखनऊ में करीब दो करोड़ रुपये मूल्य की हेरोइन जब्त की, एक तस्कर गिरफ्तार

नई दिल्ली। केंद्रीय मादक पदार्थ ब्यूरो (सीबीएन) ने शुक्रवार को एक कथित तस्कर को गिरफ्तार कर उसके पास से 280 ग्राम हेरोइन जब्त की है। एक अधिकारी ने यह जानकारी देते हुए बताया कि जब्त हेरोइन की बाजार में अनुमानित कीमत लगभग 1.96 करोड़ रुपये है। सीबीएन की उत्तर प्रदेश इकाई के उपायुक्त प्रवीण बाली ने 'पीटीआई-भाषा' को बताया कि यह बरामदगी बख्शी का तालाब तहसील के लखनऊ-सीतापुर रोड पर स्थित इंतौजा टोल प्लाजा पर चलाए गए एक अभियान के दौरान की गई। अधिकारी ने बताया कि यह अभियान विशिष्ट सूचना के आधार पर चलाया गया था। उन्होंने बताया कि संदिग्ध के लखनऊ में हेरोइन पहुंचाने के लिए जाने की सूचना मिली थी जिसके बाद सीबीएन की एक टीम ने उत्तर प्रदेश राज्य परिवहन निगम (यूपीएसआरटीसी) की बस में यात्रा कर रहे एक व्यक्ति को रोका।

नकाबपोश लोगों ने चंद्रपुर कांग्रेस पार्षदों को बस से अगवा करने की कोशिश की, मामला दर्ज

मुम्बई। महाराष्ट्र के चंद्रपुर से कांग्रेस पार्षदों को नकाबपोश लोगों द्वारा शाम बस से कथित तौर पर अगवा करने की कोशिश के मामले में छह लोगों के खिलाफ मामला दर्ज किया गया है और एक आरोपी को गिरफ्तार किया गया है। पुलिस ने बताया कि नागपुर से सटे वर्धा जिले में समृद्धि एक्सप्रेसवे के पास चंद्रपुर नगर निगम (सीएमसी) के नवनिर्वाचित पार्षदों को ले जा रही बस को कुछ लोगों ने रोक लिया और कथित तौर पर कांग्रेस के सदस्यों को अगवा करने की कोशिश की। यात्रा कर रहे एक वरिष्ठ पार्षद ने बताया कि पार्टी समर्थकों के समय पर पहुंचने और पुलिस के हस्तक्षेप से स्थिति नियंत्रण में आ गई। पार्टी सूत्रों के मुताबिक, कांग्रेस विधायक दल (सीएलपी) नेता विजय वडेट्टीवारके समर्थक 17 से 18 पार्षद नागपुर जा रहे थे, जहां उन्हें नगर निकाय चुनाव के बाद नियमों के अनुसार संभागीय आयुक्त कार्यालय में अपने गुट का पंजीकरण कराना था।

अमेरिका-ईरान तनाव के बीच अरब राष्ट्र के मंत्रियों ने की पीएम मोदी से मुलाकात, इजराइल के पीएम नेतन्याहू ने भी कटाया दिल्ली का टिकट!

नई दिल्ली। ईरान और अमेरिका के बीच उफनते तनाव ने पश्चिम एशिया को बारूद के ढेर पर ला खड़ा किया है। इसी पृष्ठभूमि में भारत में अरब देशों के विदेश मंत्रियों का एकजुट होना शक्ति संतुलन को प्रभावित करने वाला संदेश है। भारत और अरब विदेश मंत्रियों की दूसरी बैठक के अवसर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और विदेश मंत्री एस जयशंकर से अरब प्रतिनिधिमंडल की मुलाकात ने यह साफ कर दिया कि दिल्ली आज पश्चिम एशिया की राजनीति में एक निर्णायक केंद्र बन चुकी है।

प्रधानमंत्री मोदी ने अरब प्रतिनिधियों का स्वागत करते हुए भारत और अरब जगत के बीच सदियों पुराने जन संपर्क संबंधों को रेखांकित किया। उन्होंने स्पष्ट कहा कि यही ऐतिहासिक जुड़ाव आज व्यापार, निवेश, ऊर्जा, प्रौद्योगिकी, स्वास्थ्य और नवाचार के नए अध्याय खोलने की बुनियाद है। प्रधानमंत्री मोदी का यह बयान उस समय आया

जब पश्चिम एशिया क्षेत्र में युद्ध की आशंकाएं गहराती जा रही हैं और वैश्विक शक्तियां अपनी अपनी चालें चल रही हैं। बैठक का सबसे संवेदनशील पक्ष फिलिस्तीन का मुद्दा रहा। प्रधानमंत्री ने फिलिस्तीनी जनता के प्रति भारत के निरंतर समर्थन को दोहराया और गाजा शांति योजना सहित चल रहे शांति प्रयासों का स्वागत किया। उन्होंने क्षेत्रीय शांति और स्थिरता के लिए अरब लीग की भूमिका की सराहना की। अरब लीग के महासचिव और सदस्य देशों के विदेश मंत्रियों की मौजूदगी ने इस समर्थन को बहुपक्षीय स्वर दिया। वहीं विदेश मंत्री डॉ. एस. जयशंकर ने अरब देशों के मंत्रियों के साथ बैठक के दौरान साफ किया कि भारत किसी एक ध्रुव का अनुयायी नहीं बल्कि संवाद और संतुलन का पक्षधर है।

विदेश मंत्री डॉ. एस. जयशंकर ने भारत-अरब विदेश मंत्रियों की दूसरी बैठक में वैश्विक और क्षेत्रीय हालात पर भारत का दृष्टिकोण स्पष्ट करते हुए कहा कि दुनिया इस समय बड़े परिवर्तन के दौर से गुजर रही है। राजनीति, अर्थव्यवस्था, तकनीक और जनसांख्यिकी, सभी शक्तियाँ एक साथ सक्रिय हैं और इसका सबसे गहरा प्रभाव पश्चिम एशिया (मध्य पूर्व) में देखा जा रहा है। डॉ. जयशंकर ने कहा कि बीते एक वर्ष में पश्चिम एशिया का परिदृश्य नाटकीय रूप से बदला है, जिसका सीधा असर भारत सहित पूरे क्षेत्र पर पड़ रहा है। उन्होंने कहा कि भारत एक निकटवर्ती क्षेत्र होने के नाते इन घटनाक्रमों से गहराई से जुड़ा हुआ है और अरब देशों के साथ उसके संबंधों पर भी इसका व्यापक प्रभाव है।

राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा को कांग्रेस ने बताया खेल परिवर्तक,कहा- दशकों तक याद रहेगी

नई दिल्ली। कांग्रेस सांसद जयराम रमेश ने शनिवार को भारत जोड़ो यात्रा की तीसरी वर्षगांठ मनाते हुए इसे पार्टी नेता राहुल गांधी के नेतृत्व में कन्याकुमारी से कश्मीर तक का एक परिवर्तनकारी राजनीतिक आंदोलन बताया, जिसने देश में बढ़ती आर्थिक असमानता, सामाजिक ध्रुवीकरण और राजनीतिक तानाशाही को उजागर किया। रमेश ने भारत जोड़ो यात्रा को अत्यंत परिवर्तनकारी घटना कहा। जयराम रमेश ने कहा कि तीन साल पहले आज ही के दिन भारत जोड़ो यात्रा का समापन श्रीनगर में राहुल गांधी के प्रेरणादायक भाषण के साथ हुआ था। राहुल गांधी और 200 से अधिक भारत यात्रियों ने कन्याकुमारी से कश्मीर तक 4000 किलोमीटर की पदयात्रा पैदल की थी। यह यात्रा 145 दिनों से अधिक चली और इसमें 12 राज्य और 2 केंद्र शासित प्रदेश शामिल थे। इस यात्रा ने जनता तक आर्थिक असमानताओं में वृद्धि, सामाजिक ध्रुवीकरण में गहराई और राजनीतिक तानाशाही में वृद्धि के तीन संदेश पहुंचाए और यह हमारे देश की राजनीति में एक महत्वपूर्ण परिवर्तनकारी घटना थी। इसे आने वाले दशकों तक याद रखा जाएगा और सराहा जाएगा।इस यात्रा का उद्देश्य भारत को एकजुट करना और राष्ट्र को मजबूत बनाने के लिए लोगों को एक साथ लाना था। कांग्रेस ने पहले एक बयान में कहा था कि यह यात्रा 7 सितंबर, 2022 को कन्याकुमारी से शुरू हुई और 12 राज्यों से होते हुए जम्मू और कश्मीर में समाप्त हुई, जिसमें लगभग 3,500 किलोमीटर की दूरी लगभग 150 दिनों में तय की गई। यह यात्रा 30 जनवरी, 2023 को समाप्त हुई, जब राहुल गांधी श्रीनगर पहुंचे, जहां विभिन्न राजनीतिक दलों के नेता उनसे जुड़ गए, और इस तरह कन्याकुमारी से कश्मीर तक की उनकी लंबी यात्रा पूरी हुई। आज सुबह, जयराम रमेश ने आगामी केंद्रीय बजट पर चिंता व्यक्त करते हुए सवाल उठाया कि क्या फरवरी के अंत में जारी होने वाली नई जीडीपी श्रृंखला के बाद जीडीपी के प्रतिशत के रूप में व्यक्त किए गए प्रमुख बजट आंकड़ों में संशोधन की आवश्यकता होगी।

फडणवीस का बड़ा कदम,महाराष्ट्र का बजट अब खुद पेश करेंगे सीएम सुनेत्रा पवार को मिला ये विभाग

मुम्बई। महाराष्ट्र सरकार में शनिवार को एक महत्वपूर्ण मंत्रिमंडल फेरबदल हुआ, जिसमें उपमुख्यमंत्री सुनेत्रा पवार को आबकारी, खेल और अल्पसंख्यक

विकास विभाग आवंटित किए गए। ये विभाग पहले उनके दिवंगत पति और वरिष्ठ राष्ट्रीय समिति नेता अजित पवार के पास थे, जिनकी बारामती में विमान दुर्घटना में मृत्यु हो गई थी। प्लानिंग और फाइनेंस विभाग, जो पहले दिवंगत उपमुख्यमंत्री अजित पवार के पास थे, अब मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस के पास हैं।

सूत्रों के अनुसार, यह कदम आगामी बजट सत्र से पहले निरंतरता और स्थिरता सुनिश्चित करने के उद्देश्य से उठाया गया है, जिसके दौरान मार्च में महाराष्ट्र का 2026-27 का बजट पेश किया जाना है। सूत्रों के मुताबिक, फडणवीस वित्त विभाग का कार्यभार संभालेंगे और स्वयं वार्षिक बजट पेश करेंगे। सुनेत्रा पवार को यह पोर्टफोलियो आवंटन भाजपा के नेतृत्व वाली महायुति सरकार में उनकी हाल ही में उपमुख्यमंत्री के रूप में नियुक्ति के बाद हुआ है। अजित पवार के निधन के कुछ दिनों बाद ही मंत्रिमंडल में एक बड़ा पद खाली हो गया था।

अजित पवार इससे पहले वित्त, उत्पाद शुल्क, खेल और अल्पसंख्यक मामलों सहित कई महत्वपूर्ण मंत्रालयों का कार्यभार संभाल चुके हैं। राज्य सरकार के सूत्रों के अनुसार, आगामी बजट की अधिकांश तैयारियां उपमुख्यमंत्री अजित पवार के नेतृत्व में पहले ही पूरी हो चुकी थीं। ऐसे में, अंतिम चरण में, जब नीतिगत निर्णयों और संशोधनों की आवश्यकता होती है, किसी नए मंत्री को लाना प्रक्रिया को जटिल बना सकता था। सूत्रों ने बताया कि महायुति और राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के बीच सुचारू समन्वय सुनिश्चित करने के लिए वित्त मंत्रालय का प्रभार अस्थायी रूप से मुख्यमंत्री के पास ही रहेगा। यह निर्णय बजट से पहले की महत्वपूर्ण अवधि में निरंतरता बनाए रखने और बजट तैयारियों में किसी भी प्रकार की बाधा को रोकने के उद्देश्य से लिया गया है।

तीन उग्रवादी गिरफ्तार हथियार और विस्फोटक बरामद

इंफाल। मणिपुर के इंफाल पूर्व जिले में सुरक्षा बलों ने प्रतिबंधित संगठनों के तीन सदस्यों को गिरफ्तार किया है जबकि तेंगनौपाल जिले से विस्फोटक सामग्री बरामद की गई है। पुलिस के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि बृहस्पतिवार को इंफाल पूर्व के पैलेस गेट इलाके से प्रतिबंधित कांगलीपाक कम्युनिस्ट पार्टी (एमसी प्रोग्रेसिव) के दो सदस्य गिरफ्तार किए गए।अलग अभियान के दौरान चूड़ाचांदपुर जिले के संगाईकोट से एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया गया, जिसके कब्जे से 36 किलोग्राम से अधिक अफीम बरामद की गई। अधिकारी ने बताया कि बृहस्पतिवार को तेंगनौपाल जिले के तराओ लामखाई इलाके से सुरक्षा बलों ने तीन देसी 'पोंपी' मोर्टार, स्थानीय रूप से निर्मित एक तोप, एक आईईडी और तीन हथगोले बरामद किए।

तमिलनाडुः सीएम स्टालिन का बड़ा बयान-डीएमके सरकार सिर्फ वादे नहीं करती, उन्हें पूरा भी करती है

नई दिल्ली। तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एम.के. स्टालिन ने शनिवार को शिवगंगा की समृद्ध तमिल सभ्यता, वीरता और बलिदान की विरासत को याद करते हुए कहा कि यह जिला प्रतिरोध, स्वतंत्रता और सामाजिक न्याय का प्रतीक है। एक जनसभा को संबोधित करते हुए उन्होंने कीलाडी पुरातात्विक खोजों का हवाला देते हुए कहा कि यह इस बात का प्रमाण है कि हजारों वर्ष पूर्व इस क्षेत्र में तमिल सभ्यता फली-फूली थी। मुथु वदुगनाथ थेवर, वेलू नाचियार, वेल्लाची नाचियार, मरुथु बंधुओं और क्रांतिकारी कुयिली सहित स्वतंत्रता सेनानियों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि उनके बलिदान आज भी तमिल समाज को प्रेरित करते हैं। उन्होंने कहा कि शिवगंगा वह भूमि है जिसने बलिदान को शक्ति में परिवर्तित किया। अपनी यात्रा के दौरान, स्टालिन ने कुल 2,560 करोड़ रुपये की 49 पूर्ण परियोजनाओं और 13.36 करोड़ रुपये की 28 नई परियोजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास किया। इसके अलावा, उन्होंने 15,453 लाभार्थियों को 205 करोड़ रुपये की कल्याणकारी सहायता वितरित की। उन्होंने कनाडुकथन स्थित चेत्तिनाड कृषि महाविद्यालय और अनुसंधान

संस्थान तथा कराईकुडी तालुक के कझानिवासल स्थित सरकारी विधि महाविद्यालय में 100 करोड़ रुपये की लागत से निर्मित नए भवनों का उद्घाटन किया, जिनमें 1,300 छात्रों के लिए सुविधाएं उपलब्ध हैं। कृषि महाविद्यालय के सभागार का नाम भारत रत्न डॉ. सी. सुब्रमण्यम, पूर्व केंद्रीय कृषि मंत्री के नाम पर रखा गया। मुख्यमंत्री ने जिले में 2,452 ग्रामीण बस्तियों, 11 पंचायत संघों, आठ नगर पालिकाओं और तीन नगर निगमों को कवर करने वाली 2,119.07 करोड़ रुपये की संयुक्त पेयजल योजनाओं का भी उद्घाटन किया। 32 करोड़ रुपये की लागत से निर्मित मिनी टाइडल पार्क का भी उद्घाटन किया गया। उन्होंने द्रविड़ मॉडल सरकार के तहत जिलेवार लाभों की सूची दी। स्टालिन ने बताया कि शिवगंगा जिले में 23.8 लाख महिलाओं को 'कलाइग्नार मगलीर उरिमाई थोगई' योजना के तहत प्रति माह 1,000 रुपये मिलते हैं। 'पुथुमाई पेन' योजना के तहत 8,469 छात्राओं को मासिक सहायता मिलती है, जबकि 'तमिल पुधलवन' योजना के तहत 6,076 लड़कों को लाभ मिलता है। महिला स्वयं सहायता समूहों को 855 करोड़ रुपये के ऋण दिए गए। 'मक्कलाई थेडी मरुथुवम' योजना से 12 लाख से अधिक लोगों को लाभ मिला, जबकि मुख्यमंत्री की व्यापक स्वास्थ्य बीमा योजना के तहत 13.4 लाख लोगों को कवर किया गया। उन्होंने आगे बताया कि मुख्यमंत्री नाश्ता योजना के तहत 37,000 स्कूली बच्चों को प्रतिदिन पौष्टिक नाश्ता मिलता है।

भगोड़े हथियार डीलर संजय भंडारी पर ईडी का शिकंजा संपत्ति जब्ती पर कोर्ट ने फैसला सुरक्षित रखा

नई दिल्ली। राउज़ एवेन्यू कोर्ट ने शनिवार को प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) की संजय भंडारी की संपत्तियों को जब्त करने की याचिका पर अपना फैसला सुरक्षित रख लिया। हथियार डीलर संजय भंडारी को भगोड़ा घोषित किया जा चुका है। विशेष न्यायाधीश संजय जिंदल ने ईडी और दूसरे पक्ष के वकीलों की दलीलें सुनने के बाद फैसला सुरक्षित रख लिया। कोर्ट 16 फरवरी को फैसला सुनाएगी। ईडी ने दलील दी कि हथियार डीलर संजय भंडारी से सीधे तौर पर जुड़ी संपत्तियों को जब्त किया जाना चाहिए। भंडारी को भगोड़ा आर्थिक अपराधी घोषित किए जाने के बाद ईडी ने एक आवेदन दायर किया था। हालांकि, इसी आदेश को दिल्ली उच्च न्यायालय में चुनौती दी गई है। ईडी की ओर से विशेष लोक अभियोजक (एसपीपी) नवीन कुमार मट्टा और मोहम्मद फैजान पेश हुए। ईडी के विशेष वकील जोहेब हुसैन ने बताया कि आज तक संजय भंडारी से संबंधित संपत्तियों के संबंध में किसी ने कोई आपत्ति नहीं उठाई है, इसलिए ये संपत्तियां जब्त किए जाने योग्य हैं। ईडी ने अदालत को सूचित किया कि अदालत के आदेशानुसार भारत के बाहर स्थित संपत्तियों की ज़ब्ती के लिए भी पत्र भेजे जाने हैं। जांच एजेंसी ने अदालत को बताया कि ज़ब्ती की प्रक्रिया इसलिए की जाती है ताकि लोग किसी मामले में अभियोजन से बचने के लिए देश छोड़कर न भागें। 12 जुलाई को अदालत ने भंडारी को भगोड़ा आर्थिक अपराधी घोषित करने वाले आदेश के खिलाफ वैधानिक कानूनी उपायों का उपयोग करने के लिए समय दिया। भंडारी को 5 जुलाई, 2025 को भगोड़ा आर्थिक अपराधी घोषित किया गया था। अगला कदम उनकी संपत्तियों की ज़ब्ती है। ज़ोहेब हुसैन ने अदालत के समक्ष उल्लेख किया था कि उनके पास एक सूची है जिसमें भारत, दुबई, ब्रिटेन में स्थित संपत्तियों के साथ-साथ नोएडा और गुरुग्राम में बेनामी संपत्ति, उनके और उनकी पत्नी के नाम पर कई बैंक खाते, आभूषण और नकदी, वसंत विहार, पंचशील शॉपिंग कॉम्प्लेक्स और शाहपुर जाट में अचल संपत्ति शामिल है।

दिल्ली उच्च न्यायालय में दो मिनट का मौन रखा गया

नई दिल्ली। दिल्ली उच्च न्यायालय ने देश के स्वतंत्रता संग्राम में अपने प्राण न्योछावर करने वाले शहीदों की स्मृति में दो मिनट का मौन रखा। मुख्य न्यायाधीश डी के उपाध्याय की अदालत में 'कोर्ट मास्टर' ने कहा, ''सभी से अनुरोध है कि भारत की स्वतंत्रता के संघर्ष के दौरान अपने प्राणों की आहुति देने वालों की स्मृति में कृपया खड़े होकर दो मिनट का मौन रखें।'' अदालत में मौजूद सभी लोगों ने पूर्वाह्न 11 बजे मौन रखा और कोर्ट मास्टर द्वारा मौन समाप्त करने की घोषणा किए जाने तक कार्यवाही स्थगित रही। 30 जनवरी महात्मा गांधी की पुण्यतिथि है और इसे शहीद दिवस के रूप में मनाया जाता है। महात्मा गांधी की 1948 में आज ही के दिन नाथूराम गोडसे ने गोली मारकर हत्या कर दी थी।

अजित पवार के निधन के बाद एनसीपी विलय पर सस्पेंस

शरद पवार के दावे को तटकरे ने बताया गलत

मुम्बई। महाराष्ट्र राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एनसीपी) के अध्यक्ष सुनील दत्तात्रेय तटकरे ने शनिवार को शरद पवार के गुट के साथ विलय की खबरों का खंडन किया। मुंबई में पत्रकारों से बात करते हुए तटकरे ने कहा कि अजित पवार और शरद पवार के बीच 17 जनवरी को हुई बैठक महाराष्ट्र में स्थानीय निकाय चुनावों के लिए दोनों गुटों के बीच गठबंधन के संबंध में थी। तटकरे ने कहा कि शरद पवार और अजीत पवार की बैठक का जो वीडियो वायरल हो रहा है, वह बारामती में एक कृषि प्रदर्शनी के बाद हुई चाय पार्टी का है।

अजित दादा ने खुद मीडिया को बताया था कि बैठक स्थानीय निकाय चुनावों के लिए गठबंधन के बारे में थी। बुधवार को पुणे जिले के बारामती हवाई अड्डे के पास एक दुर्भाग्यपूर्ण विमान दुर्घटना में अजीत पवार के निधन के बाद से, एनसीपी और एनसीपी (एसपी) के विलय की

चर्चाएँ तेज़ हो गई हैं। शरद पवार के अनुसार, अजित पवार पुनर्मिलन चाहते थे और दोनों पक्ष इसके प्रति आशावादी थे। उन्होंने कहा कि विलय पर निर्णय 12 फरवरी को घोषित किया जाना था।

अजीत ने यह तारीख दी थी, लेकिन दुर्भाग्य से दुर्घटना हो गई। 2023 में, अजित पवार अधिकांश नेताओं के साथ एनसीपी छोड़कर भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व वाले महायुति में शामिल हो गए थे, जिससे पार्टी में फूट पड़ गई थी। लेकिन बाद में दोनों पक्षों ने पुणे और पिंपरी-चिंचवाड़ में नगर निगम चुनाव एक साथ लड़े। हालांकि वे असफल रहे और भाजपा की लहर को रोक नहीं पाए। एक अन्य घटनाक्रम में, महाराष्ट्र में एनसीपी की विधायक दल की नेता चुने जाने के बाद सुनेत्रा पवार ने राज्यसभा सदस्य पद से इस्तीफा दे दिया है। सुनेत्रा पवार आज महाराष्ट्र की उपमुख्यमंत्री के रूप में शपथ लेंगी। उन्हें संभवतः वित्त, उत्पाद शुल्क और योजना विभाग दिए जाएंगे, जो उनके पति अजीत पवार संभाल रहे थे। सूत्रों के अनुसार, एनसीपी नेता सुनेत्रा को पार्टी का राष्ट्रीय अध्यक्ष नियुक्त करवाना चाहते हैं।

हालांकि, उन्होंने बताया कि फिलहाल पार्टी इस पद के लिए प्रफुल्ल पटेल को नियुक्त करने पर विचार कर रही है। सूत्रों ने यह भी बताया कि पार्टी सुनेत्रा और अजित के बेटे पार्थ पवार को राज्यसभा में नियुक्त करेगी। इस बीच, अजित पवार का अंतिम संस्कार गुरुवार को हुआ, जो बारामती में हुए दुर्भाग्यपूर्ण विमान हादसे में उनकी मृत्यु के एक दिन बाद हुआ। अंतिम संस्कार में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह, महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस, तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एमके स्टालिन, भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नबीन और पवार परिवार सहित कई शीर्ष नेता शामिल हुए।

राजा रघुवंशी हत्याःकौन है संजय वर्मा, जिसको सोनम रघुवंशी ने 3 हफ्ते में 200 बार कॉल किया? 'प्रेमी' राज कुशवाहा के घरों की जांच

नई दिल्ली (एजेंसी)। मेघालय में हनीमून पर अपने पति की हत्या के आरोप में गिरफ्तार सोनम रघुवंशी ने अपनी शादी से पहले के हफ्तों में संजय वर्मा नाम के एक शख्स को 100 से ज़्यादा फ़ोन कॉल किए थे। अब यह बात सामने आई है कि वर्मा नाम उसके बॉयफ्रेंड राज कुशवाह ने फ़र्ज़ी नाम से इस्तेमाल किया था। इंदौर पुलिस के सूत्रों के मुताबिक, सोनम (24) ने 1 मार्च से 25 मार्च के बीच संजय वर्मा नाम से रजिस्टर्ड नंबर पर 112 बार संपर्क किया। सूत्रों ने बताया कि सोनम की दूसरे छोर पर मौजूद शख्स से लंबी बातचीत होती थी। जैसे ही पुलिस ने जांच जारी रखी, उन्होंने खुलासा किया कि सोनम रघुवंशी और 'संजय वर्मा' (राज कुशवाह) ने 39 दिनों के भीतर 239 कॉलों का आदान-प्रदान किया। खुलासे से कुछ घंटे पहले सोनम रघुवंशी के भाई गोविंद ने पत्रकारों से बात करते हुए कहा था कि उन्हें संजय वर्मा नाम के किसी व्यक्ति के बारे में जानकारी नहीं है। उन्होंने कहा, 'मैं संजय वर्मा के बारे में कुछ नहीं जानता। मुझे आज यह भी पता चला है कि इस मामले में संजय का नाम भी आ रहा है।'

मामले में संजय वर्मा का नाम सामने आने के बाद इंदौर पुलिस ने जांच शुरू की। जांच में पता चला कि फोन का इस्तेमाल कुशवाह कर रहा था, जिस पर सोनम के पति राजा रघुवंशी की हत्या का मास्टरमाइंड होने का आरोप है। सोनम और राजा (29) की शादी 11 मई को इंदौर में हुई थी और वे 20 मई को हनीमून के लिए निकले थे। इसके तीन दिन बाद ही यह जोड़ा शिलांग से 65 किलोमीटर दूर सोहरा के पास लापता हो गया।

बहुचर्चित राजा रघुवंशी हत्याकांड की कड़ियां जोड़ने के लिए इंदौर आई मेघालय पुलिस बुधवार को मुख्य आरोपी सोनम और उसके कथित प्रेमी व सह-आरोपी राज कुशवाह के घरों में पहुंची और उनके परिजनों से पूछताछ की। सूत्रों ने बताया कि मेघालय पुलिस के जांच दल ने इस पहलू की थाह लेने की कोशिश भी की कि हनीमून के दौरान 29 वर्षीय ट्रांसपोर्ट कारोबारी की हत्या के पीछे कथित 'प्रेम त्रिकोण' के अलावा कोई और मकसद तो नहीं था? चश्मदीदों ने बताया कि मेघालय पुलिस का जांच दल सबसे पहले गोविंद नगर खारचा

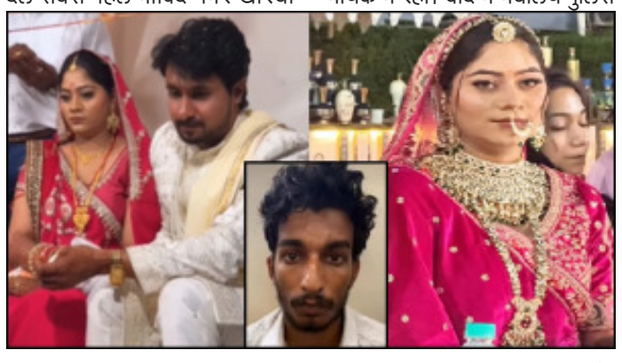

इलाके में सोनम के मायके पहुंचा जिसके बाद इस घर का दरवाजा अंदर से बंद कर दिया गया।

चश्मदीदों के मुताबिक मेघालय पुलिस का दल दो घंटे तक सोनम के मायके में रहा। बाद में मेघालय पुलिस का दल कुशवाह के घर पहुंचा और उसकी मां चुन्नी देवी से आधे घंटे तक पूछताछ की। सोनम का परिवार फर्नीचर में इस्तेमाल होने वाली सनमाइका शीट का कारोबार करता है और वह गिरफ्तारी से पहले तक अपने पारिवारिक प्रतिष्ठान का कामकाज संभाल रही थी।स्थानीय पुलिस के मुताबिक राजा रघुवंशी हत्याकांड की साजिश रचने का आरोपी राज कुशवाह हालांकि 12वीं फेल है, लेकिन वह इस प्रतिष्ठान में बतौर लेखापाल काम करता था जहां सोनम से उसकी कथित नजदीकियां बढ़ीं। सूत्रों ने बताया कि मेघालय पुलिस ने अलग-अलग सवालों के जरिये सोनम और कुशवाह के परिजनों से पूछा कि दोनों आरोपियों के बीच कैसे रिश्ते रहे हैं और क्या राजा रघुवंशी से सोनम की शादी के बाद उनके बर्ताव में कोई बदलाव आया था? सूत्रों के मुताबिक मेघालय पुलिस के दल ने सोनम के पारिवारिक प्रतिष्ठान के दफ्तर और गोदाम में भी जांच की और वहां काम करने वाले लोगों से पूछताछ की। सूत्रों ने बताया कि जांच दल ने आरोपियों से जुड़े स्थलों के मुआयने और वहां से सबूत जुटाने के साथ ही यह पता लगाने की भी कोशिश की कि राजा रघुवंशी हत्याकांड के पीछे कथित 'प्रेम त्रिकोण' के अलावा कोई और मकसद तो नहीं था? मेघालय पुलिस के दल के सोनम के मायके से बाहर निकलने के तुरंत बाद उसका भाई गोविंद एक कार में सवार होकर मौके से रवाना हो गया और वह दिन भर चली जांच के दौरान मेघालय पुलिस के दल के साथ देखा गया। गोविंद ने विस्तृत जानकारी दिए बगैर संवाददाताओं से कहा कि मेघालय पुलिस ने उनसे और उनके परिजनों से सोनम के बर्ताव को लेकर 'सामान्य पूछताछ' की।राजा रघुवंशी हत्याकांड से पहले किसी संजय वर्मा से सोनम की फोन पर कई बार लम्बी बातचीत की खबरों पर गोविंद ने कहा कि उन्हें इस बारे में कोई भी जानकारी नहीं है। राजा रघुवंशी के परिवार ने मांग की है कि हत्याकांड का पूरा सच सामने लाने के लिए सोनम के परिवार के सभी सदस्यों का नार्को टेस्ट कराया जाना चाहिए। इस मांग पर सोनम के भाई गोविंद ने कहा कि उन्होंने कोई पाप नहीं किया है, लेकिन किसी व्यक्ति को कोई शक है, तो वह हर तरह की जांच से गुजरने के लिए तैयार हैं।

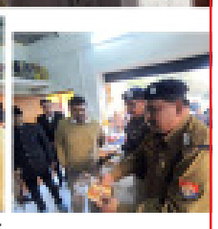

आधुनिक समाचार

सीतापुर। सीतापुर के मा0 जनपद न्यायाधीश कुलदीप सक्सेना, जिलाधिकारी सीतापुर महोदय राजागणपति आर0 एवं पुलिस अधीक्षक सीतापुर अंकुर अग्रवाल द्वारा संयुक्त रूप से जिला कारागार सीतापुर का आकस्मिक निरीक्षण किया गया है। जिमसें बन्दियों द्वारा बनायी गयी अगरबत्ती, बर्तन एवं अन्य सामग्रियों के बिक्री केन्द्र का मा0 जनपद न्यायाधीश कुलदीप सक्सेना, जिलाधिकारी डा0 राजागणपति आर0 एवं पुलिस अधीक्षक अंकुर अग्रवाल द्वारा फीता काटकर उद्घाटन किया गया। इस दौरान कोई भी आपत्तिजनक वस्तु नही मिली। बंदियों से वार्ता कर उनकी समस्याओं के निराकरण हेतु सम्बन्धित को आवश्यक दिशा निर्देश दिये गये। निरीक्षण के दौरान अन्य अधिकारी/कर्मचारीगण भी मौजूद रहे।

77वें गणतंत्र दिवस पर संग्रामगढ़ पुलिस की अनूठी पहल

प्रतापगढ़।77वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर थाना संग्रामगढ़ क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालय बकोल में पुलिस और समाज के बीच मानवीय रिश्तों की एक सुंदर मिसाल देखने को मिली। थाना प्रभारी श्री मनोज कुमार तोमर विद्यालय पहुंचे और नन्हे-मुन्ने बच्चों को स्कूल बैग, कॉपी-किताबें व मिठाइयां वितरित कीं। बच्चों को जब नए बैग और उपहार मिले तो उनके चेहरे खुशी से खिल उठे। पूरा विद्यालय परिसर उत्साह और उल्लास से भर गया। इस अवसर पर थाना प्रभारी श्री तोमर ने कहा कि बच्चे देश का भविष्य हैं और उनकी शिक्षा व खुशहाली में योगदान देना समाज की सामूहिक जिम्मेदारी है। विद्यालय के शिक्षकों, अभिभावकों व ग्रामीणों ने पुलिस की इस पहल की सराहना करते हुए कहा कि इससे पुलिस के प्रति लोगों का विश्वास और मजबूत हुआ है। कार्यक्रम में उपनिरीक्षक सुबेदार राय, गौरव त्रिवेदी, प्रशांत कटियार सहित थाना स्टाफ के अन्य सदस्य भी उपस्थित रहे।

वार्षिक खेलकूद दिवस 2025-2026

आधुनिक समाचार

गर्ल्स हाई स्कूल एड कॉलेज में 30, जनवरी 2026 को जूनियर एवं सीनियर दोनों वर्गों के लिए बहुप्रतीक्षित वार्षिक खेल दिवस का भव्य आयोजन सफलतापूर्वक किया गया। यह दिन खेल भावना, अनुशासन और विद्यार्थियों के उत्साह का जीवंत उत्सव था, साथ ही प्रत्येक उपलब्धि में ईश्व की कृपा के महत्व को भी दर्शाता था। कार्यक्रम का शुभारंभ प्रभु प्रार्थना एवं धार्मिकग्रंथ पाठ के साथ हुआ। इसके पश्चात् खेल मशाल प्रज्वलित की गयी, जो खेल भावना एवं निष्प प्रतिस्पर्धा का प्रतीक है।

जूनियर वर्ग की मुख्य अतिथि डॉ0 रितु गुप्ता थी, जबकि अपराह्न सत्र में सीनियर वर्ग के मुख्य अतिथि राईट रेव्ह0 मोरिस एडगर दान, बिश डायसिस ऑफ लखनऊ, चर्च ऑफ नार्थ इण्डिया थे। विद्यालय की प्रधानाचार्या रेव्ह0 डॉ0 विनीता इसूबियस ने विशिष्ट अतिथियों का हार्दिक स्वागत किया। इसके उपरान्त कार्यक्रम की शुरुआत अनुशासन और एकता को दर्शाते हुए भव्य मार्च पास्ट से हुई, जिसके बाद विद्यार्थियों द्वान मनमोहक सांस्कृतिक एवं शारीरिक प्रस्तुतियाँ दी गई।

जूनियर वर्ग के विद्यार्थियों ने ऊर्जावान शारीरिक प्रस्तुतियाँ, रंग-बिरंगे ड्रिल और संगीतमय संरचनाओं से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। कक्षा से 5 के विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत मास, पी0टी0 ड्रिल विशेष आकर्षण का केंद्र रही, जिसमें अद्भुत तालमेल और सटीकता देखने को मिली। फैं रेसों में विद्यार्थियों की उत्साहपूर्ण भागीदारी ने पूरे वातावरण को आनंदमय और प्रतिस्पर्धात्मक बना दिया।

सीनियर वर्ग के विद्यार्थियों ने सशक्त एवं समन्वित पी0टी0 प्रस्तुतियों के माध्यम से अपनी शक्ति, फुर्ती और टीम भावना का उत्कृष्ट प्रदर्शन किय 'ऑपरेशन सिंदूर' विषय पर आधारित पिरामिड संरचना विशेष रूप से प्रभावशाली रही, जो नवाचार, एकता और सामूहिक प्रयास का सशक्त प्रर्त बनी।

सीनियर वर्ग की खेल प्रतियोगिताओं में रिकॉर्ड तोड़ प्रदर्शन के लिए चार्वी सिंह एवं आदित्री सिंह की विशेष सराहना की गई।

चार्वी सिंह ने डिस्कस थ्रो में

23.18 मीटर की शानदार दूरी तय कर नया विद्यालय रिकॉर्ड स्थापित किया, जबकि आदित्री सिंह ने शॉट पुट में रिकॉर्ड तोड़ते हुए विद्यालय के खेल इतिहास में महत्वपूर्ण उपलब्धि दर्ज की। उनकी उपलब्धियों ने पूरे विद्यालय को गौरवान्वित किया।

दिन का एक और रोमांचक आकर्षण रस्साकशी प्रतियोगिता रही, जिसमें टीमों ने अ?द्भुत जोश, दृढ़ संकल्प और सहयोग भावना का परिचय दर्शकों की तालियों और उत्साहवर्धन ने इसे कार्यक्रम का सबसे ऊर्जावान क्षण बना दिया।

विजेताओं को उनकी उत्कृष्ट उपलब्धियों के लिए ट्रॉफी, प्रमाण पत्र एवं शील्ड प्रदान किए गए। सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए प्रतिष्ठित कॉक हाउस को प्रदान की गई।

नों मुख्य अतिथियों ने अपने संबोधन में विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं प्राचार्या को इस भव्य आयोजन के लिए बधाई दी तथा शारीरिक स्वास्थ्य, बर्वक और स्वस्थ जीवनशैली के महत्व पर बल दिया। कार्यक्रम का समापन धन्यवाद ज्ञापन एवं राष्ट्रगान के साथ हुआ।

प्रतापगढ़ में भारत रत्न जननायक कर्पूरी ठाकुर की 102 वी जयंती मनाई गई

आधुनिक समाचार

प्रतापगढ़। आल इंडिया महापद्मनंद कम्युनिटी एजुकेटेड एसोसिएशन, प्रतापगढ़ (उत्तर प्रदेश) के तत्वावधान में बिहार राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री एवं भारत रत्न जननायक कर्पूरी ठाकुर जी की जयंती तथा चौदहवां प्रतिभा सम्मान समारोह स्थान श्री हरि पैलेस सिटी रोड़ सगरा प्रतापगढ़ भव्य रूप से आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत जननायक कर्पूरी ठाकुर जी के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर की गई। इस अवसर पर राष्ट्रीय अध्यक्ष मुख्य अतिथि के रूप में राम शील शर्मा एडवोकेट (हाई कोर्ट) उपस्थित रहे। उन्होंने कहा जीना है तो मरना सीखो , मरना है तो जीना सीखो, एवं आदि बातें समाज से की। प्रतापगढ़ की धरती पर पहुंचकर समाज के मेधावी बच्चों को सम्मानित किया और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।समारोह को संबोधित करते हुए वक्ताओं ने जननायक कर्पूरी ठाकुर जी के जीवन, संघर्ष और सामाजिक न्याय के लिए उनके योगदान पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि कर्पूरी ठाकुर का जीवन समाज के वंचित और पिछड़े वर्गों के उत्थान के लिए समर्पित रहा, जो आज भी प्रेरणास्रोत है। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में समाज के गणमान्य लोग, छात्र-छात्राएं एवं अभिभावक उपस्थित रहे। समारोह का उद्देश्य शिक्षा के माध्यम से प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करना और समाज में सकारात्मक संदेश देना रहा। एवं अमेठी से चलकर आएं घनश्याम शर्मा प्रांतीय अध्यक्ष (एम डब्लू ओ) एवं साथी सहित आयें, एवं लोगों ने जमकर घनश्याम शर्मा को स्वागत किये लोगों ने। इस मौके पर मंडल सचिव संजय शर्मा, एवं कौशांबी से दिलीप कुमार सेन, अमन शर्मा, बृजेश कुमार, रवि शर्मा पत्रकार, महेंद्र सेन पत्रकार, आदि सैकड़ों लोग उपस्थित रहे।

जागरण पब्लिक स्कूल मानिकपुर में 77वे गणतंत्र दिवस समारोह का आयोजन किया गया

प्रयागराज। 26 जनवरी वो तारीख जब हमारे भारत में लोकतंत्र ने पहली बार जन्म लिया था जिससे इनसे पहले न जाने कितनी कुर्बानी देखी बलिदान और भारत माता के वीर सपूतो ने अपने अमूल्य प्राण न्योछावर करते देखा ,इसी दिन हमारा संविधान भी तैयार हुआ था,वो संविधान जिसकी शपथ लेकर देश की अदालत फैसला लेती है, आज से 77 वर्ष पहले 26 जनवरी 1950 को इसे गणतंत्र दिवस के रूप मे चुना गया तब से लेकर आज तक हम हर साल 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस का उत्सव मनाते हैं, उत्सव लोक तंत्र का और संविधान का हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी 26 जनवरी बड़ी जोर शोर और हर्षोल्लास के साथ मनाया गया ,इस वर्ष का गणतंत्र दिवस बड़ी धूम धाम के साथ जागरण पब्लिक स्कूल मानिकपुर में मनाया गया जिसमें बैंड पार्टी, एनसीसी के छात्र और मलेट्री के छात्रों के द्वारा परेड का कार्यक्रम संपन्न हुआ और दिव्य दिव्य झांकी भी सम्मिलित रहीं।

शुआट्स में तीन दिवसीय प्राकृतिक खेती कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम हुआ आरम्भ

प्रयागराज। प्रसार निदेशालय, शुआट्स, प्रयागराज में कृषि प्रौद्योगिकी प्रबन्धन अभिकरण, आत्मा, गोपालगंज, बिहार द्वारा प्रायोजित तीन दिवसीय प्राकृतिक खेती कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम दिनांक 27.01.2026 को सभागार, प्रसार निदेशालय में आरम्भ हुआ।

प्रशिक्षण कार्यक्रम में मुख्य अतिथि निदेशक प्रसार, डा0 प्रवीन चरन ने कृषकों को सम्बोधित करते हुए कहा कि पूरे देश में रासायनिक उर्वरकों का अंधाधुंध प्रयोग किया जाने लगा, इस कारण मृदा में मौजूद पोषक तत्वों का संतुलन बिगड़ गया। इससे मृदा की उर्वराशक्ति पर विपरीत प्रभाव पड़ा तथा फसलों पर रोगों एवं कीटों का अधिक आक्रमण होने के कारण कीटनाशकों एवं दवाओं का प्रयोग बढ़ता गया। इसके परिणामस्वरूप मृदा, पानी एवं वातावरण प्रदूषित हो गये। रासायनिक उर्वरकों एवं दवाओं के अत्यधिक प्रयोग से मृदा में विद्यमान सूक्ष्मजीवों तथा केंचुओं की क्रियाशीलता कम होती जा रही है। इसका सबसे बड़ा दुष्प्रभाव यह हुआ है कि मृदा का भौतिक, रासायनिक एवं जैविक संतुलन बिगड़ गया है। इसका मानव स्वास्थ्य पर भी विपरीत प्रभाव पड़ रहा है। अतः आज की सबसे बड़ी जरूरत है कि अपनी पुरानी गौ-आधारित प्राकृतिक कृषि पद्धति

को पुनः अपनाया जाये। इस पद्धति से कम लागत में विषमुक्त अनाज उत्पादित करके मृदा, पानी एवं वातावरण को संतुलित रखकर अपना स्वास्थ्य अच्छा किया जा सकेगा। उन्होंने कहा कि यह प्रशिक्षण जनपद के कृषकों के मध्य एक ऊर्जा का संचारण करेगा एवं प्रदेश की कृषि उत्पादकता बढ़ाने में योगदान प्रदान करेगा । कार्यक्रम के समन्वयक डा0 सरवेन्द्र कुमार ने उपस्थित कृषकों को जैविक खेती और उसके प्रमाणीकरण हेतु कृषकों को प्रोत्साहित किया एवं कहा कि विभिन्न फसलों की खेती में अनियंत्रित रसायनों के प्रयोग से उत्पादित फसलें विषयुक्त होती हैं जो कि लोगों के स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त हानिकारक साबित हो रही हैं। जैविक खादों एवं कार्बनिक खादों के प्रयोग द्वारा इन समस्याओं का निराकरण प्राप्त किया जा सकता है। इस अवसर पर डा0 योगेश चन्द्र श्रीवास्तव वैज्ञानिक, प्रसार निदेशालय ने प्रशिक्षणार्थियों को जैविक खेती की उपयोगिता से कृषकों को परिचित कराते हुए कहा कि जैविक उत्पादन न सिर्फ आज के समय की आवश्यकता है अपितु निरन्तर जैविक खेती का फसलों में उपयोग द्वारा रसायनिक कीटनाशकों का प्रभाव दीर्घ अवधि में कम किया जा सकता है तथा गुणवत्तायुक्त उत्पादन प्राप्त कर अधिक आर्थिक लाभ भी अर्जित किया जा सकता है।

इस अवसर पर वैज्ञानिक डा0 शिशिर कुमार ने कृषकों को गेहूँ, मक्का एवं अन्य फसलों की लागत व्यय करने की तकनीकी जानकारी प्रदान की और कहा कि फसलोत्पादन में होने वाला व्यय जानकारी के अभाव और बिना ठोस योजना के अपव्यय में बदल जाती है। प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से छोटी-छोटी परंतु महत्वपूर्ण बातों को ध्यान में रखकर न केवल व्यय में कटौती की जा सकती है बल्कि लम्बे समय तक उत्पादकता भी बनायी जा सकती है। इस अवसर पर प्रसार निदेशालय के संयुक्त निदेशक प्रसार डा0 ए. के. चौरसिया, समन्वयक डा0 अरुण यादव, वैज्ञानिक डा0 टी. डी. मिश्रा, डा0 मनीष कुमार केसरवानी, डा0 शैलेन्द्र कुमार सिंह एवं समस्त कार्यालय कार्मिक आदि उपस्थित रहे।

रसाहार एक प्राथमिक उपचार पद्धति - डॉक्टर पूर्णिमा दाते

आधुनिक समाचार

प्रयागराज। सी.एम.पी.डिग्री कालेज के रसायन विज्ञान विभाग में जल साक्षरता सर्टिफिकेट कोर्स और आई.आई. सी. के द्वारा भोपाल से आई डॉक्टर पूर्णिमा दाते का आमंत्रित व्याख्यान हुआ जो आरोग्य योग एवं रसाहार शोध समिती नामक संस्था की डायरेक्टर हैं तथा 20 वर्षों से लोगों को रसाहार संबंधी परामर्श दे रही हैं। ताजा रसों से उपचार लेकर भोपाल में अनेक कैंसर रोगी लिवर किडनी अथवा हृदय रोगी अपने रोगों को ठीक कर चुके हैं। इसलिए उनका विचार है कि इस उपचार पद्धति का प्रचार एवं उपयोग पूरे देश में होना चाहिए उन्होंने बताया कि वर्तमान समय में विद्यार्थी यही मानते हैं की पढ़ाई तो रात को जाग कर हो सकती है इसलिए रात्रि जागरण और प्रातः देर से उठाना विद्यार्थियों की परंपरा हो गई है। उन्होंने सभी विद्यार्थियों को शरीर के मुख्य अंग जैसे लिवर किडनी आमाशय पेनक्रियाज आदि के फंक्शन के समय बताए। इनके काम करने के सही समय पर काम करवाने से ही हमारा शरीर स्वस्थ और हार्मोन बैलेंस में रह सकते हैं। अतः जल्दी उठना जल्दी सोना और दो समय भोजन करना विद्यार्थियों के लिए योग्य है। पोषक तत्वों के रूप में प्रातः जड़ी बूटियों और फलों के ताजा रसों का सेवन करना चाहिए। उन्होंने बताया कि रसाहार के बारे में तथा घरेलू उपचार वस्तुएं बनाने के बारे में अधिक जानकारी हेतु स्वामी विवेकानंद योग अनुसंधान संस्थान द्वारा संचालित शॉर्ट टर्म सर्टिफिकेट कोर्स करना चाहिए जो ऑनलाइन होता हैं। इससे स्वास्थ्य संबंधी स्वावलंबन मिलेगा और आगे इन उपचार वस्तुओं को बनाने के लिए स्टार्टअप भी शुरू किया जा सकता है।

शूआट्स में 77वां गणतंत्र दिवस समारोह भव्यता के साथ संपन्न

संविधान समानता का अधिकार देता है, प्रेम और करुणा से ही बनेगा श्रेष्ठ राष्ट्रः कुलपति प्रो. राजेंद्र बी. लाल

प्रयागराज। सैम हिगिनबॉटम यूनिवर्सिटी ऑफ एग्रीकल्चर, टेक्नोलॉजी एंड साइंसेज (शुआट्स) में आज '77वां गणतंत्र दिवस' अत्यंत हर्षोल्लास और देशभक्तिपूर्ण वातावरण में मनाया गया। समारोह का शुभारंभ प्रार्थना के साथ हुआ, जिसके पश्चात छात्रों ने धन्यवाद तू प्रभु का करष् गीत के माध्यम से ईश्वर के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की।

कुलपति 'प्रोफेसर (डॉ.) राजेंद्र बी. लाल' ने तिरंगा फहराकर कार्यक्रम को आगे बढ़ाया और परेड की सलामी ली। अपने संबोधन में उन्होंने भारतीय संविधान की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हमारा संविधान सभी को बराबरी का हक देता है। भारतीय संविधान का उल्लेख करते हुए बताया कि अल्पसंख्यक समुदायों को भी उन्नति के समान अवसर प्राप्त हैं। संविधान का मूल उद्देश्य है कि समाज का

हर वर्ग, विशेषकर अल्पसंख्यक समाज, प्रगति की मुख्यधारा से जुड़कर उच्च स्तर तक पहुँच सके।

डॉ लाल ने प्रभु यीशु मसीह की शिक्षाओं का उल्लेख करते हुए कहा, 'अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करो।' उन्होंने एक व्यक्तिगत घटना साझा की कि कैसे एक सड़क दुर्घटना में घायल व्यक्ति की मदद कर उन्होंने उसकी जान बचाई। उन्होंने इस बात पर दुःख जताया कि आज समाज में करुणा की कमी हो रही है।

राष्ट्र निर्माण का आह्वान-कुलपति ने अपील की कि एक आदर्श परिवार, समाज और विकसित देश की स्थापना के लिए प्रेम और करुणा अनिवार्य है। उन्होंने सभी से एक जिम्मेदार नागरिक बनने और देश के विकास में सक्रिय सहभागिता देने का आह्वान किया।

इस अवसर पर प्रति-कुलपति (एकेडमिक अफेयर्स) प्रो. डॉ. जनाथन ए. लाल, प्रति-कुलपति (प्रशासन) प्रो. डॉ. बिस्वरूप मेहरा, प्रति-कुलपति (पी.एम.डी.) प्रो. डॉ. रितु प्रकाश दुबे एवं कुलसचिव प्रो. डॉ. रानू प्रसाद मंचासीन रहे। साथ ही विश्वविद्यालय के समस्त निदेशकगण, शिक्षक, भारी संख्या में छात्र-छात्राएं और स्थानीय नागरिक भी इस उत्सव के साक्षी बने। कार्यक्रम के अंत में कुलपति ने देश की समृद्धि, उन्नति और सभी नागरिकों के उज्ज्वल भविष्य के लिए विशेष प्रार्थना की।

उत्तर प्रदेश राज्य औद्योगिक संघ द्वारा 77वां गणतंत्र दिवस पूरे जोश व देशभक्ति के साथ मनाया गया

आधुनिक समाचार

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश स्टेट इंडस्ट्रीज एसोसिएशन प्रयागराज इकाई द्वारा 77वें गणतंत्र दिवस के शुभ अवसर पर भव्य ध्वजारोहण कार्यक्रम का आयोजन अत्यंत उत्साह और राष्ट्रभक्ति के वातावरण में संपन्न हुआ। कार्यक्रम में के अध्यक्ष अरविंद राय कोषाध्यक्ष के. खान एवं महासचिव मनीष शुक्ला ने संयुक्त रूप से तिरंगा फहराया।

जैसे ही राष्ट्रध्वज शान से लहराया, पूरा परिसर भारत माता की जय और वंदे मातरम् के गगनभेदी नारों से गूंज उठा। राष्ट्रगान के साथ उपस्थित सभी सदस्यों ने गर्व के साथ तिरंगे को सलामी दी।

इस अवसर पर अध्यक्ष अरविंद राय ने कहा कि गणतंत्र दिवस केवल एक पर्व नहीं, बल्कि संविधान, लोकतंत्र और राष्ट्र की अस्मिता का उत्सवहै। वहीं कोषाध्यक्ष के. खान और महासचिव मनीष शुक्ला ने उद्योग जगत, युवाओं और उद्यमियों से राष्ट्र निर्माण व आत्मनिर्भर भारत के संकल्प को सशक्त करने का आह्वान किया।

कार्यक्रम के दौरान एकता, सौहार्द और भाईचारे के प्रतीक स्वरूप मिठाइयों का वितरण किया गया। सभी पदाधिकारियों व सदस्यों ने देश की प्रगति, मजबूत औद्योगिक ढांचे और विकसित भारत के निर्माण के लिए संकल्प लिया। समारोह का समापन देशभक्ति के जोशीले नारों के साथ हुआ, जिसने हर हृदय में राष्ट्रप्रेम की ज्वाला प्रज्वलित कर दी।

फोर्ड विद्यालय में 77वां गणतंत्र दिवस भव्यता और देशभक्ति के उत्साह के साथ संपन्न

प्रयागराज। फोर्ड स्कूल एण्ड कॉलेज परिसर में 77वां गणतंत्र दिवस अत्यंत उत्साह और देशभक्ति की भावना के साथ मनाया गया। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि डॉ. श्रीमती अभिलाषा जे. लाल, निदेशक (मानव संसाधन प्रबंधन एवं संबंध), शूआट्स ने ध्वजारोहण किया। इस अवसर पर विद्यालय प्रबंधक प्रो. (डॉ.) रितु प्रकाश दुबे और प्रधानाचार्या श्रीमती रजनी सिंह की गरिमामयी उपस्थिति रही।

कार्यक्रम का शुभारंभ तिरंगा फहराने और राष्ट्रगान के साथ हुआ, जिससे पूरा वातावरण राष्ट्र के प्रति गर्व और श्रद्धा से भर गया। छात्रों ने देशभक्ति के गीत, भाषण और सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ दीं, जिनमें एकता, बलिदान और संवैधानिक अखंडता के मूल्यों को दर्शाया गया।

सभा को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि डॉ. अभिलाषा जे. लाल ने अपने प्रेरक शब्दों से छात्रों को प्रोत्साहित किया। उन्होंने एक मजबूत और प्रगतिशील राष्ट्र के निर्माण में अनुशासन, समर्पण और नैतिक मूल्यों के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने छात्रों को जिम्मेदार नागरिक बनने और शिक्षा एवं सेवा के माध्यम से समाज में सकारात्मक योगदान देने के लिए प्रेरित किया। यह अवसर और भी खास हो गया क्योंकि डॉ. अभिलाषा जे. लाल को हाल ही में मिसेज इंडिया 2026 इंस्पिरेशनल क्वीन डॉ. अभिलाषा लाल (रानी लक्ष्मीबाई) के प्रतिष्ठित खिताब से सम्मानित किया गया है। उनकी यह उपलब्धि सशक्तिकरण, दृढ़ संकल्प और नेतृत्व का प्रतीक बनकर उभरी, जिसने विशेष रूप से युवा छात्रों को बड़े सपने देखने और अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए कड़ी मेहनत करने हेतु प्रेरित किया। विद्यालय के प्रबंधक और प्रधानाचार्या ने भी छात्रों को संबोधित किया। उन्होंने छात्रों की सक्रिय भागीदारी की सराहना की और भारत के संविधान में निहित कर्तव्यों और अधिकारों की याद दिलाने में गणतंत्र दिवस के महत्व पर प्रकाश डाला। समारोह का समापन धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ, जिससे सभी उपस्थित लोग प्रेरित और देशभक्ति के जज्बे से भर उठे।

जिला पंचायत प्रयागराज में हर्षोल्लास से मनाया गया गणतंत्र दिवस

आधुनिक समाचार

प्रयागराज। देश भर में गणतंत्र दिवस पर हर्षोल्लास का माहौल रहा विभिन्न सरकारी एवं गैर सरकारी प्रतिष्ठानों में ध्वजारोहण कर राष्ट्रीय ध्वज को सलामी दी गई। इस कड़ी में प्रयागराज की विकास की धारा में सक्रिय भूमिका निभाने वाले जिले के प्रथम नागरिक जिला पंचायत अध्यक्ष डॉ वी के सिंह जी के निर्देशन में जिला पंचायत प्रयागराज में अपर मुख्य अधिकारी श्रीमती आरती मिश्रा द्वारा ध्वजारोहण किया गया तत्पश्चात समस्त कर्मचारी एवं अधिकारियों के द्वारा नैतिक मूल्यों की रक्षा हेतु राष्ट्र धर्म का पालन करने के लिए शपथ दिलाई गई ,अपर मुख्य अधिकारी ने कहा कि जिला पंचायत प्रयागराज माननीय अध्यक्ष महोदय के नेतृत्व में विगत पांच वर्षों से जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में विकास की अभूतपूर्व यात्रा पूर्ण कर रहा है जिसके लिए जिला पंचायत प्रयागराज के समस्त कार्मिक धन्यवाद के पात्र हैं सभागार में हुई सभा के दौरान देश की आजादी में भूमिका निभाने वाले स्वतंत्रता के प्रणेताओं को अपर मुख्य अधिकारी द्वारा श्रद्धा सुमन अर्पित किए गए तत्पश्चात कनिष्क लिपिक प्रियांशु श्रीवास्तव द्वारा देशभक्ति से ओतप्रोत प्रस्तुति पेश की गई ,राजस्व निरीक्षक श्री प्रभात शुक्ला ने संविधान के प्रति नैतिक दायित्व की जिम्मेदारी पर अपने वक्तव्य रखें ।

कार्यक्रम का समापन अपर मुख्य अधिकारी श्रीमती आरती मिश्रा द्वारा समस्त कर्मचारियो को उनके कर्तव्य बोध के प्रति जागरुक करते हुए धन्यवाद ज्ञापन देते हुए अल्पाहार से हुआ इस अवसर पर जिला पंचायत अध्यक्ष प्रतिनिधि श्री आलोक कुमार सहित समस्त अधिकारी एवं कर्मचारी गण मौजूद रहे । सभा का संचालन राजस्व निरीक्षक श्री विपिन बिहारी लाल गुप्ता ने किया।

पांच दिवसीय बैंकिंग की मांग को लेकर बैंक कर्मियों का प्रदर्शन

सोनभद्र। यूनाइटेड फोरम ऑफ बैंक यूनियन्स (यूएफबीयू) के आह्वान पर मंगलवार को 5-दिवसीय बैंकिंग की मांग को लेकर बैंक अधिकारियों व कर्मचारियों ने जोरदार धरना-प्रदर्शन किया। देशव्यापी बैंक हड़ताल के तहत रॉबर्ट्सगंज में स्टेट बैंक की मुख्य शाखा से शुरू हुआ प्रदर्शन इंडियन बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, यूनियन बैंक, केनरा बैंक, बैंक ऑफ बड़ौदा, पंजाब एंड सिंध बैंक, यूको बैंक व इंडियन ओवरसीज बैंक होते हुए बरौली चौराहा तक पहुंचा, जहां धरना दिया गया। धरना-प्रदर्शन का मुख्य उद्देश्य भारतीय बैंक संघ (आईबीए) द्वारा 5-दिवसीय बैंकिंग लागू करने के वादे को अब तक पूरा न किए जाने के खिलाफ विरोध दर्ज कराना था। प्रदर्शन में सभी संवर्गों के बैंक अधिकारी एवं कर्मचारी बड़ी संख्या में शामिल हुए और शांतिपूर्ण ढंग से नारेबाजी करते हुए अपनी मांगों को मजबूती से रखा। ऐसे में 5-दिवसीय बैंकिंग न केवल कर्मचारियों के कार्य-जीवन संतुलन के लिए आवश्यक है, बल्कि इससे बैंकिंग सेवाओं की गुणवत्ता, दक्षता और ग्राहक संतुष्टि में भी सुधार होगा। प्रदर्शन के उपरांत बैंक कर्मियों ने आम नागरिकों से संवाद कर आंदोलन के कारणों की जानकारी दी और जनसमर्थन जुटाने का आह्वान किया। पूरा कार्यक्रम शांतिपूर्ण और अनुशासित वातावरण में संपन्न हुआ।

संगठन ए आई एम सी ई ए के तत्वावधान में मनाई गयी भारत रत्न जननायक कर्पूरी ठाकुर की जयंती

प्रयागराज। नंद, सेन, शर्मा, सविता, नंदवंशी, वर्मा, नाई समाज के सामाजिक संगठन आल इंडिया महापद्मनंद कम्युनिटी एजुकेटेड एसोसिएशन जनपद प्रयागराज की ओर से चलों गांव की ओर तथा महिला सशक्तिकरण अभियान को गति देने के उद्देश्य से बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री स्वतंत्रता सेनानी भारत रत्न जननायक कर्पूरी ठाकुर की 102 वीं जयंती का आयोजन डॉ. लक्ष्मी कांत शर्मा मंडल अध्यक्ष के निर्देश एवं संगठन के जिला सचिव की देखरेख में जय मां दुर्गा गेस्ट हाउस तिसेन तुलापुर मांडा प्रयागराज में किया गया। इस समारोह के अध्यक्षता सरोज देवी शर्मा ने किया। तथा संचालन प्रेम शंकर शर्मा, जिला सचिव दिलीप कुमार शर्मा ने किया। समारोह के मुख्य अतिथि स्थानीय विधायक संदीप कुमार पटेल रहे। महापुरुषों के चित्रों पर अतिथियों एवं आएं मंचासिन लोगों के द्वारा माल्यार्पण पुष्पार्पण तथा दीप प्रज्वलन के पश्चात अतिथियों को बैच लगाकर स्वागत करने के उपरांत कार्यक्रम का विधिवत शुभारंभ किया गया। समारोह में बड़ी संख्या संगठन के पदाधिकारी एवं कार्यकर्ताओं के अतिरिक्त समाज के स्थानीय लोगों महिलाओं एवं बच्चों समेत उपस्थित रहें। वक्ताओं ने भारत रत्न जननायक कर्पूरी ठाकुर के जीवन पर प्रकाश डाला तथा उनकी सादगी और कार्यनिष्ठा की सराहना किया। कर्पूरी ठाकुर आज भी प्रासंगिक हैं इस वाद को रेखांकित किया गया। आज सभी राजनीतिक पार्टियां कर्पूरी ठाकुर की जयंती मनाते एवं उनके आदर्शों का गुणगान करने के लिए विवश हैं। इस मौके पर संदीप कुमार पटेल विधायक मेजा, सनाउल्लाह संघ प्रदेश सचिव अशोक कुमार कुशवाह, पिछड़ा वर्ग प्रकोष्ठ मंगला प्रसाद पाल,व गिरीश कुमार शर्मा कार्यकारिणी सदस्य,एन.के. वर्मा जिलाध्यक्ष, राजेन्द्र कुमार सेन (जिला सचिव), डॉ. अश्वनी कुमार नंदा, मंडल सदस्य इंजीनियर, सुरेश चंद्र शर्मा, जयराम शर्मा, मूलचंद शर्मा आदि लोग संबोधित किया। कार्यक्रम का समापन अध्यक्षता कर रही सरोज देवी शर्मा ने सभी अतिथियों एवं पदाधिकारियों, सदस्यों को धन्यवाद ज्ञापित करते हुए किया। यह जानकारी मूल चंद्र शर्मा जिला संगठन सचिव, ने प्रेस विज्ञप्ति के माध्यम से दिया है।

एस.एन.पब्लिक स्कूल मे मनाया गया गणतंत्र दिवस

प्रयागराज। प्रबंधक रीता मिश्रा, प्रधानाचार्य शिव शंकर मिश्रा तथा मयंक मिश्रा और सभी शिक्षकों ने मिलकर प्रभात फेरी हुई और ध्वजारोहण पार्षद प्रेम शंकर यादव द्वारा किया गया राजेंद्र प्रसाद ने 21 तोपों की सलामी के साथ ध्वजारोहण कर भारत को पूर्ण गणतंत्र घोषित किया। यह ऐतिहासिक क्षणों में गिना जाने वाला समय था।.हमारा देश इस वर्ष 26 जनवरी को अपना 76वां गणतंत्र दिवस मना रहा है। यह दिन हमें हमारे अधिकारों और कर्तव्यों की याद दिलाता है और सभी लोगों के प्रति समान व्यवहार करने का उचित पाठ पढ़ाता है। हमारा संविधान अनेकता में एकता से समाहित है और यही एकता एक राष्ट्र को विश्व पटल पर मजबूती से खड़ा रखने का काम करती है।यह दिन हमें हमारे महान स्वतंत्रता सेनानियों और संविधान निर्माताओं के बलिदान की याद दिलाता है।

क्या 2047 विकसित भारत की राजनीति,विश्वगुरु के नारे को साकार कर पायेगी? - डॉ.अतुल मलिकराम (राजनीतिक रणनीतिकार)

जब भारत 2047 में स्वतंत्रता के सौ वर्ष पूरे करेगा, तब वह केवल एक ऐतिहासिक उपलब्धि का उत्सव नहीं मना रहा होगा, बल्कि अपने अब तक के राजनीतिक, सामाजिक और वैचारिक सफ़र का गंभीर आत्म-मूल्यांकन भी कर रहा होगा। यह पड़ताल सिर्फ़ यह नहीं देखेगी कि देश ने कितनी आर्थिक तरक़्क़ी की, कितनी सड़कें बनीं या कितनी गगनचुंबी इमारतें खड़ी हुईं, बल्कि यह भी तय करेगी कि भारत ने अपने लोकतांत्रिक मूल्यों, सामाजिक संतुलन और वैश्विक भूमिका को किस दिशा में विकसित किया। इसी संदर्भ में विकसित भारत और विश्वगुरु भारत जैसे नारे उभरते हैं, जो आशा भी जगाते हैं और गंभीर प्रश्न भी खड़े करते हैं।

आज सार्वजनिक विमर्श में यह धारणा बार-बार दोहराई जा रही है कि भारत न केवल एक विकसित राष्ट्र बनेगा, बल्कि विश्व को दिशा देने वाला विश्वगुरु भी बनेगा। यह विचार भावनात्मक रूप से आकर्षक है, क्योंकि यह अतीत के गौरव और भविष्य की आकांक्षा को एक सूत्र में पिरोता है। लेकिन इतिहास और राजनीति दोनों यह सिखाते हैं कि कोई भी बड़ा नारा तभी स्थायी बनता है, जब उसके पीछे ठोस रणनीति, सामाजिक स्वीकार्यता और मज़बूत संस्थागत आधार मौजूद हो। इसलिए विश्वगुरु की अवधारणा को केवल भावना के स्तर पर नहीं, बल्कि व्यावहारिक यथार्थ के धरातल पर परखना अनिवार्य हो जाता है।

स्वतंत्रता के बाद भारत की यात्रा आसान नहीं रही। उपनिवेशवाद की विरासत, व्यापक गरीबी, अशिक्षा और गहरी सामाजिक विषमताओं के बावजूद भारत ने लोकतंत्र को न केवल अपनाया, बल्कि उसे लगातार जीवित भी रखा। आर्थिक सुधारों के बाद देश ने वैश्विक अर्थव्यवस्था में अपनी स्थिति मज़बूत की। आज भारत दुनिया की अग्रणी अर्थव्यवस्थाओं में शामिल है, डिजिटल तकनीक और नवाचार में तेज़ी से आगे बढ़ रहा है और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर उसकी बात को गंभीरता से सुना जाता है। ये सभी संकेत विकसित भारत की दिशा में प्रगति को दर्शाते हैं। लेकिन विश्वगुरु बनना केवल आर्थिक आँकड़ों या तकनीकी क्षमता का प्रश्न नहीं है। विश्वगुरु वही बन सकता है जो ज्ञान का स्रोत हो, नैतिक दिशा दे सके और अपने आचरण से उदाहरण प्रस्तुत करे। प्राचीन भारत की स्मृति के रूप में नालंदा और तक्षशिला जैसे विश्वविद्यालय, बौद्ध और जैन दर्शन, योग और आयुर्वेद आज भी दुनिया को प्रेरणा देती हैं। किंतु विश्वगुरु बनने के लिए केवल अतीत के गौरव का स्मरण पर्याप्त नहीं होगा। असली प्रश्न यह है कि क्या आधुनिक भारत समकालीन विश्व को ज्ञान, विचार और नैतिक नेतृत्व देने के लिए तैयार है?

विकसित भारत 2047 का नारा इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है कि यह भविष्य को एक स्पष्ट समयसीमा में बाँधता है। यह सरकारों, नीतिनिर्माताओं और नागरिकों को एक साझा लक्ष्य देता है। राजनीतिक रणनीति के रूप में यह एक ऐसा फ्रेम तैयार करता है, जिसके भीतर इंफ्रास्ट्रक्चर, तकनीक, सामाजिक कल्याण और आर्थिक सुधारों को जोड़ा जा सकता है। यह लोगों को यह महसूस कराता है कि वे किसी दीर्घकालिक राष्ट्रीय परियोजना का हिस्सा हैं, न कि केवल तात्कालिक राजनीतिक बहसों के दर्शक।

फिर भी, किसी भी राष्ट्र की वास्तविक शक्ति उसके नारों में नहीं, बल्कि उसके संस्थानों में होती है। शिक्षा, स्वास्थ्य, न्याय और प्रशासन, ये वे स्तंभ हैं जिन पर विकसित भारत की इमारत खड़ी होगी। शिक्षा के बिना ज्ञान-आधारित समाज संभव नहीं, और ज्ञान के बिना विश्वगुरु बनने का दावा खोखला रह जाता है। भारत में उच्च शिक्षा, रिसर्च और इनोवेशन को अभी भी नई प्राथमिकता की आवश्यकता है। जब तक विश्वविद्यालय वैश्विक ज्ञान-उत्पादन के केंद्र नहीं बनते, तब तक बौद्धिक नेतृत्व सीमित ही रहेगा। सामाजिक स्तर पर भी यह चुनौती उतनी ही गंभीर है। भारत की विविधता उसकी सबसे बड़ी शक्ति है, लेकिन यदि यह विविधता असमान अवसरों और सामाजिक दूरी में बदल जाए, तो विकास की नींव कमजोर पड़ जाती है। विश्वगुरु वही हो सकता है जो अपने समाज के भीतर न्याय, समरसता और संवाद को सुनिश्चित करे। विकास का लाभ यदि कुछ वर्गों तक सीमित रह गया, तो विकसित भारत की अवधारणा अधूरी रह जाएगी।

वैश्विक मंच पर भारत की भूमिका हाल के वर्षों में अधिक सक्रिय और संतुलित हुई है। वैश्विक दक्षिण की आवाज़ बनना, बहुपक्षीय मंचों पर पहल करना और रणनीतिक संतुलन बनाए रखना, ये सभी सकारात्मक संकेत हैं। लेकिन वैश्विक नेतृत्व केवल घोषणाओं से नहीं, बल्कि भरोसे, निरंतरता और आचरण से बनता है। दुनिया उसी देश को मार्गदर्शक मानती है, जो अपने भीतर स्थिर, न्यायपूर्ण और आत्मविश्वासी हो।

अंततः प्रश्न यही है 'विश्वगुरु' नारा है या रणनीति? यदि यह विचार केवल भाषणों, प्रतीकों और आत्म-प्रशंसा तक सीमित रह गया, तो यह राजनीतिक अहंकार का रूप ले सकता है। लेकिन यदि इसे शिक्षा, अनुसंधान, सामाजिक समरसता, लोकतांत्रिक संस्थाओं की मजबूती और जिम्मेदार वैश्विक व्यवहार से जोड़ा गया, तो यही अवधारणा भारत को एक सम्मानित वैश्विक नेतृत्व की ओर ले जा सकती है।

कोई भी राष्ट्र स्वयं को गुरु घोषित करके गुरु नहीं बनता। गुरु वही होता है, जिसे दुनिया स्वाभाविक रूप से सुनना और स्वीकार करना चाहे। भारत के लिए 2047 तक की यात्रा इसी परीक्षा की यात्रा है। यदि इस रास्ते पर नारे नहीं, परिणाम बोलें; घोषणाएँ नहीं, संस्थाएँ नेतृत्व करें; और शक्ति का प्रदर्शन नहीं, बल्कि ज्ञान, सहयोग और विश्वास पहचान बनें तो 'विश्वगुरु' भारत एक स्वाभाविक सच्चाई बन सकता है, न कि केवल एक राजनीतिक दावा।

अटल आवासीय विद्यालय में कक्षा छः व नौ में प्रवेश प्रक्रिया प्रारंभ, करें आवेदन

आवेदन पत्र जमा करने की अन्तिम तिथि 15 फरवरी तक परीक्षा तिथि 08 मार्च 2026 निर्धारित

रायबरेली : अपर जिलाधिकारी (वि0रा0)/नोडल अधिकारी अमृता सिंह ने अटल आवासीय विद्यालय प्रवेश परीक्षा रायबरेली की अध्यक्षता में समीक्षा बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में अपर जिलाधिकारी ने उपस्थित जिला प्रोबेशन अधिकारी, प्रधानाचार्य माध्यमिक शिक्षा को निर्देश दिये कि अटल आवासीय विद्यालय में कक्षा- 06 व 09 में पात्र बच्चों का अधिक से अधिक आवेदन कराना सुनिश्चित करें।

इस अवसर पर अपर पुलिस अधीक्षक संजीव कुमार सिन्हा, जिला प्रोबेशन अधिकारी जयपाल वर्मा, प्रधानाचार्य माध्यमिक शिक्षा, सहायक श्रमायुक्त आर0एल0 स्वर्णकार व श्रम प्रवर्तन अधिकारी उपस्थित रहे।

सहायक श्रमायुक्त आर0एल0 स्वर्णकार द्वारा अवगत कराया गया कि उ0प्र0 भवन एवं अन्य सन्निर्माण कर्मकार कल्याण बोर्ड द्वारा संचालित अटल आवासीय विद्यालय लखनऊ, ग्राम सिठौली कलां, तहसील मोहनलालगंज, जनपद लखनऊ में लखनऊ मण्डल के जनपद लखनऊ, लखीमपुर खीरी, रायबरेली, सीतापुर, उन्नाव, हरदोई के उ0प्र0 भवन एवं अन्य सन्निर्माण कर्मकार कल्याण बोर्ड के अंतर्गत पंजीकृत निर्माण श्रमिकों के बच्चों तथा कोविड-19 की महामारी के दौरान कोरोना से निराश्रित हुए बच्चों, महिला कल्याण विभाग, लखनऊ से प्राप्त सूची के आधार पर एवं मुख्यमंत्री बाल सेवा योजना (सामान्य) के अन्तर्गत पात्र बच्चों हेतु शैक्षिक सत्र 2026-27 में कक्षा 06 में कुल 160 सीटें (80 बालक एवं 80 बालिकायें) इसी प्रकार कक्षा-9 में कुल 60 सीट (30 बालक एवं 30 बालिकायें) पर प्रवेश हेतु ऑफलाइन/ऑनलाइन आवेदन पत्र आमंत्रित किये जा रहे हैं। उन्होंने बताया कि आवेदन पत्र किसी भी सामान्य कार्य दिवस में प्रातः 10:00 बजे से सायं 05:00 बजे तक निःशुल्क कार्यालय सहायक श्रमायुक्त, निकट मनिका सिनेमा, गाँधीनगर, रायबरेली/जिला प्रोबेशन अधिकारी कार्यालय/बेसिक शिक्षा अधिकारी कार्यालय/जिला विद्यालय निरीक्षक कार्यालयों से प्राप्त किये जा सकते है। पूर्ण भरे हुए आवेदन पत्र समस्त वांछित अभिलेखों एवं तीन अतिरिक्त फोटो के साथ 15 फरवरी 2026 की सायं 05:00 बजे तक जमा कराये जा सकते है।

उन्होंने बताया है कि सभी आधुनिक सुविधाओं युक्त सह शैक्षिक आवासीय विद्यालय है। बालक/बालिकाओं के लिए पृथक-पृथक छात्रावास है। निःशुल्क गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, भोजन व छात्रावास की व्यवस्था है। बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिये खेल एवं अन्य गतिविधियां है।

सहायक श्रमायुक्त ने पात्रता के बारे में बताया है कि अद्यतन नवीनीकृत निर्माण श्रमिक जो 30 नवम्बर 2025 को कम से कम तीन वर्ष बोर्ड की सदस्यता अवधि पूर्ण कर चुका हों। कोविड-19 से अनाथ हुए बच्चे जिनका महिला एवं बाल कल्याण विभाग में पंजीयन हो अथवा मुख्यमंत्री बाल सेवा योजना (सामान्य) हेतु पात्र बच्चे। कक्षा-6 में प्रवेश के लिए अभ्यर्थी की जन्म तिथि 01 मई 2014 से पहले तथा 31 जुलाई 2016 के बाद की नहीं होनी चाहिए। कक्षा-9 के प्रवेश के लिए अभ्यर्थी की जन्मतिथि 01 मई 2011 से पहले तथा 31 जुलाई 2013 के बाद की नहीं होनी चाहिए। कक्षा 06 एवं 09 में प्रवेश हेतु अभ्यर्थी कक्षा 05 तथा 08 में अध्ययनरत हो अथवा कक्षा-05 तथा 08 उत्तीर्ण होना चाहिए। प्रति परिवार के अधिकतम 02 बच्चे ही पात्र होंगें। सभी वर्गों के लिये आरक्षण नियमानुसार देय होगा। "दिव्यांग बच्चों (अर्थात् शारीरिक विकलांगता, श्रवण बाधित और दृष्टिबाधित)" के लिये आरक्षण का प्राविधान है।

उन्होंने आवश्यक अभिलेख के बारे में बताया है कि निर्माण श्रमिक होने की दशा में अद्यतन नवीनीकृत निर्माण श्रमिक कार्ड की प्रति। अनाथ होने की दशा में माता व पिता का मृत्यु प्रमाण-पत्र की प्रति। अभ्यर्थी के जन्म प्रमाण पत्र की प्रति। अभ्यर्थी के आधार कार्ड की प्रति। जाति प्रमाण पत्र की प्रति। आवेदक का पेन नं0। तीन पासपोर्ट साइज के फोटों।

परीक्षा तिथि 08 मार्च 2026 है। प्रवेश परीक्षा लखनऊ राजस्व मण्डल के जनपदों- लखनऊ, लखीमपुर खीरी, रायबरेली, सीतापुर, उन्नाव, हरदोई में करायी जाएगी। प्रवेश परीक्षा का स्थान प्रवेश पत्र के माध्यम से अवगत कराया जायेगा। प्रवेश पत्र प्रवेश परीक्षा दिनांक से एक सप्ताह पूर्व श्रम विभाग के जनपदीय कार्यालय द्वारा अभ्यर्थियों को उपलब्ध करा दिए जायेंगे। अधिक जानकारी के लिए बोर्ड वेबसाइट देखें। आवेदन पत्र भी आप यहां से डाउनलोड कर सकते है।

महिलाओं और किशोरियों के सशक्तिकरण के लिए महत्वपूर्ण कदम : नमिता शरण

सोनभद्र। जन कल्याण ग्रामोद्योग सेवा आश्रम, सोनभद्र द्वारा महिलाओं और किशोरियों के सशक्तिकरण के लिए एक महत्वपूर्ण कदम उठाया गया है। शनिवार को संस्था द्वारा संचालित परियोजना 'इम्पॉवर हर' के अंतर्गत

जिला स्तरीय एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में नगवा ब्लॉक के 10 ग्राम पंचायतों से कुल 50 महिलाओं और किशोरियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुआ, जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में जिला पंचायत राज अधिकारी नमिता शरण, डीसी मनरेगा रविंद्र वीर, जिला प्रोबेशन अधिकारी से नीतू सिंह एवं सीमा द्विवेदी, रसेती से अंजनी एवं संजय उपस्थित रहे। कार्यक्रम में विभिन्न विभागों के विशेषज्ञों ने सरकारी योजनाओं पर विस्तृत जानकारी साझा की। वन स्टॉप सेंटर, विधवा पेंशन, राष्ट्रीय पारिवारिक लाभ योजना, स्पॉन्सरशिप योजना, चाइल्डलाइन (1098), 1076 आदि योजनाओं के बारे में विस्तार से बताया गया। मनरेगा योजना के तहत उपलब्ध अवसरों एवं महिलाओं के लिए विशेष प्रावधानों पर चर्चा की गई।

वरिष्ठ पत्रकार रामकिशोर त्रिवेदी की माता का देहावसान

रायबरेली। वरिष्ठ पत्रकार रामकिशोर त्रिवेदी की पूज्य माताजी गोमती त्रिवेदी का 87 वर्ष की आयु निधन हो गया। उनके निधन का समाचार मिलते ही पत्रकारिता जगत, राजनीतिक क्षेत्र तथा सामाजिक संगठनों में शोक की लहर व्याप्त हो गई। वह अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोड़ गई स्व. गोमती त्रिवेदी एक धर्मपरायण, सुसंस्कृत एवं सामाजिक मूल्यों से परिपूर्ण व्यक्तित्व की धनी थीं। उन्होंने अपने पूरे जीवन में पारिवारिक एकता, सामाजिक सौहार्द और नैतिक संस्कारों को सर्वोच्च स्थान दिया। उनका जीवन त्याग, संयम और सामाजिक चेतना का प्रेरणास्रोत रहा। रामकिशोर त्रिवेदी वरिष्ठ पत्रकार की माता जी के निधन पर वरिष्ठ पत्रकारों, राजनीतिक नेताओं, जनप्रतिनिधियों एवं सामाजिक सरोकार से जुड़े लोगों ने गहरा शोक व्यक्त किया है। अनेक गणमान्य व्यक्तियों ने व्यक्तिगत रूप से फोन कर रामकेशोर त्रिवेदी को शोक-संवेदना प्रकट की वरिष्ठ पत्रकार शिव मनोहर पांडे ने कहा कि स्व. गोमती त्रिवेदी जैसे व्यक्तित्व समाज की वह मौन शक्ति होते हैं, जिनके संस्कारों से ही सजग, जिम्मेदार और जनपक्षधर पत्रकार तैयार होते हैं।

रामकथा मे अहिल्या उद्धार व पुष्प वाटिका प्रसंग का किया गया वर्णन

सोनभद्र।रावर्ट्सगंज नगर के अन्तर्गत अशोकनगर अकड़हवा पोखरा स्थित रामजानकी मंदिर पर चल रहे नव दिवशीय 27 जनवरी से 4 फरवरी तक चलने वाले श्री रामकथा मे चतुर्थ दिवस की कथा के क्रम मे उपस्थित श्रद्धालुओं को कथा वाचक द्वारा रामकथा मे अहिल्या उद्धार व पुष्प वाटिका प्रसंग का वर्णन किया गया। काशी की धरा से पधारे कथा वाचक मानस किंकर नीरजानन्द महराज ने बताया कि एक बार भगवान राम को रास्ते मे निर्जन आश्रम दिखाई दिया। वहाँ पत्थर की शिला देखकर भगवान राम ने विश्वामित्र से उसके बारे मे पूछा उन्होंने बताया की यह गौतम ऋषि की पत्नी अहिल्या थी। वे अत्यन्त पतिव्रता, धर्म परायण और तपस्वनी नारी थी। एकबार देवराज इंद्र ने छलपूर्वक ऋषि गौतम का वेश धारण कर अहिल्या जी के आश्रम मे प्रवेश किया सत्य का ज्ञान होने पर भी अहिल्या जी उस छल मे फस गईं। जब ऋषि गौतम को ज्ञात हुआ तो वे अत्यन्त क्रोधित हो गये। और उन्होंने इंद्र को श्राप दिया व अहिल्या को पत्थर होने का श्राप दे दिया। फिर भगवान राम ने अहिल्या का उद्धार कर आगे

मिथिला के लिये बढ़े। उन्होंने बताया की मिथिला मे पहुंचने के बाद भगवान राम गुरु विश्वामित्र व भ्राता लक्ष्मण सहित अमवारी अर्थात आम के बगीचे मे बैठे और पुष्प वाटिका देखने की इच्छा से पुष्पवाटिका मे प्रवेश किया। यज्ञ का संचालन राम जानकी मंदिर के प्रधान पुजारी पं0 नीरजानन्द मिश्र द्वारा किया गया साथ ही उन्होंने नगर वासियों से अपील भी किया कि अधिक से अधिक संख्या मे राम कथा मे उपस्थित होकर पुण्य लाभ अर्जित करे। इस मौके पर राम चरित मानस के परायण कर रहे मानस हंस श्यामबली पाठक व यज्ञ के आचार्य पं0 राजन पाण्डेय व पं0 मनोज कुमार दीक्षित पं0 अनूप पाण्डेय, मुख्य यजमान अरविन्द देव पाण्डेय, कपिल मुनि मिश्र, राजेश शुक्ल, संतोष सिंह, मनोरथ मिश्र, राजू पाण्डेय, संजय पाण्डेय, कृष्ण कुमार मिश्र, विनय, मनोज सिंह, नितेश पाठक अरविन्द दुबे इत्यादि लोग मौजूद रहे।

04 फरवरी को जिला पंचायत सभागार में महिला जनसुनवाई का आयोजन

रायबरेली: मुख्य विकास अधिकारी अंजू लता ने बताया है कि मा0 सदस्य, राज्य महिला आयोग उ0प्र0 लखनऊ पूनम द्विवेदी द्वारा जागरूकता चौपाल एवं महिला जन सुनवाई कार्यक्रम प्रस्तावित है, जिसके अन्तर्गत 04 फरवरी 2026 को पूर्वान्ह 11:00 बजे जिला पंचायत सभागार तहसील सदर रायबरेली में महिला जनसुनवाई कार्यक्रम एवं तत्पश्चात समुदायिक/प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र तथा बालिका/महिला गृह व ऑगनबाड़ी केन्द्र का निरीक्षण प्रस्तावित है।

बिल्ली मारकुंडी खनन हादसे पर कांग्रेस का होगा विरोध प्रदर्शन

सोनभद्र। शनिवार को जिला कांग्रेस कमेटी के जिला अध्यक्ष रामराज सिंह गौड़ के नेतृत्व में कांग्रेस पार्टी का प्रतिनिधिमंडल जिला अधिकारी के कार्यालय पर चार सूत्रीय मांग को लेकर ज्ञापन देने पहुंचा। वहां पर एडीएम को चार सूत्रीय ज्ञापन सौपा गया। ज्ञापन पत्र के माध्यम से मांग की गई कि बिल्ली मारकुंडी खनन हादसे में दिनांक 15 नवंबर 2025 को हुए भयानक

हादसे में अभी तक उक्त खदान मालिकों को गिरफ्तार नहीं किया गया। खनन हादसे में लापरवाही बढ़ाने वाले खदान मालिकों को 15 दिनों के भीतर गिरफ्तार नहीं किया जाता है, तो कांग्रेस पार्टी आंदोलन करेगी। खनन हादसे में जान गंवाने वाले के परिवार जनों को उचित मुआवजा तथा उनके परिवार के आश्रितों को सरकारी नौकरी अभी तक नहीं दी गई है। उपरोक्त मांगों को अगर 15 दिनों के भीतर पूरा नहीं किया जाता है, तो उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष पूर्व मंत्री अजय राज जी के नेतृत्व में 18 फरवरी 2026 को विशाल धरना प्रदर्शन किया जाएगा। ज्ञापन सौंपने वालों में जिला अध्यक्ष रामराज सिंह गौड़, इंजीनियर जितेंद्र पासवान, कमलेश ओझा, राजीव त्रिपाठी, शशांक मिश्रा, सनी शुक्ला, राघवेंद्र नारायण त्रिपाठी, आरटीआई के जिला अध्यक्ष श्रीकांत मिश्रा आदि लोग शामिल रहे।

मतदाताओं का नाम जोड़ने में अपनी भूमिका निभाएँ सभासद

जॉइन मजिस्ट्रेट सदर एसडीएम ने की वार्ड मेंबरों के साथ बैठक,अपने-अपने वार्ड में जाकर छूटे हुए मतदाताओं का नाम जुड़वाने का करें काम

सोनभद्र। नगर पालिका सभागार में शनिवार को सदर एसडीएम जॉइन मजिस्ट्रेट उत्कर्ष द्विवेदी द्वारा नगर पालिका क्षेत्र के सभी सभासदों के साथ एस आई आर के तहत छूटे हुए मतदाताओं के नाम तथा गैर जनपद से आए हुए नए मतदाताओं सहित सभी घरों तक पहुंच कर नाम जुड़वाने का करें काम। जॉइन मजिस्ट्रेट सदर एसडीएम उत्कर्ष द्विवेदी ने बताया की सभी सभासदों के साथ अपने-अपने वार्ड क्षेत्र के पुराने मतदाता व छूटे हुए मतदाताओं के नाम लिस्ट बनाकर उनके नाम जुड़वाने को लेकर विशेष अभियान चलाने को किया अपील। संबंधित सभासद अपने-अपने क्षेत्र में हर घर पहुंच कर नाम के साथ लिस्ट बनाकर संबंधित बीएलो से संपर्क करते हुए वोटर लिस्ट में करें काम जो कोई फॉर्मेट अथवा कोई असुविधा उपलब्ध होती हैं तो आपस मे वार्ता कर समाधान के साथ सभी मतदाताओं का नाम जुड़वाएं। इस दौरान जेई राज कुमार राज,पूर्व नगर अध्यक्ष बलराम सोनी,लेखपाल सुबोध सिंह, नीरज कुमार,सभासद अनवर अली, मनोज चौबे, राकेश कुमार, दिनेश, पप्पू दूबे, ओमप्रकाश यादव,अजित सिंह, संत सोनी, बिमलेश, सुजीत आदि लोग मौजूद रहें।

डॉ एचपी सिंह को मिला 'चिकित्सक शिरोमणि' का सम्मान

सोनभद्र। प्रकाश पाली क्लीनिक के चिकित्सक डॉ एचपी सिंह को समाज सेवा, खेल कूद एवं चिकित्सकीय क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए आइडियल जर्नलिस्ट एसोसिएशन ऑफ इंडिया द्वारा 'चिकित्सक शिरोमणि' सोनभद्र की उपाधि से सम्मानित किया गया है।

डॉ एचपी सिंह को यह सम्मान दिल्ली में आयोजित आइडियल जर्नलिस्ट एसोसिएशन ऑफ इंडिया के रजत जयंती समारोह में दिया जाना था, लेकिन वे अपरिहार्य कारणों से उपस्थित नहीं हो पाए थे। इसलिए, संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ प्रमोद वाचस्पति के निर्देश पर सोनभद्र के जिला अध्यक्ष एवं संतोष कुमार नागर के माध्यम से शुक्रवार को डॉ एचपी सिंह के प्रकाश पाली क्लीनिक पर जाकर सम्मानित किया गया।

उत्तर प्रदेश पंचायती राज ग्रामीण सफाई कर्मचारी संघ का द्विवार्षिक अधिवेशन संपन्न

सोनभद्र।उत्तर प्रदेश पंचायती राज ग्रामीण सफाई कर्मचारी संघ का सोनभद्र जनपद का द्विवार्षिक अधिवेशन मंगलवार को नगर स्थित राज बैंक्विट हॉल में संपन्न हुआ। अधिवेशन के दौरान संगठन के विभिन्न पदों के लिए नामांकन प्रक्रिया पूरी की गई, जिसमें सभी पदाधिकारियों का निर्विरोध निर्वाचन हुआ। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में सफाई कर्मचारी एवं संघ के प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

चुनाव प्रक्रिया के तहत रवि प्रकाश सिंह को जिला अध्यक्ष, मानिकचंद को जिला मंत्री, उमेश शर्मा को जिला कोषाध्यक्ष, राकेश चौधरी को जिला संगठन मंत्री तथा चूड़ामणि को जिला संप्रेक्षक पद पर निर्विरोध निर्वाचित घोषित किया गया। चुनाव नामांकन एवं निर्वाचन की पूरी प्रक्रिया चुनाव अधिकारी योगेश कुमार की देखरेख में शांतिपूर्ण और पारदर्शी ढंग से संपन्न कराई गई। अधिवेशन को संबोधित करते हुए नव-निर्वाचित जिला अध्यक्ष रवि प्रकाश सिंह ने कहा कि ग्रामीण सफाई कर्मचारियों की समस्याओं और अधिकारों के लिए संगठन पूरी मजबूती के साथ संघर्ष करेगा। उन्होंने कहा कि सफाई कर्मचारी पंचायत व्यवस्था की रीढ़ हैं और उनके मान-सम्मान, नियमित मानदेय, सुरक्षा उपकरण तथा अन्य मूलभूत सुविधाओं के लिए संघ लगातार आवाज उठाता रहेगा।

जिला मंत्री मानिकचंद ने कहा कि संगठन को जमीनी स्तर पर और मजबूत किया जाएगा तथा हर सफाई कर्मचारी को संघ से जोड़ने का अभियान चलाया जाएगा। अन्य पदाधिकारियों ने भी कर्मचारियों के हित में एकजुट होकर कार्य करने का संकल्प दोहराया। अधिवेशन के दौरान संगठनात्मक मजबूती, आगामी रणनीति और कर्मचारियों से जुड़ी समस्याओं पर भी विस्तृत चर्चा की गई। कार्यक्रम के अंत में सभी नव-निर्वाचित पदाधिकारियों को उपस्थित सदस्यों ने बधाई दी।

लायंस क्लब राबर्ट्सगंज द्वारा निःशुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर का आयोजन

सोनभद्र। लायंस क्लब राबर्ट्सगंज द्वारा निःशुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर का आयोजन प्रत्येक माह की 26 तारीख को लायंस भवन में श्री सद्गुरु नेत्र चिकित्सालय, चित्रकूट के सहयोग से आयोजित किया जाता है। इस बार 26 जनवरी को मैनेजर हेमराज यादव, डॉ श्याम बाबू द्विवेदी, डॉ विक्रम सिंह, सुशील मिश्रा, दीलिप कुमार कुशवाहा, दयाराम सिंह, कुंवर सिंह व टीम के नेतृत्व में मोतियाबिंद के ऑपरेशन के लिए 48 मरीज चित्रकूट भेजे गए। इस अवसर पर जोन चेयरपर्सन राधिका सिंह, विमल अग्रवाल, कोषाध्यक्ष संगम गुप्ता, घनश्याम दास सिंगल, अशोक गुप्ता, मुकेश कुमार जायसवाल आदि सदस्य उपस्थित रहकर कार्यक्रम को संपन्न कराएं।

जिला कारागार में बन्दियों के विधिक अधिकार विषय पर जागरुकता शिविर का आयोजन संपन्न

रायबरेली: उ0प्र0 राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण, लखनऊ तथा मा0 जनपद न्यायाधीश/अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, रायबरेली अमित पाल सिंह के दिशा-निर्देशन में सचिव, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, रायबरेली अमोद कंठ द्वारा जिला कारागार, रायबरेली का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण दौरान सचिव द्वारा जिला कारागार की पाकशाला, महिला बैरक, जेल चिकित्सालय, लीगल ऐड क्लीनिक व वीडियो कान्फ्रसिंग कक्ष का अवलोकन किया गया। जेल चिकित्सालय में सचिव द्वारा मानसिक रोग से ग्रस्त बन्दियों से बात कर उनका हालचाल जाना गया। सचिव द्वारा महिला बन्दियों को स्वरोजगार प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रतिभाग करने हेतु प्रोत्साहित किया गया। निरीक्षण दौरान सचिव द्वारा बन्दियों से उनके पास अधिवक्ता की उपलब्धता के बाबत जानकारी ली गई। इसके अतिरिक्त ऐसा कोई बन्दी तो नहीं है जिसकी जमानत न्यायालय से होने के बाद भी जमानतदार न दाखिल होने के कारण रिहाई नहीं हो सकी हो के सम्बन्ध में भी जानकारी ली गयी।

निरीक्षण के पश्चात बन्दियों को विधिक रुप से जागरुक करने हेतु विधिक जागरुकता कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में उपस्थित बन्दियों को उनके विधिक अधिकार की जानकारी दी गई तथा यह भी बताया गया कि जिन बन्दियों को निःशुल्क अधिवक्ता की आवश्यकता हो वह जेल में स्थित लीगल ऐड क्लीनिक के माध्यम से मदद ले सकते है।

निरीक्षण के दौरान व विधिक जागरुकता कार्यक्रम में अनीशा अपर मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट-प्रथम, जेलर हिमाशुँ रौतेला, डिप्टी चीफ लीगल एड डिफेन्स काउन्सिल जय सिंह यादव व जेल चिकित्साधिकारी डा0 सुनील अग्रवाल, उपकारापाल अंकित गौतम, जनमेजय सिंह व सुमैया परवीन उपस्थित रही।

डीएम-एसपी ने जिला कारागार का किया निरीक्षण

रायबरेली: जिलाधिकारी हर्षिता माथुर व पुलिस अधीक्षक डॉ0 यशवीर सिंह ने जिला कारागार रायबरेली का निरीक्षण कर व्यवस्थाओं का जायजा लिया तथा कैदियों की समस्याओं को सुना। सभी बैरकों का निरीक्षण करते हुए उन्होंने कारागार के पाकशाला में बन्दियों को दिये जाने वाले भोजन की गुणवत्ता, साफ सफाई, पेयजल, प्रकाश व्यवस्था आदि का भी अवलोकन किया गया। उन्होंने कहा कि व्यवस्थाओं को नियमानुसार दुरूस्त रखने के साथ ही बंदी गृह में रह रहे मरीजों के चिकित्सा व्यवस्था का भी ध्यान रखा जाए। उन्होंने निर्देश दिये कि सभी व्यवस्थाओं को जेल मैनुअल के अनुरूप ही सुनिश्चित कराया जाए।

सबसे बड़ा धर्म है गरीबों की सेवा: डॉक्टर धर्मवीर तिवारी

जनकल्याण सेवा समिति ने कबरी गांव में जरूरतमंद लोगों के बीच 151 कंबल बांटा

सोनभद्र। जनकल्याण सेवा समिति द्वारा शनिवार को जरूरत मंद लोगों के बीच 151 कंबल वितरण किया गया। कंबल पाकर विधवा, विकलांग, गरीब, असहाय लोगों के चेहरों पर मुस्कान दिखी।

समिति के सचिव डॉ धर्मवीर तिवारी ने कहा कि गरीबों की सेवा ही सबसे बड़ा धर्म है। इस कड़ाके की ठंड में उन दिव्यांगों, गरीबों, असहाय लोगों को कंबल देकर सेवा करने से जो आत्म संतुष्टि की अनुभूति होती है उसकी कल्पना नहीं की जा सकती। बस जीवन का एक ही संकल्प है कि लगातार सबकी सेवा करता रहूं। कंबल वितरण के समय ओम प्रकाश चतुर्वेदी, अनुराग त्रिपाठी, संदीप चौहान, पूजा सिंह, अमिताभ चौहान, निधि सिंह, श्वेता सिंह, पूजा पांडेय, कृष्ण देव पांडेय, राजू विश्वकर्मा, चंद्रभान देव, आरती, सरोज भारती आदि मौजूद रही।

सम्पादकीय

सुप्रीम कोर्ट के दखल के बाद बंगाल के वोटरों को राहत वोटर लिस्ट में दोबारा नाम दर्ज कराने में मिलेगी मदद

पश्चिम बंगाल में एसआईआर की तार्किक विसंगतियों की श्रेणी में शामिल लगभग 1.25 करोड़ मतदाताओं के नाम सार्वजनिक करने होंगे। सुप्रीम कोर्ट के इस आदेश से लाखों मतदाताओं को वोटर लिस्ट में दोबारा नाम दर्ज कराने में मदद मिलेगी। इस आदेश का मकसद यही है कि लोगों के मताधिकार की हर कीमत पर सुरक्षा होनी चाहिए। तार्किक विसंगति वह श्रेणी है, जिसमें किसी मतदाता का नाम हटाया नहीं जाता, लेकिन उसकी दी जानकारी रेकॉर्ड से मेल नहीं खाती या संदेह पैदा करती है। ऐसे मामलों में संबंधित मतदाताओं को स्पष्टीकरण का मौका दिया जाता है। हालांकि बंगाल में बड़े पैमाने पर लोगों को इस श्रेणी में डाल दिए जाने से विवाद खड़ा हो गया। ऊश्ण का आरोप है कि चुनाव आयोग ने जानबूझकर ड्राफ्ट रोल से मतदाताओं के नाम काटे हैं, जबकि आयोग ऐसे आरोपों से इनकार करता आया है। सुप्रीम कोर्ट के दखल से अब प्रभावित लोगों को आपत्तियों के जवाब और संबंधित दस्तावेज जमा करने में सुविधा मिलेगी। देखा जाए तो भले इस श्रेणी का मतलब नाम न कटना हो, लेकिन आम लोगों के लिए छोटी-छोटी बातें भी कई बार बड़ी मुश्किल पैदा करती हैं। यह संख्या ही अपने आप में इतनी बड़ी है, जिनकी आपत्तियों के निपटारे के लिए पर्याप्त समय और धैर्य चाहिए। उम्मीद कर सकते हैं कि प्रक्रिया को लेकर जो शिकायतें उठ रही हैं, अदालत के फैसले से वे दूर होंगी - आम लोगों को ध्यान में रखते हुए बेहतर व्यवस्था बनाई जाएगी। बिहार में पहले चरण से लेकर अभी दूसरे चरण तक, एंदिं को लेकर सबसे बड़ी शिकायत पारदर्शिता और मंशा की रही है। विपक्ष अगर इसे संदेह की नजर से देख रहा है, तो उसकी कुछ वजहें हैं। सुप्रीम कोर्ट को बार-बार हस्तक्षेप करना पड़ रहा है और चुनाव आयोग यह विश्वास दिलाने में कहीं न कहीं नाकाम रहा है कि एंदिं का मकसद वोटर लिस्ट से नाम काटना या नागरिकता तय करना नहीं। दूसरे चरण में जारी 11 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों की ड्राफ्ट लिस्ट में कुल मिलाकर 3.69 करोड़ नाम कटे हैं। पश्चिम बंगाल में ही 58 लाख नाम हटे हैं। तार्किक विसंगतियों की श्रेणी में शामिल लोग इससे अलग हैं। इन सभी को अपनी बात रखने और दोबारा मतदाता बनने का पूरा मौका दिया जाना चाहिए। प्रक्रिया निष्पक्ष और नागरिकों के अधिकारों की रक्षा करने वाली हो। एसआईआर का मकसद तब सफल होगा, जब हरेक योग्य मतदाता को वोट देने का अधिकार मिलेगा।

प्रजातंत्र को वास्तविक गणतंत्र में बदलने की जरूरत

प्रो. संजय द्विवेदी

आजादी के लगभग 8 दशक पूरे करने के बाद भारतीय गणतंत्र एक ऐसे मुकाम पर है, जहाँ से उसे सिर्फ आगे ही जाना है। अपनी एकता, अखंडता और सांस्कृतिक व नैतिक मूल्यों के साथ पूरी हुई इन 8 दशकों की यात्रा ने पूरी दुनिया के मन में भारत के लिए एक आदर पैदा किया है। यही कारण है कि हमारे भारतवंशी आज दुनिया के हर देश में एक नई निगाह से देखे जा रहे हैं। उनकी प्रतिभा का आदर और मूल्य भी उन्हें मिल रहा है। हमें सोचना होगा कि आखिर हम उस सपने को कैसा पूरा कर सकते हैं जिसे पूरे करने के लिए सिर्फ कुछ साल बचे हैं। यानि 2047 में भारत को महाशक्ति और विश्वगुरु बनाने का सपना।

आजादी के लड़ाई के मूल्य आज भले थोड़ा धुंधले दिखते हों या राष्ट्रीय पर्व औपचारिकताओं में लिपटे हुए, लेकिन यह सच है कि देश की युवाशक्ति आज भी अपने राष्ट्र को उसी ज़ज्बे से प्यार करती है, जो सपना हमारे सेनानियों ने देखा था। आजादी की जंग में जिन नौजवानों ने अपना सर्वस्व निछावर किया, वही ललक और प्रेरणा आज भी भारत के उत्थान के लिए नई पीढ़ी में दिखती है। हमारे प्रशासनिक और राजनीतिक तंत्र में भले ही संवेदना घट चली हो, लेकिन आम आदमी आज भी बेहद ईमानदार और नैतिक है। वह सीधे रास्ते चलकर प्रगति की सीढ़ियाँ चढ़ना चाहता है। यदि ऐसा न होता तो विदेशों में जाकर भारत के युवा सफलताओं के इतिहास न लिख रहे होते। जो विदेशों में गए हैं, उनके सामने यदि अपने देश में ही विकास के समान अवसर उपलब्ध होते तो वे शायद अपनी मातृभूमि को छोड़ने के लिए प्रेरित न होते। बावजूद इसके विदेशों में जाकर भी उन्होंने अपनी प्रतिभा, मेहनत और ईमानदारी से भारत के लिए एक ब्रांड एंबेसेडर का काम किया है। यही कारण है कि साँप, सपेरों और साधुओं के रूप में पहचाने जाने वाले भारत की छवि आज एक ऐसे तेजी से प्रगति करते राष्ट्र के रूप में बनी है, जो तेजी से अपने को एक महाशक्ति में बदल रहा है। आर्थिक सुधारों की तीव्र गति ने भारत को दुनिया के सामने एक ऐसे चमकीले क्षेत्र के रूप में स्थापित कर दिया है, जहाँ व्यवसायिक विकास की भारी संभावनाएं देखी जा रही हैं। यह अकारण नहीं है कि तेजी के साथ भारत की तरफ विदेशी राष्ट्र आकर्षित हुए हैं। बाजारवाद के हो-हल्ले के बावजूद आम भारतीय की शैक्षिक, आर्थिक और सामाजिक स्थितियों में व्यापक परिवर्तन देखे जा रहे हैं। ये परिवर्तन आज भले ही मध्यवर्ग तक सीमित दिखते हों, इनका लाभ आने वाले समय में नीचे तक पहुँचेगा। आकांक्षावान भारत का उदयःभारी संख्या में युवा शक्तियों से सुसज्जित देश अपनी आंकाक्षाओं की पूर्ति के लिए अब किसी भी सीमा को तोड़ने को आतुर है। युवाशक्ति तेजी के साथ नए-नए विषयों पर काम कर रही है, जिसने हर क्षेत्र में एक ऐसी प्रयोगधर्मी और प्रगतिशील पीढ़ी खड़ी की है, जिस पर दुनिया विस्मित है। सूचना प्रौद्योगिकी, फिल्में, कृषि और अनुसंधान

से जुड़े क्षेत्रों या विविध प्रदर्शन कलाएँ हर जगह भारतीय प्रतिभाएँ वैश्विक संदर्भ में अपनी जगह बना रही हैं। शायद यही कारण है कि भारत की तरफ देखने का दुनिया का नजरिया पिछले एक दशक में बहुत बदला है। ये चीजें अनायास और अचानक घट गईं हैं, ऐसा भी नहीं है। देश के नेतृत्व के साथ-साथ आम आदमी के अंदर पैदा हुए आत्मविश्वास ने विकास की गति बहुत बढ़ा दी है। भ्रष्टाचार और संवेदनहीनता की तमाम कहानियों के बीच भी विश्वास के बीज धीरे-धीरे एक वृक्ष का रूप ले रहे हैं। कई स्तरों पर बंटे समाज में भाषा, जाति, धर्म और प्रांतवाद की तमाम दीवारें हैं। कई दीवारें ऐसी भी कि जिन्हें हमने खुद खड़ा किया है और हमारा बुरा सोचने वाली ताकतें उन्हें संबल दे रही हैं। राष्ट्रीय सुरक्षा के प्रश्न पर भी जब देश बँटा हुआ नज़र आता है, तो कई बार आम भारतीय का दुख बढ़ जाता है। घुसपैठ की समस्या भी एक ऐसी समस्या है जिससे लगातार नज़रअंदाज़ किया जा रहा है। किसी तरह भी वोट बैंक बनाने और सत्ता हासिल करने की होड ने तमाम मूल्यों को शीर्षासन करा दिया है। ऐसे में जनता के विश्वास की रक्षा कैसे की जा सकती है? आजादी के इतने साल के बाद लगभग वही सवाल आज भी खड़े हैं, जिनके चलते देश का बँटवारा हुआ और महात्मा गांधी जैसी विभूतियां भी इस बँटवारे को रोक नहीं पाईं। देश के अनेक हिस्सों में चल रहे अतिवादी आंदोलन, चाहे वे किसी नाम से भी चलाए जा रहे हों या किसी भी विचारधारा से प्रेरित हों। सबका उद्देश्य भारत की प्रगति के मार्ग में रोड़े अटकाना ही है। अनेक विकास परियोजनाओं के खिलाफ इनका हस्तक्षेप यह बताता है कि सारा कुछ बेहतर नहीं है। गणतंत्र को सार्थक करने के लिए हमें साधन संपन्नों और हाशिये पर खड़े लोगों को एक तल पर देखना होगा। क्योंकि आजादी तभी सार्थक है, जब वह हिंदुस्तान के हर आदमी को समान विकास के अवसर उपलब्ध कराए। कानून की नजर में हर आदमी समान है, यह बात नारे में नहीं, व्यवहार में भी दिखनी चाहिए।

अंतिम आदमी का कीजिए विचारः गणतंत्र के बारे में कहा जाता है कि वह सौ सालों में साकार होता है। भारत ने इस यात्रा की भी काफी यात्रा पूरी कर ली है। बावजूद इसके हमें डा. राममनोहर लोहिया की यह बात ध्यान रखनी होगी कि 'लोकराज लोकलाज से चलता है।' इसी के साथ याद आते हैं पं. दीनदयाल उपाध्याय जैसे लोग, जिन्होंने एकात्म मानववाद का दर्शन देकर भारतीय राजनीति को एक ऐसी दृष्टि दी है, जिसमें आम आदमी के लिए जगह है। यह दर्शन हमें दरिद्रनारायण की सेवा की मार्ग पर प्रशस्त करता है। महात्मा गांधी भी अंतिम व्यक्ति का विचार करते हुए उसके लिए इस तंत्र में जगह बनाने की बात करते हैं। हमें सोचना होगा कि गणतंत्र के इन वर्षों में उस आखिरी आदमी के लिए हम कितनी जगह और कितनी संवेदना बना पाए हैं। प्रगति और विकास के सूचकांक तभी सार्थक हैं, जब वे आम आदमी के चेहरे पर मुस्कान लाने में समर्थ हों। क्या ऐसा कुछ बताने और कहने के लिए हमारे पास है? यदि नहीं...तो अभी भी समय है भारत को महाशक्ति बनाना है, तो वह हर भारतीय की भागीदारी से ही सच होने वाला सपना है। देश के तमाम वंचित लोगों को छोड़कर हम अपने सपनों को सच नहीं कर सकते। क्या हम इस जिम्मेदारी को उठाने के लिए तैयार हैं। तलाशिए सवालों के जवाबः गणतंत्र दिवस इन तमाम सवालों के जवाब खोजने की एक बड़ी जिम्मेदारी भी लेकर आया है। बीते समय में आतंकवाद, नक्सलवाद, क्षेत्रीयता की तमाम गंभीर चुनौतियों के सामने हमारा तंत्र बहुत बेबस दिखा। बावजूद इसके लोकतंत्र में जनता की आस्था बची और बनी हुयी है। हमारी एकता को तोड़ने और मन को तोड़ने के तमाम प्रयासों के बावजूद आम हिंदुस्तानी अपनी समूची निष्ठा से इस देश को एक देखना चाहता है। यह संकल्प लेना होगा कि हम लोकतंत्र में लोगों के भरोसे को जगा पाएं। उनकी उम्मीदों पर अवसाद की परतें न चढ़ने दें। सपनों में रंग भरने की हिम्मत, ताकत और जोश से भरा हो- आम हिंदुस्तानी तो इसी सपने को सच होते हुए देखना चाहता है।

गणतंत्र के 76 वर्ष : संविधान की आत्मा और लोकतंत्र का यथार्थ

योगेश कुमार गोयल

प्रतिवर्ष की भांति एक बार फिर गणतंत्र दिवस हमारी राष्ट्रीय चेतना के द्वार पर उपस्थित है। यह दिन प्रत्येक राष्ट्रप्रेमी के लिए स्वाभाविक रूप से गौरव और आत्मसम्मान का प्रतीक है क्योंकि 26 जनवरी 1950 को भारत ने औपनिवेशिक दासता से मुक्त होकर अपने ही द्वारा निर्मित संविधान को आत्मसात किया था और स्वयं को प्रभुता संपन्न, सार्वभौमिक, प्रजातंत्रात्मक गणराज्य घोषित किया था। यह केवल एक संवैधानिक घटना नहीं थी बल्कि भारत की ऐतिहासिक चेतना, संघर्षशील आत्मा और स्वशासन की आकांक्षा का औपचारिक उद्घोष था। किन्तु इस ऐतिहासिक गौरव के समानांतर एक कड़वा यथार्थ भी हमारे सामने खड़ा है। समय के साथ गणतंत्र दिवस का महान उद्देश्य धीरे-धीरे औपचारिकताओं और रस्म अदायगी तक सीमित होता चला गया है। जिस भावना के साथ 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस के रूप में मनाने की परंपरा आरंभ हुई थी, उसका मूल आशय था कि प्रत्येक नागरिक इस दिन संविधान की गरिमा की रक्षा, राष्ट्रहित के प्रति निष्ठा और देशसेवा के प्रति अपने दायित्वों को न केवल दोहराए बल्कि उन्हें अपने आचरण में भी उतारे। विडंबना यह है कि आज हम इस गौरवपूर्ण अवसर पर संवैधानिक मूल्यों के प्रति संकल्प लेने के बजाय मात्र उन्हें स्मरण कर आत्मसंतोष कर लेते हैं। झंडारोहण, परेड और भाषणों के बाद जैसे हमारे कर्त्तव्य और उत्तरदायित्व समाप्त हो जाते हैं। गणतंत्र दिवस यदि केवल उत्सव बनकर रह जाए और संवैधानिक चेतना व्यवहार में न उतरे तो यह गणतंत्र की आत्मा के साथ अन्याय ही कहा जाएगा।

सही मायनों में गणतंत्र की मूल भावना को हमने आज तक समझा ही नहीं है। 'गणतंत्र' का अर्थ है शासन तंत्र में जनता की भागीदारी। हालांकि हम कह सकते हैं कि शासन तंत्र में जनता को पूर्ण भागीदारी मिली है किन्तु क्या यह वाकई पूर्ण सत्य है? देश का संविधान लागू होने के इन 76 वर्षों में भी क्या वास्तव में शासन तंत्र में जनता की भागीदारी सुनिश्चित हुई है? जनता को यह तो अधिकार है कि मतदान के जरिये वह अपना जनप्रतिनिधि चुने किन्तु एक बार संसद अथवा विधानसभा के लिए निर्वाचित होने के बाद अगले पांच वर्षों तक इन जनप्रतिनिधियों पर उसका क्या कोई अंकुश रह जाता है? वास्तविकता यही है कि इसी प्रावधान का लाभ उठाते

हुए राजनीतिक दल देश की जनता का चुनाव के समय महज एक वोटबैंक के रूप में इस्तेमाल करते आए हैं और अपना मतलब निकलने पर जनप्रतिनिधियों पर जनता के दुख-दर्द के बजाय अपने लिए सुख-सुविधाओं का अंबार जुटाने की चिंता सवार हो जाती है और वे इसी कवायद में जुट जाते हैं कि येन-केन-प्रकारेण अगले चुनाव के लिए कैसे करोड़ों रुपयों का इंतजाम किया जाए। अहम सवाल यह है कि जिस राष्ट्र में जनता की भागीदारी चुनाव में सिर्फ वोट डालने और उसके बाद चुने हुए जनप्रतिनिधियों के आचरण से शर्मसार होकर आंसू बहाने तक ही सीमित रह गई हो, वहां 'गणतंत्र' का भला क्या महत्व रह गया है? खासतौर से ऐसी स्थिति में, जब गरीबी व भुखमरी से त्रस्त करोड़ों लोग चंद रुपयों की खातिर या लाखों लोग महज दो-चार शराब की बोतलों के लिए अपने वोट बेच डालते हों या ईवीएम के दौर में भी कुछ मतदान केन्द्रों पर गुंडागर्दी के बल पर वोट डलवाये जाते हों?

हालांकि इसमें कोई संशय नहीं कि हमें विशुद्ध रूप में एक प्रजातांत्रिक संविधान प्राप्त हुआ है, जिसमें प्रत्येक वर्ग, प्रत्येक समुदाय, प्रत्येक सम्प्रदाय के लोगों के लिए बराबरी के अधिकार के साथ-साथ व्यक्तिगत एवं सामूहिक रूप से कुछ मूलभूत स्वतंत्रताओं की व्यवस्था भी की गई है, प्रत्येक नागरिक के लिए मूल अधिकारों का प्रावधान किया गया है किन्तु गणतांत्रिक भारत में पिछले 76 वर्षों के हालातों का विवेचन करें तो यही पाते हैं कि हमारे कर्णधार एवं नौकरशाह किस प्रकार संविधान के कुछ प्रावधानों के लचीलेपन का अनावश्यक लाभ उठाकर कदम-कदम पर लोकतांत्रिक मूल्यों को तार-तार करते रहे हैं। निसंदेह इससे लोकतंत्र की गरिमा प्रभावित होती रही है। संविधान निर्माताओं ने कभी इस बात की कल्पना नहीं की होगी कि जिन लोगों के कंधों पर संविधान को लागू कराने की जिम्मेदारी होगी, वही इसके प्रावधानों का मखौल उड़ाते नजर आएंगे। ऐसी दयनीय परिस्थितियों को देखकर निश्चित रूप से संविधान निर्माताओं की आत्मा खून के आंसू रोती होगी।

वक्त-बेवक्त संसद और विधानसभाओं के भीतर होती गुंडागर्दी सरीखी घटनाएं दुनियाभर में हमें शर्मसार करती रही हैं। जिस राष्ट्र में कानून बनाने वाले और देश चलाने वाले लोग ही असभ्य हरकतें करने लगें, वहां अपराधों पर अंकुश लगाने की किससे अपेक्षा की जाए? संसद-विधानसभा सरीखे लोकतंत्र के सर्वोच्च मंदिरों में अपराधियों व बाहुबलियों का निर्बाध प्रवेश क्या एक स्वस्थ लोकतंत्र का संकेत है? चुनाव जीतने के लिए आज हर राजनीतिक दल में ऐसे लोगों को पार्टी में शामिल करने, चुनाव जीतने के लिए उनका इस्तेमाल करने के अलावा उन्हें ही पार्टी के टिकट पर चुनाव लड़वाकर अपनी सीटें बढ़ाने के फेर में ऐसे दागी लोगों को लोकतंत्र के मंदिरों में प्रवेश दिलाने की होड़ सी लगी है। संसद और विधानसभाओं में धड़ाधड़ प्रवेश पाते अपराधियों का संख्या बल देखें तो यह 'प्रजातंत्र' या 'गणतंत्र' कम, 'अपराधतंत्र' अधिक लगने लगा है।

आखिर कबतक जटिल पूर्वाग्रहों से परेशान रहेगा भारत गणतंत्र?

कमलेश पांडे

भारत का गणतंत्र पूर्वाग्रहों जैसे जातिवाद, सांप्रदायिकता, भाषा जनित क्षेत्रवाद, वंशवाद, राजनीतिक पक्षपात और सामाजिक असमानताओं से जूझ रहा है, जो संवैधानिक मूल्यों को कमजोर कर रहे हैं। खासकर गणतंत्र दिवस जैसे अवसरों पर ये मुद्दे अकसर उभरकर सामने आ जाते हैं, जहां लोकतंत्र की चुनौतियां स्पष्ट दिखती हैं। इसलिए कतिपय प्रमुख पूर्वाग्रहों पर चर्चा लाजिमी है जो इसे समदर्शी और सर्वसम्मत लोकतंत्र बनने देने की राह के सबसे बड़े रोड़े तब भी थे, आज भी हैं और अगर यही हालात बने रहे तो भविष्य में भी रहेंगे। लिहाजा प्रबुद्धजनों से लेकर आम आदमी के दिलोदिमाग में यह यक्ष प्रश्न बना हुआ है कि आखिर कबतक जटिल पूर्वाग्रहों से परेशान रहेगा भारत गणतंत्र?

पिछली शताब्दी के अंतिम तीन भागों से लेकर मौजूदा शताब्दी के प्रथम भाग तक यानी पूरे सौ सालों में भारतीय शासन-प्रशासन की जो पूर्वाग्रही गतिविधियां दिखाई-सुनाई पड़ीं, उससे स्पष्ट प्रतीत होता है कि भारतीय गणतंत्र को दलित-आदिवासी-पिछड़े-अल्पसंख्यक-सवर्ण कोटि के अभिजात्य वर्गों के चंगुल से बाहर निकालना बहुत मुश्किल है। खासकर धर्मनिरपेक्षता ने तो एक पाकिस्तान दे देने के बाद कई और पाकिस्तान देने की पृष्ठभूमि तैयार कर दी है। शांतिपूर्ण सनातन भूमि पर ब्रेक के बाद होते रहने वाले सांप्रदायिक दंगे भी इसी बात की चुगली करते प्रतीत होते हैं। मीडिया और सोशल मीडिया की मुहिम हमारी धर्मनिरपेक्ष सोच को खुली चुनौती देती है, लेकिन प्रशासनिक लाचारी भी जगजाहिर है, जिसे बदले बिना धर्मनिरपेक्ष पूर्वाग्रहों से मुक्ति पाना बिल्कुल कठिन है। वहीं, भारतीय संविधान से जिन दलितों, पिछड़ों, सवर्णों और अल्पसंख्यकों ने स्थायी लाभ लिए, अब वहीं इसे वंशानुगत बनाये रखने की सियासी तिकड़म रच रहे हैं। यह संवैधानिक लाभ महादलितों, अत्यंत पिछड़े लोगों, गरीब सवर्णों और पसमांदा लोगों तक पहुंचे, इसकी राह में तरह तरह से रोड़े अटकाए जाते हैं। जिस तरह से जातिवादी आरक्षण का दुरूपयोग हो रहा है और एक बार इसका लाभ ले चुके लोग अपने बच्चों के लिए दुबारा लाभ लेने से भी नहीं हिचकिचाते हैं, जिससे जरूरतमंद लोगों तक आरक्षण का लाभ पहुंचना मुश्किल हो रहा है। आरक्षण के जातीय स्वरूप, क्रीमीलेयर मानदंडों में अव्यवहारिक तर्क और एक ही व्यक्ति को बार बार निर्वाचन क्षेत्रों में आरक्षण देने या फिर एक ही परिवार को नौकरियों में बार बार आरक्षण का लाभ देते रहने से यह पवित्र सोच भी अब कलुषित हो चुकी है। समाज के अन्य लोगों में इससे सत्ता प्रतिष्ठान के प्रति गहरा रोष देखा जाता है। सच कहूं तो जातिवाद और सांप्रदायिकता जैसे पूर्वाग्रह समदर्शिता की राह के रोड़े बनकर भारतीय गणतंत्र की जड़ों को खोखला कर रही हैं, जबकि सर्वसम्मति की जगह बहुमत वाला गणतंत्र अपने ही अल्पमत लोगों के नैसर्गिक हितों पर कुठाराघात करता प्रतीत होता है। आलम यह है कि प्रवासी मजदूरों और छात्रों तक को प्रताड़ित करने में साधन संपन्न वर्ग नहीं हिचकता और भीड़ का न्याय भी जहां तहां सम्पन्न लोगों के खिलाफ दिख जाता है। भारत में ब्रेक के बाद होने वाले जातीय या क्षेत्रीय/भाषाई दंगे इसी बात की तस्दीक करते हैं। दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति है कि मीडिया और राजनीतिक विमर्श में पूर्वाग्रही ध्रुवीकरण बढ़ रहा है, जो नीतिगत मुद्दों को नजरअंदाज कर भावनात्मक विभाजन पैदा करता है। जहां कांग्रेस व क्षेत्रीय दलों की तुष्टीकरण वाली धर्मनिरपेक्ष राजनीति खतरनाक है, तो आरएसएस-बीजेपी की सेक्युलरिज्म विरोधी विचारधारा से भी लोग सांसत में रहने को अभिशप्त हैं। इसलिए बेहतर होगा कि संविधान के प्रस्तावना से 'समाजवादी' और 'सेक्युलर' शब्द हटाने की पहल की जाए, क्योंकि जाति व धर्म की आड़ में इनका दुरुपयोग हो रहा है। ऐसे में राजनीतिक विवाद स्वाभाविक बात है। आपने देखा होगा कि गणतंत्र दिवस परेड में दिल्ली के टेबलो को लगातार चौथी बार खारिज करने पर आप ने बीजेपी पर पूर्वाग्रह का आरोप लगाया, जबकि गुजरात-उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों को प्राथमिकता मिली। वहीं रक्षा मंत्रालय चयन प्रक्रिया को निष्पक्ष बताता है, लेकिन विपक्ष इसे राजनीतिक प्रतिशोध मानता है। पंजाब जैसे राज्यों के टेबलो अस्वीकृति ने भी विवाद बढ़ाया। ऐसे में संवैधानिक चुनौतियां भी स्वाभाविक हैं। आपको पता होना चाहिए कि संविधान निर्माता डॉ भीम राव अंबेडकर ने स्पष्ट चेतावनी दी थी कि सामाजिक असमानताओं पर लोकतंत्र की 'टॉप ड्रेसिंग' विफल हो जाएगी, जो आज मतदाता सूची शुद्धिकरण और नागरिकता संशोधन अधिनियम से साकार हो रही है। जहां

कार्यपालिका का केंद्रीयकरण विधायिका-न्यायपालिका को कमजोर कर रहा है, वहीं ळ्ईईं जैसे कानून असहमति को दबाते हैं, लेकिन आपराधिक मिजाज पर अंकुश लगाते हैं।। कुलमिलाकर तमाम किंतु परन्तु के चलते देश में आर्थिक असमानता और बेरोजगारी जैसे मुद्दे गर्त में या हाशिए पर धकेल दिए गए हैं, जो सार्वजनिक चिंता और लोक दुश्चिंता का सबब बना हुआ है। देखा जाए तो भारत में राजनीतिक पूर्वाग्रहों के प्रमुख स्रोत पहचान-आधारित राजनीति, मीडिया प्रभाव, सामाजिक ध्रुवीकरण और संस्थागत दबाव आदि हैं। कमोबेश ये तमाम पूर्वाग्रह लोकतंत्र को कमजोर करते हुए विभाजनकारी विमर्श को बढ़ावा देते हैं, जिससे कहीं न कहीं समग्र राष्ट्रहित भ्रमित होता है। जहां पहचान-आधारित राजनीति यानी जाति और धर्म पर आधारित राजनीति पूर्वाग्रहों को गहरा करती है, वहीं दल विशेष इन पहचानों का उपयोग वोट बैंक के लिए करते हैं। वहीं, राम जन्मभूमि आंदोलन और नागरिकता संशोधन अधिनियम जैसे मुद्दों ने हिंदू-मुस्लिम ध्रुवीकरण बढ़ाया। कुछ लोग आरएसएस-बीजेपी जैसे संगठनों पर सांप्रदायिक पूर्वाग्रह के आरोप लगते रहे हैं, लेकिन वो कांग्रेसियों और क्षेत्रीय दलों के सांप्रदायिक तुष्टीकरण वाली सोच की निंदा करने में भी गुरेज करते हैं।

एक बात और, मीडिया और सोशल मीडिया यानी मीडिया घरानों पर सरकारी विज्ञापनों, कॉर्पोरेट हितों और राजनीतिक दबाव से पक्षपातपूर्ण कवरेज होता है। जबकि, सोशल मीडिया एल्गोरिदम फेक न्यूज और भावनात्मक फ्रेमिंग से ध्रुवीकरण तेज करते हैं। इस मामले में कांग्रेस और भाजपा एवं उनके समर्थक या विरोधी दल प्रचार दर प्रचार पर भारी खर्च कर पूर्वाग्रह फैलाते हैं। इससे संस्थागत और आर्थिक कारक तक प्रभावित होते हैं। खासकर राजनीतिक दलों का विज्ञापन और नियामक शक्ति मीडिया को प्रभावित करती है, जबकि आर्थिक मंदी सामाजिक विभाजनों को भड़काती है। इससे अभिप्रेरित कानून-व्यवस्था सम्बन्धी विफलताएं जैसे महाजंगलराज आदि पूर्वाग्रहपूर्ण राजनीति को जन्म देती हैं। इस प्रकार राजनीतिक पूर्वाग्रह मीडिया को विकृत करते हुए एकतरफा कवरेज, ध्रुवीकरण और जनमत निर्माण को प्रभावित करते हैं। ये पूर्वाग्रह सरकारी दबाव, कॉर्पोरेट हितों और संपादकीय झुकाव से उत्पन्न होकर लोकतंत्र की निष्पक्षता को कमजोर करते हैं। जहां तक चयनात्मक रिपोर्टिंग की बात है तो राजनीतिक पूर्वाग्रह मीडिया को विशिष्ट घटनाओं को बढ़ा-चढ़ाकर दिखाने या दबाने के लिए प्रेरित करते हैं, जैसे विपक्षी दलों की आलोचना पर अधिक जोर। वहीं, भारत में मुख्यधारा मीडिया अक्सर सरकार समर्थक या विरोधी रुख अपनाता है, जिससे जनता में ध्रुवीकृत धारणा बनती है। इनकी फंडिंग और नियंत्रण भी सवालों के दायरे में है, क्योंकि दल और सरकारें विज्ञापनों, कानूनी दबाव या स्वामित्व के माध्यम से मीडिया को प्रभावित करती हैं, जिससे पक्षपातपूर्ण सामग्री बढ़ती है। उदाहरणस्वरूप, कांग्रेस या भाजपा या क्षेत्रीय दलों के शासनकाल में कुछ चैनलों पर विपक्षी मुद्दों की उपेक्षा देखी गई। वहीं सोशल मीडिया प्रभाव भी इनपर स्पष्ट देखा जाता है। खासकर राजनीतिक एल्गोरिदम भावनात्मक सामग्री को प्राथमिकता देकर पूर्वाग्रह फैलाते हैं, फेक न्यूज और ट्रायल बाय मीडिया को बढ़ावा देते हुए। इससे मीडिया ट्रायल जैसे आरुषि तलवार मामले में न्याय प्रक्रिया प्रभावित होती है। कहना न होगा कि भारतीय गणतंत्र को जातिगत, धार्मिक, राजनीतिक और सामाजिक पूर्वाग्रहों से मुक्त करने के लिए बहुआयामी सुधार आवश्यक हैं। ये सुधार कानूनी, शैक्षिक, सामाजिक और संस्थागत स्तर पर होने चाहिए। इसके लिए निम्नलिखित प्रमुख कदम उठाए जा सकते हैं। पहला, कानूनी सुधार यानी सामाजिक विधान बनाकर पूर्वाग्रहों को गैरकानूनी घोषित किया जाए, जैसे छुआछूत को समाप्त करने वाला कानून जो दलितों के प्रति पूर्वाग्रह कम करने में सफल रहा। दूसरा, चुनावी सुधारों में धनबल और अपराधीकरण को रोकने के लिए पारदर्शिता सुनिश्चित करें, जैसे उम्मीदवारों का आपराधिक रिकॉर्ड अनिवार्य घोषित करना। तीसरा, शैक्षिक प्रयास यानी शिक्षा पाठ्यक्रम में पूर्वाग्रह-विरोधी सामग्री शामिल करें, जो उदारता बढ़ाए और जाति-धर्म आधारित रूढ़ियों को तोड़े। चतुर्थ, अनौपचारिक शिक्षा के माध्यम से परिवार और समुदाय स्तर पर जागरूकता फैलाएं, क्योंकि उच्च शिक्षा पूर्वाग्रह कम करती है। पांचवां, सामाजिक संपर्क बढ़ावा देने के तहत अंतर-जातीय विवाह और समूह संपर्क को प्रोत्साहित करें, जैसे आर्थिक सहायता देकर, ताकि गलतफहमियां दूर हों। छठा, अलगाव-विरोधी नीतियां अपनाएं, जैसे एकीकृत आवास योजनाएं, जो पूर्वाग्रह मजबूत करने वाली पृथक परियोजनाओं को बदलें। सातवां, संस्थागत मजबूती यानी चुनाव आयोग की स्वतंत्रता बढ़ाएं, जैसे मुख्य न्यायाधीश को नियुक्ति प्रक्रिया में शामिल कर पारदर्शिता लाएं। वहीं, न्यायपालिका को पूर्वाग्रह-मुक्त बनाने के लिए डिजिटलीकरण और विविधता बढ़ाएं। आठवां, प्रचार और जागरूकता यानी पूर्वाग्रह-विरोधी प्रचार रेडियो, टीवी और मीडिया से करें, जो अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावी साबित हुआ है। राजनीतिक दलों में आंतरिक लोकतंत्र लाकर पारदर्शिता सुनिश्चित करें।

मां कोई औरत नहीं भाव है

टीवी पर एक विज्ञापन आ रहा है। एक महिला घर के सभी सदस्यों को खाना परोस रही है। साथ में ससुरालवालों के ताने खा रही है। वजह ये है कि उसने अपने बेटे को पर्स से 10 रुपये निकालने को लेकर डांटा है। इसी बीच ससुर जोर से अपने पोते को डांटता है और खाना खाने के लिए बोलता है। साथ में घरवालों को बोलता है कि उसके पोते ने दस रुपये निकाले नहीं थे बल्कि चुराए थे और अगर वो उसकी मां की जगह होता तो शायद उसे थप्पड़ लगाता। लड़का चुपचाप खाना खाने लग जाता है। विज्ञापन के अंत में वहीं मां अपने बेटे को प्यार से कुछ सिखा रही होती है। विज्ञापन मां के एक सख्त रवैये को दिखाता है। इसी तरह एक विज्ञापन में मां अपनी बेटी को गिरने और चोट लगने पर उसकी तरफ भागती नहीं है बल्कि उसे खुद से उठने का हौसला देती है। विज्ञापन जगत के सबसे जाने माने नाम पियूष पांडे ने अपनी किताब पांडेमोनियम में बताया है कि किस तरह एक खाने का तेल बनाने वाली कंपनी के मालिक ने जब उनके सामने ये इच्छा रखी कि अब वो तेल में बनते हुए खाने के बजाए अपने उत्पाद के साथ कुछ भावुकता जोड़ना चाहते हैं, तो मां की दाल का विज्ञापन सामने आया। इस विज्ञापन की खास बात ये थी कि डिजिटल दुनिया में इसकी अवधि पांच मिनट रखी गई थी जो कमर्शियल विज्ञापन के लिहाज़ से बहुत ज्यादा थी। यहां तक कि जब उसे टेलीकास्ट किया गया तब भी ये विज्ञापन शुरुआत में एक मिनट का चलाया गया था वो भी प्राइम टाइम में जिसके लिए पियूष पांडे को खुद चैनल वालों से गुजारिश करनी पड़ी थी। लेकिन मां की दाल का असर इतना तगड़ा था कि ये विज्ञापन बहुत जल्दी ही वायरल हो गया था। विज्ञापन अक्सर इस तरह बनाया जाता है कि वो जनता की नब्ज को पकड़े जिससे वो लोगों के दिलों में घर करता है और याद में बस जाता है। अगर हम आज के परिदृश्य में देखें तो मां को दिखाने वाला नज़रिया बदला है। अब मां वो नहीं है जो चूल्हे में खट रही है, नाजुक सी है बल्कि मां सख्त है जो अपने बच्चे को लड़ना जूझना सिखा रही है। दरअसल, ये समझने वाली बात है कि आखिर मां है क्या? जब भी हम मां की बात करते हैं तो हमारे ज़ेहन में एक ऐसी औरत की छवि बनती है जो अपने बच्चों की देखरेख में कोई कोर कसर नहीं छोड़ती।

जाती। अपने बच्चों की बेहतरी के लिए कुछ भी कर गुज़रने को राज़ी रहती है। मां को हम उस खूंटी की तरह देखते हैं जिस पर बच्चा अपनी सारी परेशानियां टांग देता है। जिसके दाल चावल के डब्बों से बच्चे की हसरत, वक्त-बेवक्त की जरूरतें पूरी होती हैं। जो बच्चे की जिदंगी से मुश्किलों को वैसे ही बुहारती है जैसे वो झाड़ू से घर के कचरे को बुहारती है। वो उस चकले और बेलन की तरह होती है जो एक निराकार लोई को आकार दे देता है। इस सबसे ऊपर वो जो परवाह करना जानती है। ये परवाह करना ही दरअसल सबसे अहम होता है। हम जिस समाज में पले बढ़े हैं या हमारे समाज ने जो ढर्रा अपनाया है। उसके तहत आदमी का काम बाहर जाना और पैसे कमाना था। औरत घर में रहती थी, और सबकी परवाह करती थी। उसका काम सबकी ज़रूरत का ख्याल रखना होता था। इस सबसे ज्यादा अहम, कवि गोपाल व्यास के शब्दों में - अब तक लोगों की इस तथ्य पर जा पाई बिल्कुल दृष्टि नहीं नर सब कुछ है कर सकता, पर कर सकता है सृष्टि नहीं।

औरत को प्रकृति ने सृष्टि करने का तोहफा भी दिया। चूंकि वो रचना जो रची गई वो सबसे पहले और सबसे ज्यादा वक्त तक उसके साथ है इसलिए ममत्व का भाव उसमें घुमडा और हमने मां से ममता को जोड़ कर देखा। लेकिन क्या वाकई में ममत्व को किसी लिंग से जोड़ा जाना सही है। क्या ममत्व शब्द स्त्रीलिंग हो सकता है । दरअसल, मां, ममता, ममत्व जैसे शब्द उस व्यक्ति के लिए उपयोग करना ज्यादा बेहतर होगा जिसमें परवाह करने का गुण हो। जिसमें मानवता हो, इंसानियत हो। मां वही है जिसमें मानवता है।

क्या रेप पर मौत की सजा देने से अपराध कम होंगे?

हरिवंश राय बच्चन ने अपनी आत्मकथा नीड़ का निर्माण फिर में लिखा है, मातृ हृदय की परिभाषा ही शायद ये होगी, जो किसी के भी दुख-कष्ट में सहज भाव से विगलित हो सके। प्रेम निश्चय प्रतिदान चाहता है। प्रतिदान नहीं पाता तो दुखी होता है। करुणा केवल देना जानती है, वह किसी से कुछ प्रत्याशा करके द्रवीभूत नहीं होती। इस कारण में करूणा का प्रेम से भी बड़ा मानता हूं। प्रेम में स्वार्थ की गंध है। करूणा इसके ऊपर उठी हुई है। प्रेम निस्वार्थ हो सके तो में उसे करूणा का नाम देने में संकोच न करूंगा। प्रेम मन की सहज प्रवृत्ति हो सकती है। करूणा का जन्म तो किसी साधना अनुशासन, किसी की सही-झेली-भोग, पचाई पीड़ी से ही संभव है। इसलिए प्रेमी से में करुणाशील को अधिक विकसित व्यक्ति मानता हूं।दीवार फिल्म में जब अमिताभ बच्चन, शशि कपूर को अपनी सफलता गिना रहे होते हैं और उनसे सवाल पूछते हैं कि तुम्हारे पास क्या है। तो शशि कपूर धीरे से यही बोलते हैं कि मेरे पास मां है। अगर हम फिल्म के परिप्रेक्ष्य में देखें तो वो मां ही है जो अपने उस बेटे का साथ देती है जो मानवता के साथ रहता है। जो इंसानियत का पक्ष लेता है। मॉम फिल्म की मां अपनी बेटी के साथ गलत करने वाले उन अपराधियों को सबक सिखाती है जिन्होंने मानवता को तार-तार किया था।

जैसे ही हम औसत को लेकर मुंह बिचकाना छोड़ देंगे, उसी पल 'हिचकी' रुक जाएगीः जिसने आपको, हमें जन्म दिया वो हमारी जननी है मां तो वो है जिससे हमें परवाह करने का गुण मिलता है। किसी के घर में उसके पिता, किसी के भाई या बहन, मौसी, चाची, पड़ौसी या फिर दोस्त ऐसे हो सकते हैं जिसमें परवाह करने का ज्यादा माद्दा हो। जो बगैर किसी स्वार्थ के बस आपके परवाह करते हैं, या किसी की भी परवाह करते हैं। ममत्व एक भाव है जो किसी के अंदर भी हो सकता है। और जिसके अंदर ये भाव है वो ही सही मायने में मां है। जिसके पास आप सबसे ज्यादा सुरक्षित महसूस करते हों, जिस पर आपको सबसे ज्यादा भरोसा हो या फिर जब आप कोई परेशानी में हो तो आप जिसे सबसे पहले याद करते हों दरअसल आपके लिए वहीं मां है। तो इस बार मातृत्व दिवस पर जब आप अपनी मां को फोन मिलाए, उनके लिए कार्ड बनाए, उन्हें कहीं खाना खिलाएं या उनके दिन को खास बनाएं तो उस व्यक्ति को भी मातृत्व दिवस की बधाई ज़रूर दीजिए जिसके अंदर ममत्व है।

आता है प्यार जताना...

यह हकीकत है कि हर माता-पिता अपने बच्चों से प्यार करते हैं, मगर बहुत से माता-पिता यह नहीं जानते कि उसे जताना भी जरूरी है... बच्चों को बहुत देर के लिए घर में अकेला छोड़कर न जाएं। इससे उन्हें यह अहसास होता है कि उनके मम्मी-पापा को उनकी जरा भी चिंता नहीं है। यदि घर-परिवार में बड़े-बुजुर्ग हैं तो बच्चों की जिम्मेदारी उनके हवाले कर सकती हैं। बच्चों के सोने से पहले कुछ समय उनके साथ अवश्य बिताएं। उन्हें प्यार भरी थपकी देकर सुलाएं। अध्ययनों से यह बात साबित हो चुकी है कि मीठी थपकी बच्चों के दिमाग पर बढ़िया असर डालती है। समय-समय पर बच्चों के दोस्तों और उनके परिवार के बारे में जानकारी अवश्य करती रहें। स्कूल में होने वाली मीटिंग्स अवश्य अटेंड करें। इससे बच्चे की

प्रोग्रेस के बारे में पता चलता रहता है। यदि आपके पास समय है तो होमवर्क करने में उसकी मदद करें। इससे बच्चे को यह अहसास होता है कि आप उसकी कितनी केयर करती हैं। यदि आप दोनों कामकाजी हैं तो समय-समय पर फोन करके बच्चों का हालचाल ले सकती हैं। बच्चों को यह अहसास दिलाना बहुत जरूरी है कि आप उन्हें बहुत प्यार करते हैं। जब भी फुर्सत मिले बच्चों के साथ विभिन्न प्रकार के गेम्स खेलें। छुट्टी के दिन उन्हें नजदीकी पार्क में ले जाएं और वहां आउटडोर गेम्स का मजा उठाएं। जब भी मौका मिले बच्चों को किसी मनोरम स्थान पर अवश्य ले जाएं। इस दौरान साथ बिताए गए पल दिमाग पर अच्छा असर डालते हैं। आप चाहें तो किसी धार्मिक स्थान पर भी जा सकती हैं या किसी पिकनिक स्पॉट पर। समय-समय पर बच्चों के साथ बैठकर इत्मीनान से यह पता करें कि उन्हें किसी प्रकार की कोई परेशानी तो नहीं है। ऐसा करने से आपका रिश्ता अधिक मजबूत होगा। काम से लौटने के बाद या जब भी फुर्सत मिले बच्चों से बातचीत करें। इससे आपको यह जानने में आसानी रहेगी कि उनके मन में क्या चल रहा है।

घर के कामों में निकल जाता है मां का पूरा दिन? इन 4 चीजों से बनाएं उनके जिंदगी को आसान

घर का काम कैसे आसान करें: मां बनने के बाद हर स्त्री का ज्यादातर समय घर और बच्चों को संभालने में जाता है। ऐसे में वह खुद के लिए टाइम ही नहीं बचा पाती है। यहां हम आपको ऐसे उपकरणों के बारे में बता रहे हैं, जिन्हें आप अपनी मां को इस मदर्स डे पर गिफ्ट करके खुशी और आराम दोनों दे सकते हैं।

हर साल मई महीने के दूसरे रविवार को दुनियाभर में मदर्स डे माना जाता है। इस साल यह दिन 14 मई यानी की कल मनाया जाने वाला है। जिस तरह से हमारी मां अपने जीवन का हर दिन, हर एक मिनट हमारे लिए न्यौछावर कर देती है। ऐसे में उनके बलिदान और प्यार के लिए सिर्फ एक दिन समर्पित करना काफी नहीं है। लेकिन फिर भी मां को स्पेशल महसूस कराने का यह एक अच्छा तरीका है।

एक औरत जब मां बन जाती है, तो उस पर बच्चों और घर को संभालने की जिम्मेदारी एक साथ आ जाती है। एक समय के बाद उन्हें इन चीजों को अपने तरीके से करने की इतनी ज्यादा आदत हो जाती है, कि वह तबीयत ठीक न होने पर भी काम में जुटी रहती हैं। वैसे तो आज के समय में ज्यादातर घरों में काम करने वाली बाई लगी होती है। लेकिन कुछ महिलाओं को उनका काम पसंद नहीं आता है, और वह घर का सारा काम खुद ही करना पसंद करती हैं। ऐसे में यदि आपकी मां घर में काम करने

वाली बाई रखने से कतराती है, और घर के कामों में ही अपना सारा समय गवा देती हैं, तो आप उन्हें इस मदर्स डे पर यहां बताए गए ये अप्लायंस गिफ्ट कर सकते हैं। डिशवॉशर रसोई में बहुत मददगार होते हैं, इसमें आप बिना किसी मेहनत के घर के गंदे बर्तनों को साफ कर सकते हैं। डबल डिशवॉशर बर्तनों को साफ करने की इस सुविधा को एक अलग लेवल पर ले जाता है। इसमें आप एक साथ दो अलग-अलग खानों में नाजुक और नॉर्मल बर्तनों के धो सकते हैं। इससे काफी समय बच जाता है। सिंगल वाशिंग मशीन में कपड़ों को धोने के लिए अलग-अलग छांट कर रखना पड़ता है। इसमें बहुत ज्यादा समय लग जाता है। ऐसे में समय बचाने कि लिए ट्विन वाशिंग मशीन बहुत कारगर साबित होते हैं। इसमें आप एक साथ अलग-अलग टाइप के कपड़ों को धो सकते हैं। इसकी सबसे अच्छी बात है, कि यह ज्यादा स्पेस भी नहीं लेता है। फर्श की सफाई में आमतौर पर दो अलग-अलग काम शामिल होते हैं- झाड़ू और पोंछा। इसमें समय और मेहनत बहुत ज्यादा लगता है। ऐसे में वैक्यूम मोब से इस काम को आप आसानी से एक बार में कर सकते हैं। जिससे समय की बचत भी आराम से की जा सकती है। माइक्रोवेव में खाना बनाना गैस स्टोव की तुलना में बहुत आसान होता है। साथ ही बहुत आराम के साथ कम समय में इसमें कई व्यंजनों को बनाया जा सकता है। ऐसे में यह आज के समय किचन के सबसे जरूरी उपकरणों में शामिल हो गया है। हालांकि इसके इस्तेमाल करने के लिए जरूरी बातों को पता होना आवश्यक है, इससे किसी भी तरह के गड़बड़ी से बचा जा सकता है।

नवजात बच्चों को जरूर कराएं ये एक्सरसाइज शरीर के साथ दिमाग भी रहेगा स्वस्थ

शरीर को सेहतमंद बनाए रखने के लिए एक्सरसाइज बहुत जरूरी होती है। इसीलिए हर उम्र के लोगों को किसी ना किसी तरह से फिजिकली एक्टिविटी करते रहने की सलाह दी जाती है। वहीं कुछ एक एक्सरसाइज नवजात शिशु को भी करवाई जाती हैं।

बच्चे के विकास में कुछ प्रभावी तकनीकें सहायता और फ्लेक्सिबिलिटी में सुधार लाने का काम कर सकती हैं। नवजात बच्चे को एक्सरसाइज करवाने से बच्चे की हड्डियां, जोड़ और मांसपेशियां मजबूत होती हैं। इसके साथ ही बच्चे के मोटर स्किल्स को भी मदद मिलती है।

नेशनल हेल्थ सर्विस के मुताबिक बच्चे को पूरा दिन एक्टिव रखने का प्रयास करना चाहिए। आप बच्चे को हर रोज कई तरीकों से एक्टिव रख सकते हैं। उदाहरण के तौर पर घुटनों के बल चलना। यदि बच्चे ने अपने उम्र के हिसाब से अभी तक चलना शुरू नहीं किया है तो आप अपने बच्चे को पुशिंग, उसके सिर का हिलाने, पुलिंग, बॉडी और हाथ-पैरों को स्ट्रेच आदि कुछ एक्टिविटीज करवानी चाहिए। जब बच्चा जागा हुआ हो तो उसे दिनभर में करीब आधे घंटे के लिए टमी टाइम जरूर करवाएं। जब बेबी खुद से मूव करने लगे तो जितना हो सके उतना ज्यादा से ज्यादा खेलने दें और

एक्टिव रहने दें। नवजात बच्चे से लेकर 1 साल तक के बच्चे को सुपरवाईज्ड फ्लोर प्ले जरूर करवाना चाहिए। बच्चे को एक घंटे से अधिक देर तक इनएक्टिव नहीं रखना चाहिए। बता दें कि 1 से 5 साल तक के बच्चों को पूरे दिन में कम से कम 3 घंटे के लिए फिजिकल रूप से एक्टिव रहना चाहिए। वहीं 5 से 17 साल के बच्चों कि पूरे दिन में कम से कम 1 घंटे मॉडरेट से कठिन फिजिकल एक्टिविटीज करनी चाहिए। वहीं सप्ताह में कम से कम 3 दिन ऐसी एक्टिविटीज में हिस्सा जरूर लेना चाहिए, जिससे कि उनकी मांसपेशियां और हड्डियां मजबूत हों। कई पैरेंट्स अपने बच्चों को कोलिक पेन, कब्ज या गैस आदि से राहत दिलाने के लिए बच्चे के पैरों को साइकिल की तरह चलाते हैं। ये एक्सरसाइज घुटनों, कूल्हों, बच्चे के जोड़ों और पेट की मांसपेशियों के लिए काफी अच्छी रहती है।

इससे बच्चों की टांगों में लचीलापन आता है। इसके लिए सबसे पहले आप बच्चे को पीठ के लिए लिटा दें। फिर बच्चे की टांगों को एक-एक कर के अपने हाथों से ऊपर-नीचे करें। यह एक्सरसाइज बच्चों को भी बहुत पसंद होती है। यदि आपके बेबी ने घुटने के बल चलना शुरू कर दिया है तो क्लाइंब माउंटेन एक्सरसाइज उसके लिए बेहतरीन रहेगी। बेबी को यह एक्सरसाइज कराने के लिए बेड पर कुछ तकिए रख दें। फिर बेबी को उन तकिए के ऊपर से चढ़ कर आने के लिए कहें। यह एक्सरसाइज बच्चों के हाथों-पैरों के जोड़ों को मजबूत बनाने में मदद करती है।

किचन में है स्किन मैजिक

सौंदर्य विशेषज्ञों का कहना है कि खूबसूरत दिखने के लिए जरूरी नहीं है कि आप बाजार में मिलने वाले कीमती उत्पादों के सहारे रहें। किचन में भी सौंदर्य बढ़ाने वाले ढेर सारे उत्पाद मौजूद रहते हैं। इनके इस्तेमाल से सौंदर्य को निखार सकती हैं **आलू**-अगर आपकी आंखों के नीचे काले घेरे हैं तो कच्चे आलू के टुकड़ों को प्रभावित स्थान पर रगड़ें। आप चाहें तो आलू को कुचलकर इसका गूदा भी प्रभावित जगह पर लगा सकती हैं। आलू के प्रयोग से काले घेरों से छुटकारा मिलेगा। **पालक**-इसमें मौजूद पोषक तत्व जैसे आयरन और विटामिन ए त्वचा के लिए बहुत फायदेमंद है। इसका जूस निकालकर या इसे उबालकर त्वचा पर मलने से सौंदर्य में निखार आता है। **बंदगोभी**-अगर आपके चेहरे पर असमय झुर्रियां पड़ गई हैं तो बंदगोभी के पत्तों का रस निकालकर इसमें एक टीस्पून शहद मिलाकर चेहरे पर लगाने से लाभ मिलेगा। **गाजर**-गाजर का रस निकालकर त्वचा पर लगाकर कुछ समय के लिए छोड़ दें। तत्पश्चात साफ पानी से धो लें। **टमाटर**-टमाटर का सेवन करने से एक ओर जहां स्वास्थ्य सही रहता है। वहीं इसका उपयोग सौंदर्य निखारने में भी किया जा सकता है। टमाटर का रस निकालकर नींबू के रस की कुछ बूंदें मिलाकर चेहरे पर लगाने से स्किन मुलायम होती है और उसमें निखार आता है। **संतरा**-संतरे का रस निकालकर इसे रुई के फाहे से या साफ हाथों से चेहरे पर लगाने से त्वचा मुलायम होती है। यही नहीं संतरे के छिलकों को गुलाबजल एवं बेसन में मिलाकर लगाने से मुहांसों से राहत मिलती है। साथ ही त्वचा में निखार भी आता है।

सुनहरे दरवाजे से निकले पुतिन, पूरी कैबिनेट लेकर मोदी से मिलने आए शख्स से मिलाया हाथ

मॉस्को में ग्रैंड क्रेमलिन पैलेस का यह मशहूर सुनहरा दरवाजा खुला और रूस के राष्ट्रपति व्लादमीर पुतिन इस दरवाजे से एक विशाल हॉल में दाखिल हुए। इस हॉल में पुतिन उस शख्स से मिले जिसने कुछ दिन पहले ही पीएम मोदी से मुलाकात की थी। जानकारी के लिए बता दें कि ग्रैंड क्रेमलिन पैलेस पुतिन का ऑफिशियल रेजिडेंस है और इसी पैलेस में लगे इन सुनहरे दरवाजों से एक बार पुतिन पीएम मोदी के साथ भी निकले थे। बहरहाल 29 जनवरी को पुतिन ग्रैंड क्रमन पैलेस के इसी हॉल में संयुक्त

अरब अमीरात के राष्ट्रपति मोहम्मद बिन जायद अल नाहियान से मिले। दिलचस्प बात यह है कि 10 दिन पहले ही अल नाहियान अपनी पूरी कैबिनेट के साथ पीएम मोदी से भी मिलने पहुंचे थे। ऐसे में सवाल उठ रहा है कि क्या संयुक्त अरब अमीरात किसी बड़े संकट में है? क्यों संयुक्त अरब अमीरात के राष्ट्रपति पहले पीएम मोदी से मिले और उसके बाद राष्ट्रपति पुतिन से। ऐसा क्या संकट है कि अपने देश को बचाने के लिए राष्ट्रपति नाहियान लगातार विदेशी दौरे कर रहे हैं। संयुक्त अरब अमीरात क्या चाहता है और भारत रूस क्या बड़ा धमाका कर रहे हैं। दरअसल संयुक्त अरब अमीरात इन दिनों सऊदी अरब के साथ गंभीर संकट में फंसा हुआ है। यह दोनों देश यमन और सूडान में अलग-अलग गुटों का समर्थन कर रहे हैं। जिसकी वजह से इन दोनों देशों के बीच कूटनीतिक खींचतान शुरू हो गई है। सऊदी अरब ने तो यमन में संयुक्त अरब अमीरात के समर्थन वाले गुट पर एयर स्ट्राइक तक कर दी। इन दोनों देशों के बीच बढ़ रहे विवाद का एक यह कारण भी है कि संयुक्त अरब अमीरात ने वित्तीय और व्यापारिक केंद्र के रूप में सऊदी अरब को काफी पीछे छोड़ दिया है। ऐसे में दोनों की खींचतान और ज्यादा बढ़ गई है। लेकिन इसी खींचतान को पाकिस्तान और गहरा कर रहा है। पाकिस्तान ने इस विवाद को बढ़ाने के लिए सबसे पहले तो सिर्फ सऊदी अरब के साथ एक डिफेंस डील कर ली।

बाल विवाह के पक्ष में होना यानी बच्चों के खिलाफ होना

'जब दो वयस्क अपनी मर्जी से विवाह करना चाहते हैं, अपना रास्ता चुनना चाहते हैं, अपना लक्ष्य तय करते हैं, तो उन्हें यह करने का अधिकार है। यदि कोई वयस्क प्रेम और विवाह के बारे में कोई निर्णय लेता है तो सम्मान के नाम पर उसके साथ की जाने वाली किसी भी तरह की यंत्रणा, यातना या दुर्भावनापूर्ण व्यवहार गैर-कानूनी है और इसे स्वीकार्यता नहीं दी जा सकती है।' यह इंतिखाब और पसंद के चुनाव के अधिकार को हानि पंहुचाने जैसा है। जब वर्ग सम्मान के नाम पर पसंद के विकल्प को चुनने के अधिकार को कुचला जाता है और व्यक्ति के भौतिक स्वरुप के साथ अपमानजनक व्यवहार होता है, तब समाज की दिमाग और हड्डियों पर इसका कंपकपा देने वाला प्रभाव पड़ता है। सवाल यह है कि क्या किसी जूनून या आवेश में वरिष्ठ परिजनों को ऐसे युवाओं के जीवन को खत्म कर देने का आदेश देने पर स्वीकृति है, जिन्होंने अपने बड़े बुजुर्गों र्या पारंपरिक तरीकों के विरुद्ध जाकर विवाह किया है। इसका जवाब है 'नहीं'! हमारा संविधान व्यक्ति को 'चयन और पसंद' का अधिकार देता है। स्वतंत्रता के स्वतंत्र निर्वहन का मार्ग बनाने के लिए सामंतवादी नज़रिए और व्यवहार को अब विस्मृत कर दिया जाना चाहिए। सर्वोच्च अदालत ने इस मामले में साफ उल्लेख किया है कि वयस्क व्यक्ति को अपनी पसंद और हित का निर्णय लेने का अधिकार है, परन्तु समाज का वर्गवादी और नियंत्रणवादी चरित्र उस अवस्था तक व्यक्ति को पंहुचने देना ही नहीं चाहता है। समाज का एक तबका चाहता है कि विवाह का निर्णय और इस व्यवहार व्यक्ति के वयस्क होने से पहले ही कर दिया जाए ताकि 'परिवार, पुरुष और सत्ता संचालक' हर लड़के और लड़की के जीवन के बारे में निर्णय ले सकें। लेकिन समाज अब भी बच्चों और युवाओं को स्वतंत्रता के साथ परिपक्व होने देखने नहीं चाहता है, क्योंकि इससे वे सवाल करने और सही-गलत परम्पराओं का विश्लेषण करने में सक्षम हो जाते हैं।पुरुष अपने पुरुषत्व बल की सत्ता में आ रहे उतार-चढ़ावों को देख बहुत घबराया हुआ है। इस समाज को बेहतर, सामान और न्यायमूलक बनाने के लिए हो रही कोशिशों से उसके अपराधों और निरंकुशता पर नियंत्रण लग रहा है, तो वह बहुत बेचैन है। उसकी पूंजीवादी, उपनिवेशवादी और मर्दवादी सत्ता को चुनौती मिल रही है। ऐसे में उसे कई बार नैतिक और अनैतिक, मानवीय और अमानवीय, कानूनों और गैरकानूनी पक्ष के बीच के अंतर का भान हो नहीं रह जाता है। मध्यप्रदेश की विधानसभा के सदस्य यानी चुने हुए विधायक गोपाल परमार (आगर मालवा) ने अपनी वाणी से इन बिन्दुओं को सच साबित किया है। 5 मई 2018 को आजीविका और कौशल विकास दिवस पर अपने विधानसभा क्षेत्र में आयोजित एक कार्यक्रम में उन्होंने भी अपने 'मन की बात' कह डाली। बहरहाल, इस बात का आयोजन

की कथावस्तु से कोई सरोकार नहीं था, पर बैचेनी फुदक कर बाहर आ गयी। गोपाल परमार ने कहा कि 'गांव में पहले संबंध बन जाते थे, जिससे उनकी मानसिकता बन जाती थी कि मेरा संबंध हो चुका है या शादी हो चुकी है, इसलिए वे गलत कदम उठाने से बच जाते थे। पहले देखते थे कि समाज में शादी होती थी हमारे बड़े बूढ़े ही संबंध तय कर लेते थे। भले ही बचपन में कर लेते थे, लेकिन वह संबंध ज्यादा टिके रहते थे, ज्यादा मजबूत थे। यह जबसे 18 साल की बीमारी सरकार ने चालू की है, इसमें बहुत सारी लड़कियां घर से भागने लग गई हैं। लव जेहाद का बुखार चालू हो गया है। हमें घर में ध्यान ही नहीं है कि हमारी छोरी क्या कर रही है, हमें कह कर जा रही है कि पढ़ने के लिए कोचिंग क्लास जा रही हूं, और वह किसी भी लड़के के साथ भाग गयी तो बहुत सारे शरारती लोग आते हैं। शातिर लोग आते हैं हमारी माता बहन लिहाज़ पालने वाली होती हैं, इनके साथ कोई उपकार कर देता है तो उनका बहुत सारा अहसान मानती हैं। अगर वह किसी लड़के के साथ भाग गयी तो आपकी इज्जत के साथ खिलवाड़ हो जाएगा, इसलिए आपकी जिम्मेदारी यह पता लगाने की बनती है कि लड़की गई तो कहाँ गयी है? मैंने कानूनी उम्र में पंहुचने से पहले ही अपने तीनों बच्चों का विवाह कर दिया था, अब वे खुश हैं। वे मानते हैं कि जैसे पशुओं को पता होता है कि शाम को लौटकर कहां जाना है, वैसे ही शादी के बाद बच्चों को पता होता है कि कहाँ लौटना है! मुसलमानों में कुछ गुंडा तत्व होते हैं, जो नाम और पहचान छिपा कर लड़कियों को प्रभावित कर लेते हैं। यदि कम उम्र में शादी कर दी जाए, तो लव जेहाद से उन्हें बचाया जा सकता है।क ये किसी एक व्यक्ति के विचार नहीं बल्कि एक विभाजनकारी विचारधारा की प्रतीक वाक्य हैं। इस विचारधारा में स्त्रियों, बच्चों, क़ानून, समाज में बराबरी, सहिष्णुता और सुरक्षा के प्रति कोई सम्मान नहीं है। याद रखियेगा कि बाल विवाह केवल लड़कियों के जीवन को संकुचित और दुरूह नहीं बनता है; यह लड़कों के जीवन को भी उतना ही प्रताड़ित भी करता है।भारत का संविधान समता, शोषण के मुक्ति, न्याय और जीवन जीने का मौलिक अधिकार हर व्यक्ति को देता है; बच्चों के संदर्भ में ये अधिकार ज्यादा व्यापक और गहरे होते हैं। बच्चों के सन्दर्भ में जरूरत होती है कि उन्हें पनपने, सोचने, परिपक्व होने और समग्रता में विकसित होने का अवसर दिया जाए। बाल विवाह इन सभी अवसरों की निर्मम हत्या कर देता है। बाल विवाह शिशु मृत्यु, मातृत्व मृत्यु, यौन हिंसा-उत्पीडन और गरीबी का कारण बनता है। जब कोई बाल विवाह का संस्कृति और परम्परा के नाम पर समर्थन करता है, तब एक बार फिर यह अहसास होता है कि समाज अब भी बच्चों के बेहतर हितक में व्यवहार नहीं करता है।सभ्य समाज में बाल विवाह को मानव विकास के लिए एक नकारात्मक सूचक और बड़ी चुनौती के रूप में स्वीकार किया गया है। इससे बच्चे पूरी शिक्षा हासिल करने से वंचित रह जाते हैं। उन्हें कौशल विकास के अवसर नहीं मिल पाते हैं। विवाह से उपजी जिम्मेदारियां उन्हें पनपने और अपने जीवन के बारे में सपने देखने से अधिकार से वंचित कर देती हैं। इन अवस्थाओं में बच्चों, ख़ास तौर पर लड़कियों का यौन शोषण भी होता है। कम उम्र के विवाह का परिणाम होता है कम उम्र में गर्भावस्था और कम उम्र में गर्भावस्था का परिणाम होता है लड़की के मरने की ज्यादा आशंकाएं, बच्चे के कुपोषित, विकलांग होने और शिशु मृत्यु की बहुत ज्यादा आशंकाएं। भारत में राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (चार) के निष्कर्ष बताते हैं कि बिहार में 39।1 प्रतिशत विवाह कानूनी उम्र से पहले ही हो जाते हैं। आँध्रप्रदेश में 32।6 प्रतिशत, गुजरात में 24।9 प्रतिशत, मध्यप्रदेश में 30 प्रतिशत, राजस्थान में 35।4 प्रतिशत, पश्चिम बंगाल में 40।7 प्रतिशत और समग्र भारत में 26।8 प्रतिशत विवाह बाल विवाह होते हैं। भारत में स्वतंत्रता के 59 साल बाद बाल विवाह को रोकने वाला क़ानून बन पाया यानी विकास में यह सबसे निचले क्रम का विषय रहा।

डीएम की अध्यक्षता में डिजिटल क्रॉप सर्वे व फार्मर रजिस्ट्री की समीक्षा बैठक सम्पन्न

फार्मर रजिस्ट्री के कार्य में शिथिलता बरतने पर कृषि विभाग के दो संविदा कर्मचारियों की सेवा समाप्त करने के निर्देश,न्यूनतम प्रगति वाले कर्मचारियों की प्रतिदिन की जाए समीक्षा - डीएम

आधुनिक समाचार

रायबरेली : जिलाधिकारी हर्षिता माथुर की अध्यक्षता में डिजिटल क्रॉप सर्वे एवं फार्मर रजिस्ट्री के सम्बन्ध में कलेक्ट्रेट सभागार में समीक्षा बैठक संपन्न हुई, जिसमें पंजीकरण की प्रगति, डेटा की शुद्धता व सर्वे कार्यो की समीक्षा की गई।

जिलाधिकारी ने क्रॉप सर्वे की समीक्षा करते हुए निर्देश दिये कि डिजिटल क्रॉप सर्वे का कार्य समयबद्ध व त्रुटिरहित सुनिश्चित कराया जाए। फार्मर रजिस्ट्री की समीक्षा में कार्य की प्रगति संतोषजनक न होने पर नाराजगी व्यक्त की गई। फार्मर रजिस्ट्री के कार्य में शिथिलता बरतने पर कृषि विभाग के दो संविदा कार्मिक क्रमशः आजाद पाण्डेय बी0टी0एम0

छतोह, व प्रवीण पाण्डेय ए0टी0एम0 ऊँचाहार की सेवाएं तत्काल समाप्त किये जाने के निर्देश दिये, इसके साथ ही उप निदेशक कृषि को प्रतिदिन कृषि व पंचायत के न्यूनतम प्रगति वाले 10 कर्मचारियों और उनसे सम्बन्धित ए0डी0ओ0 कृषि व ए0डी0ओ0 पंचायत की प्रतिदिन सायं 07:00 बजे बचत भवन कलेक्ट्रेट सभागार में समीक्षा किये जाने के निर्देश दिये। बैठक में मुख्य विकास अधिकारी अंजू लता, अपर जिलाधिकारी (वि0/रा0) अमृता सिंह, उप निदेशक कृषि विनोद कुमार, उपायुक्त मनरेगा प्रमोद कुमार, जिला पंचायत राज अधिकारी सौम्यशील सिंह सहित सम्बन्धित कार्मिक उपस्थित रहें।

खानम आर्ट गैलरी में गणतंत्र दिवस पर बच्चों की प्रतिभा का रंगारंग उत्सव

प्रयागराज।गणतंत्र दिवस के पावन अवसर पर खानम आर्ट गैलरी, प्रयागराज की ओर से बच्चों की रचनात्मकता और प्रतिभा को मंच देने के उद्देश्य से विविध कार्यक्रमों का भव्य आयोजन किया गया। गैलरी परिसर में आयोजित इन कार्यक्रमों में आर्ट क्विज, फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता और आर्ट प्रतियोगिता शामिल रहीं, जिनमें बच्चों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस अवसर पर गैलरी को राष्ट्रीय पर्व की भावना के अनुरूप अत्यंत सुंदर ढंग से सजाया गया था। विशेष रूप से तैयार किए गए स्टेज पर राष्ट्रीय त्योहारों और देशभक्ति को दर्शाती मनमोहक पेंटिंग्स लगाई गई थीं, जो दर्शकों के आकर्षण का केंद्र रहीं। आर्ट क्विज प्रतियोगिता में बच्चों को मात्र 15 सेकंड के भीतर दिए गए विषय पर चित्र बनाने का अवसर दिया गया, जिसमें बच्चों ने अपनी त्वरित सोच, कल्पनाशीलता और कला कौशल का शानदार प्रदर्शन किया। वहीं फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता में बच्चों ने 'परिवार' विषय पर आधारित वेशभूषा और प्रस्तुति दी।

यूजीसी एक्ट के विरोध में सवर्ण आर्मी का प्रदर्शन राष्ट्रपति के नाम अपर जिलाधिकारी प्रतिनिधि को सौंपा ज्ञापन

सोनभद्र। यूजीसी एक्ट के विरोध में सवर्ण आर्मी ने मंगलवार को कलेक्ट्रेट परिसर में प्रदर्शन किया। जिलाध्यक्ष अशोक दुबे के नेतृत्व में तथा जिला संरक्षक शिवपूजन त्रिपाठी की अध्यक्षता में कार्यकर्ता नारेबाजी करते हुए कलेक्ट्रेट पहुंचे। प्रदर्शन के उपरांत संगठन के प्रतिनिधिमंडल ने महामहिम राष्ट्रपति को संबोधित ज्ञापन अपर जिलाधिकारी को सौंपा।

जिलाध्यक्ष अशोक दुबे ने कहा कि वर्तमान यूजीसी एक्ट शिक्षा व्यवस्था में असमानता और भेदभाव को बढ़ावा दे रहा है। यह अधिनियम समाज के एक बड़े वर्ग के हितों के प्रतिकूल है। सवर्ण आर्मी इस कानून में संशोधन नहीं, बल्कि इसे पूर्णतः समाप्त करने की मांग करती है। उन्होंने कहा कि छात्रों के उज्ज्वल भविष्य के लिए एक नई, पारदर्शी और न्यायसंगत शिक्षा नीति लागू की जानी चाहिए।

जिला संरक्षक शिवपूजन त्रिपाठी ने कहा कि संगठन शिक्षा और समाज से जुड़े हर मुद्दे पर संघर्ष के लिए सदैव तैयार है। जब तक जनहित में ठोस निर्णय नहीं लिया जाता, तब तक आंदोलन जारी रहेगा। प्रदर्शन के बाद आयोजित बैठक में संगठन के विस्तार और मजबूती पर भी विचार-विमर्श किया गया।

समाजसेवी कृष्ण कुमार मिश्रा ने कहा कि शिक्षा किसी भी समाज की रीढ़ होती है और यदि कानून ही भेदभाव को बढ़ावा देने लगें तो उसका विरोध जरूरी हो जाता है। उन्होंने कहा कि यूजीसी एक्ट के वर्तमान स्वरूप से छात्रों में असंतोष बढ़ रहा है, जिसे सरकार को गंभीरता से लेना चाहिए। जिला संयोजक कमलाकांत तिवारी ने कहा कि यूजीसी एक्ट के कारण शिक्षा व्यवस्था जटिल होती जा रही है, जिसका सीधा असर छात्रों के भविष्य पर पड़ रहा है। सवर्ण आर्मी लोकतांत्रिक तरीके से अपनी मांगों को रख रही है और जब तक इस कानून पर पुनर्विचार नहीं होता, तब तक आंदोलन जारी रहेगा। कार्यक्रम में आरती पाण्डेय, अविनाश शुक्ला, कपिल कांत पाठक, शिवदत्त तिवारी, अभय पांडे, बृज किशोर पांडे, बमबम दूबे, हेमंत तिवारी व ललित पाठक समेत सैकड़ों मौजूद थे।

व्यापारियों का बीमा कराया जाय - बसन्त सिंह बग्गा

रायबरेली।उत्तर प्रदेश उद्योग व्यापार प्रतिनिधि मण्डल, रायबरेली द्वारा प्रदेश उपाध्यक्ष बसन्त सिंह बग्गा के नेतृत्व में व्यापारियों के एक प्रतिनिधि मण्डल ने उत्तर प्रदेश के मुख्यमन्त्री योगी आदित्यनाथ को एक ज्ञापन जिलाधिकारी रायबरेली की ओर से दिया। जिलाधिकारी की ओर से सिटी मजिस्ट्रेट राम

औतार ने ज्ञापन प्राप्त कर सम्बन्धित को पहुँचाने का आश्वासन दिया। ज्ञापन के माध्यम से व्यापारियों ने मांग किया कि जी.एस.टी. पंजीकृत सभी व्यापारियों का स्वास्थ्य बीमा सरकारी कर्मचारियों की भाँति कराया जाये। प्रदेश संगठन मन्त्री मुकेश रस्तोगी ने मांग किया कि व्यापारियों की दुकान जलने का बीमा कराया जाय, यह एक अनिवार्य आवश्यकता है, क्योंकि व्यापारी दुकान का बीमा (अग्नि बीमा) आकस्मिक आगजनी, प्राकृतिक आपदाओं, दंगो या चोरी के कारण वित्तीय रूप से तबाह हो जाता है, व्यापारी को इससे होने वाले नुकसान के बाद फिर से व्यापार शुरू करने में मानसिक व आर्थिक सहायता प्राप्त होगी, व्यापारियों की इस गम्भीर समस्या का संज्ञान लिया जाना आवश्यक है। इस अवसर पर मुख्य रूप से आशु श्रीवास्तव, बबलू जोशी, सत्यांशु दुबे, अनुज त्रिवेदी, दिनेश पाल, सुशील मौर्य, पवन अग्रहरि आदि लोग उपस्थित रहे।

उत्तर प्रदेश पंचायती राज ग्रामीण सफाई कर्मचारी संघ का द्विवार्षिक अधिवेशन संपन्न

सोनभद्र।उत्तर प्रदेश पंचायती राज ग्रामीण सफाई कर्मचारी संघ का सोनभद्र जनपद का द्विवार्षिक अधिवेशन मंगलवार को नगर स्थित राज बैंक्विट हॉल में संपन्न हुआ। अधिवेशन के दौरान संगठन के विभिन्न पदों के लिए नामांकन प्रक्रिया पूरी की गई, जिसमें सभी पदाधिकारियों का निर्विरोध निर्वाचन हुआ। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में सफाई कर्मचारी एवं संघ के प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

चुनाव प्रक्रिया के तहत रवि प्रकाश सिंह को जिला अध्यक्ष, मानिकचंद को जिला मंत्री, उमेश शर्मा को जिला कोषाध्यक्ष, राकेश चौधरी को जिला संगठन मंत्री तथा चूड़ामणि को जिला संप्रेक्षक पद पर निर्विरोध निर्वाचित घोषित किया गया। चुनाव नामांकन एवं निर्वाचन की पूरी प्रक्रिया चुनाव अधिकारी योगेश कुमार की देखरेख में शांतिपूर्ण और पारदर्शी ढंग से संपन्न कराई गई।

अधिवेशन को संबोधित करते हुए नव-निर्वाचित जिला अध्यक्ष रवि प्रकाश सिंह ने कहा कि ग्रामीण सफाई कर्मचारियों की समस्याओं और अधिकारों के लिए संगठन पूरी मजबूती के साथ संघर्ष करेगा। उन्होंने कहा कि सफाई कर्मचारी पंचायत व्यवस्था

की रीढ़ हैं और उनके मान-सम्मान, नियमित मानदेय, सुरक्षा उपकरण तथा अन्य मूलभूत सुविधाओं के लिए संघ लगातार आवाज उठाता रहेगा।

जिला मंत्री मानिकचंद ने कहा कि संगठन को जमीनी स्तर पर और मजबूत किया जाएगा तथा हर सफाई कर्मचारी को संघ से जोड़ने का अभियान चलाया जाएगा। अन्य पदाधिकारियों ने भी कर्मचारियों के हित में एकजुट होकर कार्य करने का संकल्प दोहराया। अधिवेशन के दौरान संगठनात्मक मजबूती, आगामी रणनीति और कर्मचारियों से जुड़ी समस्याओं पर भी विस्तृत चर्चा की गई। कार्यक्रम के अंत में सभी नव-निर्वाचित पदाधिकारियों को उपस्थित सदस्यों ने बधाई दी।

लायंस क्लब राबर्ट्सगंज द्वारा निःशुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर का आयोजन

सोनभद्र। लायंस क्लब राबर्ट्सगंज द्वारा निःशुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर का आयोजन प्रत्येक माह की 26 तारीख को लायंस भवन में श्री सद्गुरु नेत्र चिकित्सालय, चित्रकूट के सहयोग से आयोजित किया जाता है। इस बार 26 जनवरी को मैनेजर हेमराज यादव, डॉ श्याम बाबू द्विवेदी, डॉ विक्रम सिंह, सुशील मिश्रा, दीलिप कुमार कुशवाहा, दयाराम सिंह, कुंवर सिंह व टीम के नेतृत्व में मोतियाबिंद के ऑपरेशन के लिए 48 मरीज चित्रकूट भेजे गए।

इस अवसर पर जोन चेयरपर्सन राधिका सिंह, अध्यक्ष अजीत सिंह भंडारी, सचिव सुशील पाठक, पूर्व मंडलाध्यक्ष हरीश अग्रवाल, एसोसिएट कैबिनेट सेक्रेटरी किशोरी सिंह, दया

सिंह, विमल अग्रवाल, कोषाध्यक्ष संगम गुप्ता, घनश्याम दास सिंगल, अशोक गुप्ता, मुकेश कुमार जायसवाल आदि सदस्य उपस्थित रहकर कार्यक्रम को संपन्न कराएं। 72 मरीजों को निःशुल्क चश्मा दिया गया और दवा दी गई। जिसमें 26 दिसंबर 2025 तक 4066 मोतियाबिंद के मरीजों का निशुल्क ऑपरेशन हो चुका है और 8274 मरीजों की जांच हो चुकी है। अध्यक्ष अजीत सिंह भंडारी ने कहा कि आज के आयोजन में मोतियाबिंद के मरीजों को ऑपरेशन के लिए चित्रकूट भेजा गया। राधिका सिंह, हरीश अग्रवाल, दया सिंह, परमजीत कौर, विमल अग्रवाल, किशोरी सिंह, जय कुमार केशरी, अभय सिंह ने संयुक्तरुप से कहा कि यह पुनीत कार्य लायंस क्लब द्वारा कई वर्षों से किया जा रहा है।

पांच दिवसीय बैंकिंग की मांग को लेकर बैंक कर्मियों का प्रदर्शन

सोनभद्र। यूनाइटेड फोरम ऑफ बैंक यूनियन्स (यूएफबीयू) के आह्वान पर मंगलवार को 5-दिवसीय बैंकिंग की मांग को लेकर बैंक अधिकारियों व कर्मचारियों ने जोरदार धरना-प्रदर्शन किया। देशव्यापी बैंक हड़ताल के तहत रॉबर्ट्सगंज में स्टेट बैंक की मुख्य शाखा से शुरू हुआ प्रदर्शन इंडियन बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, यूनियन बैंक, केनरा बैंक, बैंक ऑफ बड़ौदा, पंजाब एंड सिंध बैंक, यूको बैंक व इंडियन ओवरसीज बैंक होते हुए बरौली चौराहा तक पहुंचा, जहां धरना दिया गया। धरना-प्रदर्शन का मुख्य उद्देश्य भारतीय बैंक संघ (आईबीए) द्वारा 5-दिवसीय बैंकिंग लागू करने के

वादे को अब तक पूरा न किए जाने के खिलाफ विरोध दर्ज कराना था। प्रदर्शन में सभी संवर्गों के बैंक अधिकारी एवं कर्मचारी बड़ी संख्या में शामिल हुए और शांतिपूर्ण ढंग से नारेबाजी करते हुए अपनी मांगों को मजबूती से रखा।धरना स्थल पर वक्ताओं ने कहा कि बैंक कर्मचारी लंबे समय से अत्यधिक कार्यभार और मानसिक दबाव में कार्य कर रहे हैं। ऐसे में 5-दिवसीय बैंकिंग न केवल कर्मचारियों के कार्य-जीवन संतुलन के लिए आवश्यक है, बल्कि इससे बैंकिंग सेवाओं की गुणवत्ता, दक्षता और ग्राहक संतुष्टि में भी सुधार होगा। वक्ताओं ने चेतावनी दी कि यदि मांगों पर शीघ्र सकारात्मक निर्णय नहीं लिया गया, तो आंदोलन को और व्यापक रूप दिया जाएगा।प्रदर्शन के उपरांत बैंक कर्मियों ने आम नागरिकों से संवाद कर आंदोलन के कारणों की जानकारी दी और जनसमर्थन जुटाने का आह्वान किया। पूरा कार्यक्रम शांतिपूर्ण और अनुशासित वातावरण में संपन्न हुआ।प्रदर्शन में अध्यक्ष राजीव रंजन, उपाध्यक्ष अरविन्द कुमार, सचिव मुकेश कुमार सहित सत्यम श्री, सारंग देव सिंह, राम सिंह, प्रियंका सिंह, गायत्री राव, प्रसून सिंह, नीरज कुमार, रीकेश, रेखा, अजय, मुकेश, सुजीत, अविनाश, दीपेश त्रिपाठी, महेश, रामजी, राजेश, लालिमा, विकास और पूजा समेत बड़ी संख्या में बैंककर्मी मौजूद।

देहात थाना पुलिस ने चलाया चेकिंग अभियान बिना हेलमेट और लाइसेंस गाड़ी चलाने वालों का कटा चलान

आधुनिक समाचार

मैहर देहात थाना पुलिस ने वाहन चालकों के खिलाफ की कार्रवाई। बिना हेलमेट और बिना लाइसेंस के गलत तरीके से सड़क पर वाहन चलाने वालों पर थाना देहात पुलिस ने शिकंजा कसना शुरू कर दिया है। परिवहन विभाग के शमन शुल्क के प्रस्ताव पर कैबिनेट की स्वीकृति के बाद अब गजट नोटिफिकेशन भी जारी हो गया है। जिसके तहत जुर्माना लगाने के साथ दंड के प्रावधान को कड़ा किया गया है। इसी के तहत देहात पुलिस द्वारा निरंतर कार्रवाई की जा रही है, ताकि सड़क हादसों को कम किया जा सकें। आज मंगलवार को रीवा रोड स्थित देहात थाने के सामने पुलिस ने वाहनों की चेकिंग की। नियमों की अनदेखी करने वाले कई चालकों से शमन शुल्क वसूला। देहात थाना प्रभारी

श्रीमती रेनू मिश्रा ने बताया कि हम बिना हेलमेट और बिना लाइसेंस के चालकों पर बड़ी सख्ती के साथ पेस आएंगे हेलमेट लाइसेंस और बीमा सब साथ में लेकर चले तो चालान भरने की किसी को जरूरत नहीं है।अब बिना हेलमेट के वाहन चालकों को 300 रुपए का चलान हो गया है।और बिना लाइसेंस के अगर नॉर्मल गाड़ी है तो 1000 रुपए का चलान इसी प्रकार अन्य दरों में बदलाव हुआ है जिसका पालन कराया जाएगा। जो लोग अब बिना हेलमेट, बिना लाइसेंस वाहन चलाते हैं वे अब सावधान हो जाएं।

वरिष्ठ पत्रकार रामकिशोर त्रिवेदी की माता का देहावसान

रायबरेली। वरिष्ठ पत्रकार रामकिशोर त्रिवेदी की पूज्य माताजी गोमती त्रिवेदी का 87 वर्ष की आयु निधन हो गया। उनके निधन का समाचार मिलते ही पत्रकारिता जगत, राजनीतिक क्षेत्र तथा सामाजिक संगठनों में शोक की लहर व्याप्त हो गई। वह अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोड़ गई स्व. गोमती त्रिवेदी एक धर्मपरायण, सुसंस्कृत एवं सामाजिक मूल्यों से परिपूर्ण व्यक्तित्व की धनी थीं। उन्होंने अपने पूरे जीवन में पारिवारिक एकता, सामाजिक सौहार्द और नैतिक संस्कारों को सर्वोच्च स्थान दिया। उनका जीवन त्याग, संयम और सामाजिक चेतना का प्रेरणास्रोत रहा। रामकिशोर त्रिवेदी वरिष्ठ पत्रकार की माता जी के निधन पर वरिष्ठ पत्रकारों, राजनीतिक नेताओं, जनप्रतिनिधियों एवं सामाजिक सरोकार से जुड़े लोगों ने गहरा शोक व्यक्त किया है। अनेक गणमान्य व्यक्तियों ने व्यक्तिगत रूप से फोन कर रामकेशोर त्रिवेदी को शोक-संवेदना प्रकट की वरिष्ठ पत्रकार शिव मनोहर पांडे ने कहा कि स्व. गोमती त्रिवेदी जैसे व्यक्तित्व समाज की वह मौन शक्ति होते हैं, जिनके संस्कारों से ही सजग, जिम्मेदार और जनपक्षधर पत्रकार तैयार होते हैं। वरिष्ठ पत्रकार बृजेंद्र नारायण मिश्र ने उनके निधन को सामाजिक चेतना की एक गंभीर क्षति बताया ।

उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षक संघ सोनभद्र इकाई का चुनाव संपन्न

सोनभद्र। मगलवार को उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षक संघ सोनभद्र इकाई की शैक्षिक जनपदीय शैक्षिक सम्मेलन एवं जनपदीय इकाई का चुनाव चंद्रगुप्त मौर्य इंटर कॉलेज मधुपुर सोनभद्र के प्रांगण में संपन्न हुआ। इस संगोष्ठी एवं इकाई चुनाव के मुख्य अतिथि पूर्व शिक्षक विधायक एवं वर्तमान प्रांतीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष माध्यमिक शिक्षक संघ डॉ प्रमोद कुमार मिश्रा विशिष्ट अतिथि मंडलीय मंत्री (चुनाव अधिकारी)गणेश प्रसाद पूर्व जिला मंत्री मिर्जापुर बलवंत सिंह उपस्थित में सकुशल संपन्न हुआ।

जिला अध्यक्ष के पद पर सुनील कुमार राव प्रवक्ता राजा शारदा महेश इंटर कॉलेज सोनभद्र, जिला मंत्री के पद पर अमरेंद्र कुमार सिंह सहायक अध्यापक आदर्श इंटर कॉलेज सोनभद्र एवं कोषाध्यक्ष के पद पर राकेश चंद्र शुक्ला सहायक अध्यापक राजा शारदा महेश इंटर कॉलेज का निर्विरोध चयन किया गया।

इस सम्मेलन में जिले के कोने-कोने से आए हुए ढेर सारे शिक्षकों प्रधानाचार्यों एवं प्रबंधकों का आशीर्वाद

प्राप्त हुआ। विनीत कुमार, रजनीश कुमार तिवारी, राधेश्याम तिवारी, सूर्यदेव राम, रामरक्षा, राकेश चंद्र शुक्ला, अनिल कुमार पासवान, यशवंत सिंह, धर्मेंद्र कुमार सिंह, रामचंद्र प्रसाद, शैलेश कुमार पाल, दीप नारायण, प्रेम सिंह पटेल, अभिजात सोनकर, प्रवीण श्रीवास्तव, राकेश कुमार सिंह, प्रदीप कुमार सिंह, आशुतोष कुमार सिंह, अरविंद कुमार सिंह, संदीप कुमार सिंह, दिनेश कुमार सिंह, दिवाकर सिंह, राम आधार सरोज, धीरेंद्र कुमार त्यागी, अशोक कुमार, राजेश कुमार सिंह, रामसहाय गुप्ता, अनिल कुमार विश्वकर्मा, रिंकू सिंह, मुकेश कुमार, सुरेश चंद्र कनौजिया, सुधीर कुमार श्रीवास्तव, अरविंद कुमार, विनोद कुमार सिंह, संचित यादव, प्रतिभा शुक्ला, संध्या दुबे, विनीत वर्मा, पूनम मौर्या, कंचन मौर्य शिवमनी एवं रिंकी, सुनैना सिंह, निर्मला देवी, अंबिका सिंह अरविंद कुमार मौर्य रविंद्र पाल राहुल कुमार श्याम बाबू सुजीत कुमार सिंह मनोज कुमार सिंह राम लखन सिंह दीप नारायण सिंह शैलेश कुमार पाल आदि लोग इस सम्मेलन में उपस्थित रहे।

वरिष्ठ पत्रकार शिव प्रसाद यादव को पितृ शोक, मीडिया जगत में शोक की लहर

रायबरेली। न्यूज़ इंडिया चैनल के वरिष्ठ एवं समर्पित पत्रकार शिव प्रसाद यादव के पिता शिवनाथ यादव (80 वर्ष) का शनिवार देर रात इलाज के दौरान निधन हो गया। उनके निधन से न केवल परिवार, बल्कि मीडिया जगत और सामाजिक क्षेत्र में गहरा शोक व्याप्त हो गया। सेवा निवृत शिक्षक शिवनाथ यादव की तबीयत अचानक बिगड़ने पर उन्हें जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया था। प्राथमिक उपचार के बाद चिकित्सकों ने उन्हें एम्स रेफर किया, किंतु एम्स ले जाते समय अस्पताल में ही उन्होंने अंतिम सांस ली। वे अपने पीछे चार पुत्रों सहित भरा-पूरा परिवार छोड़ गए हैं। उल्लेखनीय है कि बीते वर्ष अक्टूबर माह में शिव प्रसाद यादव की माताजी का भी निधन हो गया था, जिससे परिवार पर दुःखों का पहाड़ टूट पड़ा है। निधन की सूचना मिलते ही मीडिया जगत में शोक की लहर फैल गई। उनके पैतृक गांव खालेपुर में वरिष्ठ पत्रकार बी.पी. सिंह, अनुज अवस्थी, रोहित मिश्रा, हुसैन अख्तर नकवी, केशवानंद शुक्ला, इंद्रवीर सिंह भदोरिया सहित बड़ी संख्या में इलेक्ट्रॉनिक एवं प्रिंट मीडिया से जुड़े पत्रकारों ने पहुंचकर गहरी शोक संवेदना व्यक्त की और दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित की। स्व. शिवनाथ यादव का अंतिम संस्कार रविवार दोपहर डलमऊ स्थित गंगा तट पर किया गया। अंतिम यात्रा में गांव से घाट तक बड़ी संख्या में ग्रामीणजन, राजनीतिक, सामाजिक संगठनों एवं विभिन्न वर्गों के लोगों ने सहभागिता कर उन्हें अंतिम विदाई दी।

एसजीएनपी में बस्तियों के ध्वस्तीकरण का विरोध!

नई दिल्ली। मुंबई की 'फेफड़े' कहे जाने वाले संजय गांधी राष्ट्रीय उद्यान के वन क्षेत्रों में पीढ़ियों से रह रहे आदिवासियों और प्रशासन के बीच तनाव चरम पर है। सोमवार को प्रशासन द्वारा आदिवासियों की बस्तियों को ध्वस्त किए जाने के विरोध में बड़ी संख्या में प्रदर्शनकारियों ने महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे के ठाणे स्थित आवास के बाहर रातभर जोरदार प्रदर्शन किया। प्रदर्शनकारियों का दावा है कि वे पीढ़ियों से इस क्षेत्र में रह रहे हैं। उन्होंने सोमवार को प्रशासन द्वारा उनके आवासों पर की गई तोड़फोड़ की कार्रवाई की निंदा की और देर रात शिंदे के आवास के बाहर विरोध प्रदर्शन किया। राज्य आदिवासी विकास समिति के अध्यक्ष विवेक पंडित ने कहा कि जब तक 2018 की पुनर्वास योजना लागू नहीं हो जाती और प्रभावित परिवारों को फिर से बसाया नहीं जाता, तब तक तोड़फोड़ नहीं होनी चाहिए।

बेंगलुरु में कांग्रेस का 'लोक भवन चलो' मार्च, सीएम सिद्धारमैया गरजे- संवैधानिक अधिकार छीन रही केंद्र सरकार

नई दिल्ली। कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया ने मंगलवार को कहा कि कांग्रेस का विरोध वीबी जी राम जी विधेयक के माध्यम से एमजीएनआरईजीए को निरस्त करने के विरोध में था। उन्होंने जोर देकर

कहा कि यह कदम संवैधानिक अधिकारों का हनन करता है और केंद्र सरकार के हाथों में सत्ता का केंद्रीकरण करता है। कर्नाटक प्रदेश कांग्रेस कमेटी (केपीसीसी) ने आज बेंगलुरु में केंद्र के वीबी जी राम जी अधिनियम के खिलाफ राज्य स्तरीय विरोध प्रदर्शन का आयोजन किया। मुख्यमंत्री सिद्धारमैया और उपमुख्यमंत्री डीके शिवकुमार ने 'लोक भवन चलो' विरोध प्रदर्शन के लिए बसों से कांग्रेस प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व करते हुए लोक भवन तक का सफर तय किया। सिद्धारमैया ने कहा कि पार्टी ने मांग की है कि इस कानून को रद्द किया जाए और महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (एमजीएनआरईजीए) को बहाल किया जाए। राजभवन में पत्रकारों से बात करते हुए सिद्धारमैया ने कहा कि विरोध प्रदर्शन में राज्य भर से हजारों लोग शामिल हुए। उन्होंने कहा कि पार्टी ने अदालत के आदेश का पालन करते हुए रैली नहीं निकाली और इसके बजाय बसों से राजभवन पहुंचकर अपना विरोध दर्ज कराया। मुख्यमंत्री ने कहा कि आज, केपीसीसी की ओर से, हमने राज्य स्तरीय विरोध प्रदर्शन आयोजित किया। इस प्रदर्शन में हजारों लोगों ने भाग लिया। चूंकि अदालत का आदेश है, इसलिए हमने विरोध रैली नहीं निकाली और दो बसों से राजभवन आए। सिद्धारमैया ने कहा कि यह विरोध प्रदर्शन वीबी जी राम जी विधेयक के माध्यम से एमजीएनआरईजीए को निरस्त करने के विरोध में किया जा रहा है। उन्होंने जोर देकर कहा कि यह कदम संवैधानिक अधिकारों का हनन करता है और सत्ता को केंद्र सरकार के हाथों में केंद्रित करता है। उन्होंने कहा कि कारण यह है कि वीबी जी राम जी विधेयक के जरिए एमजीएनआरईजीए को निरस्त कर दिया गया है। वे संविधान द्वारा प्रदत्त अधिकारों को छीन रहे हैं। अब, इस वीबी जी राम जी विधेयक के साथ, केंद्र सरकार ही सब कुछ तय करेगी।

मुख्यमंत्री ने घोषणा की कि कांग्रेस आने वाले दिनों में पूरे कर्नाटक में अपना आंदोलन तेज करेगी। उन्होंने कहा, 'हम पूरे राज्य में अपना विरोध प्रदर्शन करेंगे। उन्हें इस वीबी जी राम जी विधेयक को निरस्त करके एमजीएनआरईजीए को वापस लाना चाहिए। तब तक, हम अपना संघर्ष जारी रखेंगे।' उन्होंने आगे कहा कि पार्टी जन समर्थन जुटाने के लिए राज्य के कई हिस्सों में पदयात्रा करेगी। उन्होंने कहा कि हम राज्य के कई स्थानों पर पदयात्रा करेंगे। इसके अलावा, उपमुख्यमंत्री डीके शिवकुमार ने कहा कि पार्टी ने फैसला किया है कि कर्नाटक की सभी ग्राम पंचायतों का नाम महात्मा गांधी के नाम पर रखा जाएगा।

बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया 77वां गणतंत्र दिवस

रायबरेली। 77 वे गणतंत्र दिवस को पूरे जनपद में बड़ी धूमधाम से मनाया गया। मंत्री दिनेश प्रताप सिंह ने पुलिस लाइन में ध्वजारोहण कर परेड की सलामी ली, उनके साथ पुलिस अधीक्षक डॉ.यशवीर सिंह भी उपस्थित रहे। कलेक्ट्रेट में जिलाधिकारी हर्षिता माथुर ने ध्वजारोहण कर गणतंत्र अंगीकृत किए जाने की शपथ ग्रहण कराई। जिलाधिकारी द्वारा स्वतंत्रता संग्राम सेनानी के परिजनों को अंगवस्त्र व माला पहनाकर सम्मानित किया। मुख्य विकास अधिकारी अंजू लता ने विकास भवन में ध्वजारोहण किया,जिसमें विकास भवन के सभी विभागाध्यक्षों के साथ कर्मचारी नेता अनूप मिश्रा भी उपस्थित रहे। रायबरेली विकास प्राधिकरण में भी वरिष्ठ कर्मचारी नीलम गुप्ता ने ध्वजारोहण किया,जिसमें सेवानिवृत कर्मचारी राजेश कुमार पाण्डेय,देवनाथ पाल सहित कर्मचारी उपस्थित रहे।स्वयंसेवी संगठनों ने भी सुपर मार्केट में प्रतिदिन भंडारे में ॐ शिव शक्ति मानव सेवा मंडल द्वारा ध्वजारोहण किया गया।मातृभूमि सेवा मिशन इकाई रायबरेली द्वारा भी शहीद स्मारक स्थल पर ध्वजारोहण किया गया,जिसमें प्रख्यात चिकित्सक एवं समाजसेवी डॉ. मनीष चौहान ने ध्वजारोहण किया और शहीदों को नमन किया,जिसमें प्रदीप पांडे,महेंद्र अग्रवाल,भागवत प्रताप सिंह सहित सैकड़ो लोग उपस्थित रहे।

सृजन फाउंडेशन ने चलाया मतदाता जागरूकता अभियान, लोगों से की नाम जांचने की अपील

गाजीपुर। जनपद में मतदाता जागरूकता को लेकर सृजन फाउंडेशन द्वारा एक सराहनीय पहल की गई। फाउंडेशन के संस्थापक श्रिवु श्रीवास्तव के नेतृत्व में मतदाता जागरूकता अभियान चलाया गया, जिसका उद्देश्य लोगों को उनके मतदान अधिकारों के प्रति जागरूक करना और मतदाता सूची की शुद्धता सुनिश्चित करना रहा। इस अभियान के दौरान सृजन

फाउंडेशन की टीम ने वाराणसी के विभिन्न इलाकों में जाकर आम नागरिकों से संवाद किया। टीम ने लोगों को बताया कि लोकतंत्र में मतदान का अधिकार कितना महत्वपूर्ण है और हर पात्र नागरिक का नाम मतदाता सूची में होना अनिवार्य है। अभियान के तहत लोगों से यह भी आग्रह किया गया कि वे यह जरूर जांचें कि उनका नाम मतदाता सूची में दर्ज है या किसी कारणवश कट तो नहीं गया है। श्रिवु श्रीवास्तव ने कहा कि कई बार जानकारी के अभाव में योग्य मतदाताओं के नाम सूची से हट जाते हैं, जिससे वे मतदान से वंचित रह जाते हैं। इसी को ध्यान में रखते हुए यह जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है, ताकि समय रहते लोग अपने नाम की जांच कर सकें और यदि कोई त्रुटि हो तो उसे ठीक करा सकें। उन्होंने लोगों को ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों माध्यमों से मतदाता सूची देखने और सुधार कराने की प्रक्रिया के बारे में भी विस्तार से जानकारी दी

संक्षिप्त समाचार

पर्यटकों के वाहन और बस की टक्कर में चार लोगों की मौत

लखनऊ। उडुपी जिले में एक बस और पर्यटकों को ले जा रहे वाहन के बीच हुई टक्कर में चार लोगों की मौत हो गई। उसने बताया कि मियार के पास करकाला-बजागोली राष्ट्रीय राजमार्ग पर हुई टक्कर इतनी भीषण थी कि बस बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई। पुलिस ने बताया कि इस दुर्घटना में कई अन्य लोग भी घायल हो गए, जिन्हें तत्काल नजदीकी अस्पताल में भर्ती कराया गया। उनकी हालत स्थिर बताई जा रही है। पुलिस के अनुसार, यह दुर्घटना राष्ट्रीय राजमार्ग पर दोपहर 2:50 बजे हुई, जब धर्मस्थल से करकाला जा रही एक निजी बस धर्मस्थल की ओर जा रहे पर्यटक वाहन से टकरा गई। दुर्घटना के समय पर्यटक वाहन में 12 यात्री और एक बच्चा सवार था। पुलिस के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि इस वाहन में सवार तीन लोगों की मौके पर ही मौत हो गई।

भारी मात्रा में हथियार और गोला-बारूद बरामद

इंफाल। मणिपुर के इंफाल पूर्व जिले में भारी मात्रा में हथियार और गोला-बारूद बरामद किया गया है। पुलिस को बताया कि सुरक्षा बलों ने चानंग पर्वतमाला की तलहटी से हथियार बरामद किए। बरामद हथियारों में मैगजीन सहित एक .303 राइफल, एक एसएलआर, आठ सिंगल बैरल ब्रीच लोडिंग (एसबीबीएल) राइफल, एक रिवॉल्वर और मैगजीन सहित .22 बोर की पिस्तौल शामिल थी। पुलिस ने बताया कि शुक्रवार को चलाए गए अभियान में 24 गोलियां, बैटरी सहित पांच वॉकी-टॉकी सेट आदि भी बरामद किए गए। पुलिस ने बताया कि एक अलग अभियान में तेंगनुपाल जिले के मोरेह में एक उग्रवादी को गिरफ्तार किया गया। पुलिस ने बताया कि वाइखोम अथोई (28) प्रतिबंधित नेशनल रिवोल्यूशनरी फ्रंट ऑफ मणिपुर का सदस्य है। उन्होंने बताया कि उसके पास से 9 एमएम की एक पिस्तौल के साथ दो मैगजीन और 30 कारतूस भी बरामद किए गए।

सड़क दुर्घटना में छात्र की मौत, प्राथमिकी दर्ज

नई दिल्ली। दक्षिण-पूर्वी दिल्ली के मोदी मिल फ्लाईओवर पर एक सड़क दुर्घटना में मोटरसाइकिल सवार 24 वर्षीय विधि छात्र की मौत हो गई। पुलिस ने बताया कि छात्र की मोटरसाइकिल एक स्कूल बस से टकरा गई। यह हादसा अपराह्न लगभग साढ़े तीन बजे न्यू फ्रेंड्स कॉलोनी में हुआ। पुलिस ने बताया कि मृतक की पहचान कोटला मुबारकपुर निवासी विनम्र के रूप में हुई है और वह चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय में एलएलबी के तीसरे वर्ष का छात्र था। पुलिस ने बताया कि दुर्घटना के बाद बस चालक और अन्य लोग विनम्र को अपोलो अस्पताल ले गए। अधिकारियों ने बताया कि भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) की धाराओं 281 (तेज गति से वाहन चलाना) और 106(1) (लापरवाही से मृत्यु का कारण बनना) के तहत प्राथमिकी दर्ज की गई है। उन्होंने बताया कि स्कूल बस के चालक विजेंद्र को पकड़ लिया गया है।

मन की बात में पीएम मोदी का 'उच्च गुणवत्ता वाला' मंत्र

उद्योग और स्टार्टअप को दिया 'जीरो डिफेक्ट' का लक्ष्य

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को 2026 के पहले 'मन की बात' कार्यक्रम को संबोधित किया। अपने 130वें संबोधन में उन्होंने देश की इंडस्ट्री और स्टार्टअप्स से आग्रह किया कि वे अपनी मैन्युफैक्चरिंग में एक्सीलेंस को एक नया बेंचमार्क बनाएं। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि भारतीय उत्पादों की पहचान दुनिया भर में उनकी बेहतरीन गुणवत्ता से होनी चाहिए। प्रधानमंत्री ने भारतीय कंपनियों और उद्यमियों से 'जीरो डिफेक्ट' उत्पाद बनाने का संकल्प लेने को कहा। उन्होंने कहा, 'चाहे हमारा कपड़ा हो, टेक्नोलॉजी हो, इलेक्ट्रॉनिक्स हो या फिर पैकेजिंग, हर क्षेत्र में भारतीय उत्पाद 'टॉप क्वालिटी' का पर्याय बनना चाहिए। आइए, हम सब मिलकर जो कुछ भी बनाते हैं, उसकी गुणवत्ता में सुधार करने का संकल्प लें।' पीएम मोदी ने उन युवाओं के प्रयासों की जमकर तारीफ की, जिन्होंने 2016 में शुरू हुई भारत की स्टार्टअप यात्रा को नई ऊंचाइयों पर पहुंचाया है। उन्होंने गर्व से कहा कि आज भारत दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा स्टार्टअप इकोसिस्टम बन गया है। प्रधानमंत्री ने कहा कि ये स्टार्टअप उन क्षेत्रों में भी शानदार काम कर रहे हैं, जिनकी 10 साल पहले कल्पना करना भी मुश्किल था। संबोधन के दौरान पीएम मोदी ने बताया कि भारतीय स्टार्टअप अब आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, स्पेस, परमाणु ऊर्जा, सेमीकंडक्टर, ग्रीन हाइड्रोजन और बायोटेक्नोलॉजी जैसे आधुनिक क्षेत्रों में अपनी धाक जमा रहे हैं। उन्होंने कहा, 'आज आप किसी भी सेक्टर का नाम लें, आपको वहां कोई न कोई भारतीय स्टार्टअप काम करता हुआ मिल जाएगा। मैं उन सभी युवा साथियों को सलाम करता हूं जो खुद का स्टार्टअप चला रहे हैं या इस दिशा में कदम बढ़ाना चाहते हैं।'

दिल्ली की अदालत ने मानहानि मामले में सामाजिक कार्यकर्ता मेधा पाटकर को बरी किया

नई दिल्ली। दिल्ली की एक अदालत ने शनिवार को सामाजिक कार्यकर्ता मेधा पाटकर को दिल्ली के उपराज्यपाल वी.के. सक्सेना द्वारा दायर आपराधिक मानहानि के मामले में बरी कर दिया। अदालत ने कहा कि अभियोजन पक्ष यह साबित करने में विफल रहा कि पाटकर ने 2006 में एक टेलीविजन कार्यक्रम के दौरान कथित मानहानिकारक बयान दिए थे। यह शिकायत सक्सेना ने दर्ज कराई थी, जो तब 'नेशनल काउंसिल फॉर सिविल लिबर्टिज' (एनसीसीएल) के अध्यक्ष थे। सक्सेना ने आरोप लगाया था कि पाटकर ने एक टीवी कार्यक्रम के दौरान उनके खिलाफ मानहानिकारक बयान दिये। शिकायत के अनुसार, पाटकर ने कार्यक्रम के दौरान कथित तौर पर दावा किया था कि सक्सेना और उनके गैर सरकारी संगठन को सरदार सरोवर परियोजना से संबंधित दीवानी ठेके मिले थे। सक्सेना ने इस आरोप का खंडन करते हुए इसे मानहानिकारक बताया। अदालत ने कहा कि रिकॉर्ड में मौजूद सामग्री से पता चलता है कि पाटकर कार्यक्रम में परिचर्चा के दौरान शामिल नहीं थीं और प्रसारण के दौरान केवल उनका एक छोटा और पूर्व में रिकॉर्ड किया गया वीडियो क्लिप चलाया गया था।

मेमो में गिरफ्तारी का आधार नहीं बताना कर्तव्य की अवहेलना:इलाहबाद हाईकोर्ट

लखनऊ। इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने एक आदेश में कहा है कि गिरफ्तारी मेमो में गिरफ्तारी के विशिष्ट आधार का उल्लेख करने में विफलता, कर्तव्य की अवहेलना के समान माना जाएगा और ऐसी गलती करने वाले पुलिसकर्मियों को निलंबित किया जाना चाहिए। उमंत रस्तोगी नाम के व्यक्ति द्वारा दायर बंदी प्रत्यक्षीकरण याचिका स्वीकार करते हुए न्यायमूर्ति सिद्धार्थ और न्यायमूर्ति जय कृष्ण उपाध्याय की पीठ ने निर्देश दिया कि याचिकाकर्ता को रिहा किया जाए और इस राज्य में गिरफ्तारी मेमो में गिरफ्तारी के विशिष्ट आधार का उल्लेख करने में विफल किसी भी पुलिस अधिकारी को निलंबित कर विभागीय कार्यवाही की जाए।अदालत ने कहा, 'बिना तथ्यों के महज फॉर्म भरकर कानूनी अनुपालन की खानापूर्ति करना, दायित्व की अवहेलना के समान है।' उच्च न्यायालय ने कहा, 'अब समय आ गया है कि जो पुलिस अधिकारी गिरफ्तारी मेमो की जरूरतों का पालन नहीं कर रहे और संविधान के अनुच्छेद-22(1) के तहत संवैधानिक जनादेश का उल्लंघन करने के अलावा भारतीय न्याय सुरक्षा संहिता (बीएनएसएस) की धारा 47, 48 का उल्लंघन भी कर रहे हैं, उनके साथ सख्ती से निपटा जाए।'पीठ ने निर्देश दिया कि इस आदेश की प्रति उत्तर प्रदेश के पुलिस महानिदेशक के पास भेजी जाए। इस मामले में याचिकाकर्ता ने गिरफ्तारी और गौतम बुद्ध नगर के दीवानी मामलों के न्यायाधीश द्वारा पारित रिमांड आदेश को चुनौती देते हुए उच्च न्यायालय का रुख किया था।याचिकाकर्ता का कहना था कि उसकी गिरफ्तारी अवैध है क्योंकि उसे गिरफ्तारी का आधार लिखित में नहीं दिया गया। याचिकाकर्ता ने यह आरोप भी लगाया कि उसे गिरफ्तारी का कोई आधार बताए बगैर 26 दिसंबर, 2025 को उत्तराखंड के हल्द्वानी से गिरफ्तार किया गया। उसे गौतम बुद्ध नगर में रिमांड मजिस्ट्रेट के समक्ष पेश किया गया, लेकिन उसे गिरफ्तारी मेमो की प्रति उपलब्ध नहीं कराई गई। जब याचिकाकर्ता के वकील ने उसी दिन, उक्त आधार पर रिहाई के लिए आवेदन किया तो संबंधित मजिस्ट्रेट ने आवेदन खारिज कर दिया। इसलिए याचिकाकर्ता ने अवैध रिमांड के आदेश और गिरफ्तारी को चुनौती देते हुए उच्च न्यायालय का रुख किया।

कांग्रेस में फिर बढ़ी तकरार? अहम बैठक से गायब शशि थरूर बोले-नेतृत्व से चर्चा करनी है

नई दिल्ली। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और तिरुवनंतपुरम से सांसद शशि थरूर आगामी केरल विधानसभा चुनावों पर चर्चा के लिए आयोजित पार्टी की एक महत्वपूर्ण रणनीति बैठक में अनुपस्थित रहकर एक बार फिर विवादों में घिर गए हैं। इससे पार्टी के कामकाज के प्रति उनकी नाराजगी का संकेत मिलता है। थरूर ने स्पष्ट रूप से संकेत दिया कि उन्हें और पार्टी को लेकर कुछ 'मतभेद' हैं और वे पार्टी नेतृत्व के साथ उन पर चर्चा करना चाहते हैं।

शशि थरूर ने कहा जो भी मतभेद हैं, मुझे उन पर पार्टी नेतृत्व के साथ चर्चा करनी होगी और मैं ऐसा करने के अवसर की प्रतीक्षा कर रहा हूं। मैं इस मुद्दे को सार्वजनिक रूप से बिल्कुल भी नहीं उठाऊंगा। इससे पहले दिन में, थरूर ने स्पष्ट किया कि उन्होंने केरल साहित्य महोत्सव में अपनी पूर्व प्रतिबद्धताओं के कारण बैठक में शामिल न होने के अपने इरादे के बारे में पार्टी नेताओं को पहले ही सूचित कर दिया था।

हालांकि, उन्होंने आगे कहा कि उनके बैठक में शामिल न होने के बारे में कुछ मीडिया रिपोर्टें 'सच हो

सकती हैं, जबकि अन्य झूठ हो सकती हैं', और ऐसी बातों पर सार्वजनिक मंच पर चर्चा नहीं की जानी चाहिए। उन्होंने केरल साहित्य महोत्सव में कहा कि अपनी चिंताओं को सीधे पार्टी नेतृत्व तक पहुंचाना बेहतर है। मीडिया में कई बातें सामने आई हैं, जिनमें से कुछ सच हो सकती हैं जबकि अन्य झूठ हो सकती हैं, और ऐसे मामलों पर सार्वजनिक मंचों पर चर्चा नहीं की जानी चाहिए। मैंने पार्टी को पहले ही सूचित कर दिया था कि मैं कार्यक्रम में शामिल नहीं होऊंगा और जो कुछ भी मुझे कहना है, वह पार्टी के भीतर ही कहा जाएगा।

थरूर की शुक्रवार की अनुपस्थिति, 19 जनवरी को केरल के कोच्चि में आयोजित पार्टी की 'महापंचायत' में कांग्रेस नेता राहुल गांधी द्वारा कथित तौर पर 'अनदेखी' किए जाने के कुछ दिनों बाद हुई है। जब थरूर महा पंचायत को संबोधित कर रहे थे, उसी दौरान राहुल गांधी कार्यक्रम स्थल पर पहुंचे। गांधी और केसी वेणुगोपाल ने कई पार्टी नेताओं का अभिवादन किया, लेकिन थरूर को सीधे अभिवादन नहीं किया गया। थरूर को बेहद अपमानित महसूस हुआ क्योंकि गांधी ने मंच पर मौजूद कई अन्य नेताओं का जिक्र किया, लेकिन उनकी उपस्थिति के बावजूद उनका नाम नहीं लिया। कांग्रेस पार्टी ने किसी भी आंतरिक विवाद से इनकार करते हुए कहा कि थरूर को कोझिकोड में केरल साहित्य महोत्सव में पहले से ही कुछ कार्यक्रम तय थे।

एक छात्रावास की चौथी मंजिल से कूदकर छात्र ने की आत्महत्या

लखनऊ। गौतमबुद्ध नगर जिले में नॉलेज पार्क थाना क्षेत्र के एक छात्रावास में रहने वाले बी-टेक द्वितीय वर्ष के एक छात्र ने देर रात कथित रूप से चौथी मंजिल से कूदकर आत्महत्या कर ली। अपर पुलिस उपयुक्त (जोन तृतीय) सुधीर कुमार ने बताया कि नॉलेज पार्क थाना क्षेत्र के नॉलेज पार्क-3 में स्थित एक छात्रावास में बी-टेक द्वितीय वर्ष का छात्र उदित सोनी रहता था जो मूल रूप से झांसी का रहने वाला था। कुमार ने बताया कि वह अपने मित्रों के साथ शराब पीकर देर रात छात्रावास में आया था जिसके कारण छात्रावास प्रबंधन ने उसे फटकार लगाई और उसका वीडियो बनाकर उसके पिता विजय सोनी को भेज दिया। उन्होंने बताया कि वीडियो मिलने पर विजय ने अपने बेटे को डांटा और इस घटना से क्षुब्ध होकर उदित छात्रावास की चौथी मंजिल से नीचे कूद गया।

बांग्लादेश में हिंदुओं पर अत्याचार, नर्सिंग्दि में युवक को जिंदा जलाया, सुरक्षा पर उठे गंभीर सवाल

नई दिल्ली। बांग्लादेश में हिंदू अल्पसंख्यकों के खिलाफ हिंसा की घटनाएं कम होने का नाम नहीं ले रही हैं। हाल ही में, ढाका से करीब 50 किलोमीटर दूर नरसिंगदी शहर में एक 23 साल के हिंदू युवक को सोते समय जिंदा जला दिया गया। इस घटना ने मुस्लिम-बहुल देश में अल्पसंख्यक आबादी की सुरक्षा पर एक बार फिर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। मृतक की पहचान चंचल चंद्र भौमिक के रूप में हुई है, जो नरसिंगदी पुलिस लाइंस के पास एक गैरेज में काम करते थे। यह दुखद घटना शुक्रवार रात की है। काम के बाद थके हुए भौमिक गैरेज के अंदर ही सो गए थे। इसी दौरान कुछ अज्ञात हमलावरों ने गैरेज में आग लगा दी। गैरेज में पेट्रोल और इंजन ऑयल जैसे ज्वलनशील पदार्थ होने के कारण आग तुरंत फैल गई, जिससे भौमिक की दम घुटने और जलने से मौत हो गई। सीसीटीवी फुटेज में हमलावरों को आग लगाते हुए देखा गया है, जिसे स्थानीय लोग एक सोची-समझी हत्या बता रहे हैं। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है और अपराधियों की तलाश जारी है। 2022 की जनगणना के अनुसार, बांग्लादेश में लगभग 1.31

करोड़ हिंदू रहते हैं, जो कुल आबादी का करीब 7.95 प्रतिशत हैं। पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना के सत्ता से हटने के बाद से बांग्लादेश में हिंदुओं के खिलाफ हिंसा के दर्जनों मामले सामने आए हैं। भारत ने भी पड़ोसी देश में बढ़ते उग्रवाद और हिंदुओं की सुरक्षा को लेकर कई बार अपनी गहरी चिंता व्यक्त की है। पिछले कुछ समय में हिंसा की यह कोई अकेली घटना नहीं है। महज एक हफ्ते पहले गाजीपुर में एक हिंदू मिठाई दुकान मालिक की पीट-पीटकर हत्या कर दी गई थी, जब वे अपने कर्मचारी को बचाने की कोशिश कर रहे थे। उसी सप्ताह सिलहट में एक हिंदू के घर को आग के हवाले कर दिया गया और फेनी जिले में एक हिंदू ऑटो-रिक्शा चालक की चाकू मारकर हत्या कर दी गई। ये लगातार होती घटनाएं वहां रह रहे अल्पसंख्यकों के बीच डर का माहौल पैदा कर रही हैं।

ओडिशा का एआई तकनीक के क्षेत्र में अग्रदूत बनने का लक्ष्यः सीएम मोहन चरण माझी

नई दिल्ली। ओडिशा के मुख्यमंत्री मोहन चरण माझी ने कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) को शासन एवं सार्वजनिक सेवा वितरण में नए मानदंड स्थापित करने का अवसर प्रदान करने वाली प्रौद्योगिक बताते हुए कहा है कि ओडिशा को एक ऐसा मॉडल अपनाना चाहिए जिसमें राज्य सिर्फ प्रौद्योगिकी को अपनाने वाला न रहे, बल्कि उसका अग्रदूत बने। माझी ने यह बात शनिवार को एक निजी एआई कंपनी के साथ बैठक में कही जिसमें राज्य में सुरक्षित, समावेशी और संप्रभु कृत्रिम मेधा परिवेश बनाने के प्रयासों पर चर्चा हुई। मुख्यमंत्री कार्यालय (सीएमओ) की ओर से जारी बयान के अनुसार, चर्चा में कृत्रिम बुद्धिमत्ता को एक दीर्घकालिक सार्वजनिक क्षमता के रूप में स्थापित करने पर ध्यान केंद्रित किया गया और संप्रभु बुनियादी ढांचे एवं राज्य के भीतर टिकाऊ संस्थागत क्षमता पर जोर दिया गया। बैठक में माझी के अलावा इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री मुकेश महालिंग, मुख्य सचिव अनु गर्ग और वरिष्ठ सरकारी अधिकारी उपस्थित रहे। चर्चा के दौरान ओडिशा सरकार ने साझा, संप्रभु कृत्रिम मेधा बुनियादी ढांचा विकसित करने का अपना दृष्टिकोण रखा। माझी ने एआई को शासन एवं सार्वजनिक सेवा वितरण में नए मानदंड स्थापित करने का अवसर प्रदान करने वाली प्रौद्योगिक बताया। मुख्यमंत्री ने कहा कि ओडिशा को एक ऐसा मॉडल अपनाना चाहिए जिसमें राज्य सिर्फ एआई को अपनाने वाला न रहे, बल्कि उसका अग्रदूत बने। बयान के मुताबिक, पांच-छह फरवरी को भुवनेश्वर में होने वाले ब्लैक स्वान शिखर सम्मेलन में एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर होने की संभावना है।

फिरजॉल में विस्फोटक बरामद, दो लोग गिरफ्तार

इंफाल। मणिपुर के फिरजॉल जिले में सुरक्षाबलों ने दो लोगों को गिरफ्तार कर उनके पास से विस्फोटक सामग्री बरामद की है। पुलिस ने रविवार को बयान जारी कर यह जानकारी दी। पुलिस बयान के अनुसार, सुरतुइनेक गांव के निवासी सी. संगकुगा मिजो (58) और सिबापुरीखाल के निवासी माइकल लालनिथांग (27) को शुक्रवार को परबंग थाना क्षेत्र में बुराइखल और 'लोअर खारखुप्लिएन' के बीच के इलाके से गिरफ्तार किया गया। इसमें कहा गया कि उनके कब्जे से जिलेटिन की 30 छड़ें, 20 डेटोनेटर, 20 मीटर तार और 1.02 लाख रुपये जब्त किए गए। इस बीच, शनिवार को इससे अलग एक अन्य अभियान में सुरक्षा बलों ने चूड़ाचांदपुर जिले में लोइलामकोट और नालोन के बीच के इलाके से रॉकेट-चालित ग्रेनेड (आरपीजी) सहित गोला-बारूद का जखीरा बरामद किया।

उप्र का गौरव! अंतरिक्ष यात्री शुभांशु से लेकर यूट्यूबर अलख पांडे को अमित शाह ने किया सम्मानित

नई दिल्ली। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने शनिवार को विभिन्न क्षेत्रों में योगदान देने वाली कई प्रतिष्ठित हस्तियों को 'उत्तर प्रदेश गौरव पुरस्कार' से सम्मानित किया। उत्तर प्रदेश दिवस के अवसर पर आयोजित इस सम्मान समारोह में ग्रुप कैप्टन और अंतरिक्ष यात्री सुभानशु शुक्ला, शैक्षिक यूट्यूबर अलख पांडे, लक्ष्मी आर्य और कृषि वैज्ञानिक सुधानशु सिंह सहित कई अन्य सम्मानित व्यक्तियों को पुरस्कार से नवाजा गया। ग्रुप कैप्टन सुभानशु शुक्ला ने आभार व्यक्त करते हुए कहा कि यह कार्यक्रम विशेष था क्योंकि इसमें विभिन्न क्षेत्रों के लोगों को आमंत्रित किया गया और सम्मानित किया गया।

शुभांशु शुक्ला ने पत्रकारों से कहा कि मेरी ओर से हार्दिक बधाई। मैं स्वयं लखनऊ से हूँ और यहाँ वापस आकर बहुत अच्छा लग रहा है, ऐसा लग रहा है जैसे घर लौट आया हूँ। लेकिन आज का कार्यक्रम मेरे लिए विशेष था क्योंकि इसमें विभिन्न क्षेत्रों और विधाओं के लोगों को आमंत्रित

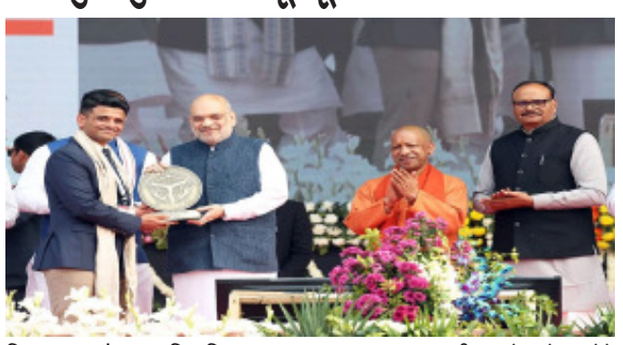

किया गया और सम्मानित किया गया। मुझे लगता है कि इसे देखकर बच्चों को प्रोत्साहन मिलता है। इस बीच, शिक्षा से जुड़े यूट्यूबर अलख पांडे ने कहा कि यह सम्मान उनके लिए बेहद भावुक कर देने वाला है। उन्होंने अपनी सफलता का श्रेय अपने छात्रों को दिया और कहा कि अगर उनका प्यार और समर्थन खत्म हो जाए तो इस तरह का सम्मान उनके लिए कोई मायने नहीं रखेगा।

अलख पांडे ने एएनआई को बताया कि हाँ, बहुत अच्छा लग रहा है, इस स्तर पर सम्मान पाना एक अद्भुत एहसास है। शुरुआत से लेकर अब तक, एक चीज जो हमेशा मेरे साथ रही है, वह है बच्चों का प्यार। समय के साथ लोग बदल गए, लेकिन आज भी मैं जो कुछ भी हूँ, वह बच्चों की वजह से ही हूँ। मैं आज जिस मुकाम पर खड़ा हूँ और आप मुझसे जो सवाल पूछ रहे हैं, वह सब बच्चों की वजह से ही है। शुरुआत से लेकर अब तक, सब कुछ उनके प्यार की वजह से ही अच्छा रहा है। जिस दिन यह प्यार खत्म हो जाएगा, कोई भी पुरस्कार मेरे लिए मायने नहीं रखेगा। शिक्षा और नवाचार में उनके योगदान के लिए सम्मानित लक्ष्मी आर्य ने इस सम्मान पर गर्व व्यक्त किया। उन्होंने एएनआई को बताया, 'केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह द्वारा मुझे इस पुरस्कार से सम्मानित करना मेरे लिए गर्व की बात है।' कृषि वैज्ञानिक सुधांशु सिंह ने भी इस अवसर पर खुशी व्यक्त करते हुए कहा कि जीवन भर किए गए कार्यों के लिए मान्यता प्राप्त करना एक 'अत्यंत सुखद अनुभव' है।

बाल्टीमोर रेवेन्स के नए हेड कोच बने जेसी मिंटर, जॉन हारबॉ की छुट्टी के बाद बड़ा फैसला

नई दिल्ली। एनएफएल में एक बड़ा कोचिंग बदलाव सामने आया है। बाल्टीमोर रेवेंस ने अपने नए हेड कोच के तौर पर जेसी मिंटर को नियुक्त किया है। मौजूद जानकारी के अनुसार, रेवेंस ने गुरुवार को लॉस एंजेलिस चार्जर्स के डिफेंसिव कोऑर्डिनेटर रहे मिंटर को यह जिम्मेदारी सौंपी है। वह जॉन हारबॉ को रिप्लेस करेंगे, जिन्हें इस महीने की शुरुआत में 18 साल बाद टीम के प्लेऑफ में जगह न बना पाने के चलते हटाया गया था।

इंडिया ओपन 2026 में भारतीय चुनौती फिर फीकी, कुछ उम्मीदों के साथ कई सवाल

मुम्बई। इंडिया ओपन 2026 की चर्चा इस बार खेल से ज़्यादा आयोजन की खराब व्यवस्थाओं और राजधानी की खराब हवा को लेकर रही, लेकिन कोर्ट के अंदर भी भारतीय बैडमिंटन के लिए तस्वीर ज्यादा उत्साहजनक नहीं रही। गौरतलब है कि एक बार फिर टूर्नामेंट के वीकेंड तक पहुंचते-पहुंचते भारतीय चुनौती लगभग समाप्त हो गई, जो हाल के वर्षों में एक दोहराता हुआ पैटर्न बनता जा रहा है।

बता दें कि 2023 में सुपर 750 का दर्जा मिलने के बाद से इंडिया ओपन के निर्णायक दौर में भारत की मौजूदगी बेहद सीमित रही है। पिछले तीन वर्षों में अगर किसी ने उम्मीद जगाई है तो वह केवल सात्विकसाईराज रंकीरेड्डी और चिराग शेट्टी रहे हैं, जो 2024 में फाइनल और 2025 में सेमीफाइनल तक पहुंचे थे, जबकि एचएस प्रणय ने 2024 में अंतिम चार में जगह बनाई थी। मौजूद जानकारी के अनुसार, इस साल भारतीय खिलाड़ियों में सबसे आगे लक्ष्य सेन रहे, लेकिन उन्हें भी क्वार्टरफाइनल में हार का सामना करना पड़ा।

गौरतलब है कि यह टूर्नामेंट अगस्त में होने वाली वर्ल्ड चैंपियनशिप से पहले एक अहम अभ्यास मंच माना जा रहा है। ऐसे में आयोजन को लेकर फेडरेशन के सामने चुनौतियां तो हैं ही, साथ ही कोर्ट पर मिले नतीजे भी उम्मीदों के मुताबिक नहीं रहे। पुरुष एकल और पुरुष युगल ऐसे दो वर्ग थे, जहां भारत को खिताब या कम से कम फाइनल तक पहुंचने की सबसे ज्यादा उम्मीद थी, लेकिन दोनों ही मोर्चों पर पसंदीदा खिलाड़ी निर्णायक क्षणों में अटक गए।

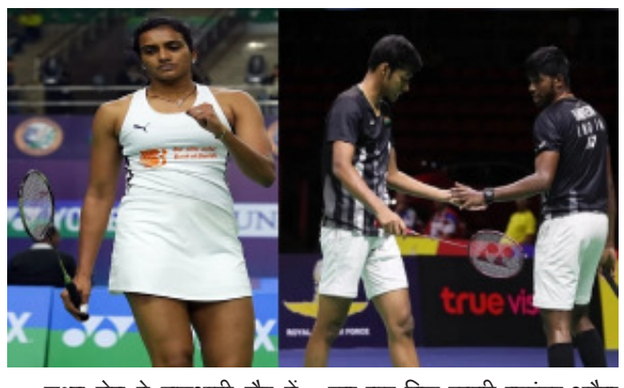

लक्ष्य सेन ने शुरुआती दौर में आयुष शेट्टी और केंटा निशिमोतो के खिलाफ अपने पुराने तेवर दिखाए, लेकिन सेमीफाइनल की राह में लिन चुन-यी की तेज़ आक्रामक खेल शैली उनके लिए भारी पड़ गई। पूरे सप्ताह के दौरान स्टेडियम के भीतर बहती प्राकृतिक हवा कई खिलाड़ियों के लिए परेशानी का सबब बनी, जहां तेज़ मूवमेंट और आक्रमण पर निर्भर खिलाड़ी ज्यादा सहज नजर आए। कई खिलाड़ियों ने माना कि वे शटल पर नियंत्रण नहीं बना सके और हालात के अनुरूप खुद को जल्दी ढालने में चूक गए। सात्विक और चिराग की बात करें तो उनका प्रदर्शन भी असमान रहा। जापान की जोड़ी हिरोकी मिदोरिकावा और क्योहेई यामाशिता के खिलाफ उनकी हार ने एक बार फिर उनकी काउंटर-अटैक के खिलाफ कमजोरी को उजागर किया। बता दें कि पहले दौर में वॉकओवर मिलने के कारण उन्हें मैच खेलने का मौका देर से मिला, जिससे लय बनाने में भी परेशानी हुई। इस बीच, अपने करियर के अंतिम दौर में माने जा रहे किदांबी श्रीकांत और एचएस प्रणय ने यह दिखाया कि उनमें अब भी जुझारूपन बाकी है। श्रीकांत ने जहां तरुण मन्नेपल्ली के खिलाफ तीन गेम का मुकाबला जीता, वहीं फ्रांस के फॉर्म में चल रहे क्रिस्टो पोपोव के खिलाफ कड़ा संघर्ष किया। प्रणय ने भी पिछले साल के फाइनलिस्ट ली चेउक यिउ को सीधे गेमों में हराकर आत्मविश्वास बढ़ाया और फिर लो कीन यू के खिलाफ तीन गेम तक मुकाबला खींचा।

महिला एकल में पीवी सिंधु की शुरुआत साल की शुरुआत में मलेशिया ओपन के सेमीफाइनल से मजबूत रही थी, लेकिन इंडिया ओपन में वियतनाम की गुयेन थूई लिन्ह के खिलाफ उन्हें लगातार तीसरी हार झेलनी पड़ी। हालांकि, इस वर्ग में कुछ सकारात्मक संकेत भी मिले। घुटने की गंभीर चोट से लौट रहीं मालविका बंसोड़ ने भले ही बाहर का रास्ता देखा, लेकिन विश्व नंबर तीन हान यूए को कड़ी चुनौती देकर यह दिखा दिया कि वह जल्द लय में लौट सकती हैं।

सबसे रोमांचक प्रदर्शन 17 वर्षीय तन्वी शर्मा का रहा, जिन्हें आखिरी समय में टूर्नामेंट में एंट्री मिली थी। उन्होंने विश्व नंबर दो वांग झीयी को दो गेम तक कड़ी टक्कर देकर सभी का ध्यान खींचा, हालांकि निर्णायक गेम में अनुभव की कमी साफ दिखी। कुल मिलाकर इंडिया ओपन 2026 भारतीय बैडमिंटन के लिए सवाल भी छोड़ गया और कुछ उम्मीद की किरणें भी, जिन पर आगे की तैयारी टिकी रहेंगी।

साइना नेहवाल ने बैडमिंटन को कहा अलविदा, घुटनों की गंभीर समस्या बनी वजह

मुम्बई। भारतीय बैडमिंटन के बड़े नाम में शामिल सायना नेहवाल ने सोमवार को अपने खेल जीवन को विराम देने का निर्णय किया। लंदन ओलंपिक 2012 में कांस्य पदक जीतने वाली सायना पिछले करीब दो वर्षों से प्रतिस्पर्धी बैडमिंटन से दूर थीं और उनकी आखिरी उपस्थिति 2023 के सिंगापुर ओपन में दर्ज की गई थी।लंबे समय से चोट और फिटनेस संबंधी समस्याओं से जूझ रहीं सायना ने यह फैसला घुटनों की गंभीर चिकित्सकीय स्थिति के बाद लिया। उपलब्ध जानकारी के अनुसार, डॉक्टरों ने उनके घुटनों में कार्टिलेज के पूरी तरह घिस जाने और गठिया (आर्थराइटिस) की पुष्टि की थी, जिसके चलते उच्च स्तर का प्रशिक्षण जारी रखना उनके लिए संभव नहीं रह गया था।सायना ने स्पष्ट किया कि उनके घुटने अब हल्की ट्रेनिंग का दबाव भी सहने की स्थिति में नहीं हैं। उन्होंने यह भी कहा कि उन्होंने औपचारिक रूप से संन्यास की घोषणा करना जरूरी नहीं समझा, क्योंकि खेल से उनकी लंबी अनुपस्थिति अपने आप में बहुत कुछ कह रही थी।भारतीय बैडमिंटन के इतिहास में सायना नेहवाल का योगदान बेहद अहम माना जाता है।

मोहम्मद शमी के पांच विकेट, सेना पर बोनस अंक की जीत के करीब बंगाल

नई दिल्ली। भारतीय तेज गेंदबाज मोहम्मद शमी की शानदार गेंदबाजी (51 रन देकर पांच विकेट) ने बंगाल को शनिवार को यहां रणजी ट्रॉफी एलीट ग्रुप सी मैच के तीसरे दिन सेना के खिलाफ बोनस अंक के साथ जीत के करीब पहुंचा दिया।

शमी ने 16 ओवर में तीन मेडन से 51 देकर पांच विकेट चटकाकर शानदार प्रदर्शन किया जिससे विपक्षी टीम का बल्लेबाजी लाइनअप लड़खड़ा गया और सेना की टीम ने दूसरी पारी में 231 रन पर आठ विकेट गंवा दिए। इससे वह 102 रन से पिछड़ रही है। बंगाल ने इससे पहले अपनी पहली पारी में 519 रन का विशाल स्कोर खड़ा किया था और सेना को महज 186 रन पर आउट करके 333 रन की बड़ी बढ़त हासिल की थी। शमी ने सेना के सलामी बल्लेबाज शुभम रोहिल्ला (00) और तीसरे नंबर के बल्लेबाज रवि चौहान (08), रजत पालीवाल (83), विनीत धनखड़ (13) और अर्जुन शर्मा (2) को आउट करके अपने पांच विकेट पूरे किए। नाडियाड में ग्रुप के एक अन्य मैच में गुजरात दूसरी पारी में 347 रन पर ऑल आउट हो गई जिससे वह हार की कगार पर है। रेलवे को जीत के लिए 99 रन बनाने हैं। रेलवे ने पहली पारी में

मेजबान टीम को 175 रन पर आउट कर दिया था।

रेलवे ने जुबैर खान की 104 रन की शतकीय पारी के साथ रवि सिंह (98), कप्तान भार्गव मेराई (55) और कर्ण शर्मा (60) के अर्धशतकों की बदौलत 424 रन बनाकर 249 रन की बढ़त हासिल की थी। दूसरी पारी में बल्ले से काफी बेहतर प्रदर्शन के बावजूद गुजरात की टीम 347 रन पर सिमटकर 98 रन की बढ़त ही बना सकी जिसमें जयमीत पटेल ने 101 और उर्विल पटेल ने 64 रनों की शानदार पारी खेली। रेलवे के लिए कर्ण ने 87 रन देकर पांच विकेट लिए। मेजबान असम ने तीसरे दिन हरियाणा के खिलाफ दूसरी पारी में सात विकेट पर 136 रन बनाकर अपनी कुल बढ़त 147 रन तक पहुंचा दी। असम ने पहली पारी में 247 रन बनाने के बाद हरियाणा को 236 रन पर आउट कर 11 रन की मामूली बढ़त हासिल की। हालांकि हरियाणा के लिए युवराज सिंह (84) और अंकित कुमार (50) ने अर्धशतक बनाए।

वहीं अगरतला में त्रिपुरा की स्थिति थोड़ी बेहतर है क्योंकि उसने उत्तराखंड के खिलाफ अपनी दूसरी पारी में आठ विकेट पर 247 रन बनाकर कुल 212 रन की बढ़त हासिल कर ली। उत्तराखंड ने मेजबान टीम के पहली पारी में 266 रन के जवाब में 301 रन बनाए थे।

उदयपुर से लौटीं कृति सेनन का पैपराजी पर फूटा गुस्सा

मिस्ट्री मैन 'कबीर' के साथ वीडियो बनाने पर हुईं आगबबूला

मुम्बई। बॉलीवुड अभिनेत्री कृति सेनन इन दिनों अपनी बहन नुपुर सेनन की शादी को लेकर चर्चा में हैं। लेकिन हाल ही में उदयपुर एयरपोर्ट से सामने आए एक वीडियो ने सोशल मीडिया पर नई बहस छेड़ दी है। मंगलवार (13 जनवरी, 2026) को जब कृति उदयपुर से मुंबई लौट रही थीं, तब एयरपोर्ट पर पैपराजी के साथ उनकी तीखी बहस हो गई। अब उदयपुर एयरपोर्ट का एक वीडियो ऑनलाइन वायरल हो रहा है, जिसमें एक्ट्रेस को कबीर के साथ फोटो खींचने की कोशिश कर रहे पैपराज़ी पर गुस्सा करते देखा जा सकता है। उन्होंने कैमरा पर्सन से चिल्लाकर कहा, 'क्यों वीडियो बना रहे हो।' जब एक्ट्रेस ने कैमरा बंद करने को कहा, तो कबीर साइड में खिसकते दिखे। जनवरी 2026 तक, कबीर बहिया 26 साल के हैं; उनका जन्म 20 नवंबर, 1999 को हुआ था। दूसरी ओर, कृति सेनन 35 साल की हैं। खबरों के मुताबिक, एक्ट्रेस ने अपना 35वां जन्मदिन अपने कथित बॉयफ्रेंड के साथ एक यॉट पर मनाया था। कबीर बहिया ने मिलफील्ड में पढ़ाई की, जो इंग्लैंड के समरसेट में सबसे मशहूर बोर्डिंग स्कूलों में से एक है। वह अपने 52.6ख फॉलोअर्स के लिए अपने इंस्टाग्राम हैंडल 'ॅ...' का इस्तेमाल करके अपने दोस्तों, परिवार और पर्सनल लाइफ के बारे में अपडेट पोस्ट करते हैं। कबीर एक जाने-माने परिवार से आते हैं क्योंकि उनके पिता, कुलजिंदर बहिया, साउथॉल ट्रैवल के फाउंडर थे, जो यूके में स्थित एक बहुत पॉपुलर ट्रैवल कंपनी है। यह लंदन बेस्ड परिवार संडे टाइम्स रिच लिस्ट 2019 में शामिल था, जिसकी अनुमानित नेट वर्थ 427 करोड़ रुपये थी। जबकि कबीर की वर्क लाइफ एक रहस्य बनी हुई है, उनकी अमीर परवरिश और लाइफस्टाइल कृति सेनन के साथ उनके कथित रिश्ते के बाद से काफी चर्चा में रही है, जो उनसे 9 साल बड़ी हैं। वर्क फ्रंट की बात करें तो, कृति सेनन आखिरी बार धनुष के साथ 'तेरे इश्क में' में दिखी थीं। यह फिल्म बॉक्स ऑफिस पर हिट रही थी और अब वह शाहिद कपूर की 'कॉकटेल 2' में नज़र आएंगी। रश्मिका मंदाना भी 'तेरी बातों में ऐसा उलझा जिया' के एक्टर्स के साथ नज़र आएंगी।

ऐश्वर्या राय का स्किन से चिपका चमकदार गाउन देख निकला लोगों का गुस्सा, बोले 'सबसे घटिया'

मुम्बई। ऐश्वर्या राय बच्चन न सिर्फ बेहद सुंदर हैं बल्कि उनका एलिगेंट स्टाइल स्टेटमेंट भी हमेशा सुखियां बटोरता है। हालांकि, इस हसीना बाला के भी ऐसे कई फैशन मोमेंट्स हैं, जो इम्प्रेस करने की जगह फैन्स को निराश करते दिखे। कुछ लुक तो ऐसे भी रहे, जिन्होंने लोगों को गुस्सा तक दिला दिया। ऐसा ही एक लुक तब देखने को मिला था, जब ऐश्वर्या को कान फिल्म फेस्टिवल का हिस्सा बनते देखा गया था। **फ़्लोरेसेन्ट गाउन में ऐश्वर्याः** कान फिल्म फेस्टिवल के एक रेड कार्पेट अपीयरेंस के लिए दुनिया की इस सबसे खूबसूरत महिलाओं में से एक ने हटकर आउटफिट चुनी थी। ये उनकी पहले की किसी भी अपीयरेंस से काफी डिफ्रेंट थी। इस ड्रेस को ऊपर से लेकर नीचे तक गोल्डन फ़्लोरेसेन्ट रंग दिया गया था। लाइट में आने पर गाउन पर ग्रीन, ब्लू, येलो, गोल्डन जैसे कई कलर्स दिखाई दे रहे थे। **बॉडीकॉन फिटिंगः** वैंह-थ्वल्रे ग्रैंग द्वारा खासतौर पर ऐश्वर्या के लिए स्टाइल्ड इस गाउन में एक साइड स्ट्रैपलेस नेकलाइन और दूसरी ओर लेयर्ड लॉन्ग स्लीव थी। आउटफिट को डेलिकेट फॉइल्ड लेदर से तैयार किया गया था। इसे प्लेन टेक्सचर

का रखने की जगह, पूरे मटीरियल पर स्नेक स्किन का होलोग्राफिक एम्बॉस किया गया था। **कर्वी फिगर हुआ हाइलाइटः** ऐश्वर्या राय की आउटफिट में डीप कट नेकलाइन दी गई थी, जो बोल्डनेस का एलिमेंट ऐड कर रही थी। वहीं ड्रेस को बॉडीकॉन फिटिंग दी गई थी, जो अदाकारा के कर्वी फिगर को हाइलाइट कर रही थी। गाउन के साथ ही डिजाइनर ने ऐश्वर्या के लिए मैचिंग हील्स भी तैयार की थीं। वहीं अदाकारा के मेकअप को न्यूड टोन रखते हुए उनके बालों को स्लीक लुक दिया गया था। **लोगों को पसंद नहीं आया लुकः** इस बात में कोई शक नहीं कि हटकर लुक अपनाने के मामले में ऐश्वर्या फुल नंबर्स ले गईं, लेकिन बात जब ओवरऑल लुक की आई, तो क्रिटिक्स से लेकर लोगों तक को ये कुछ खास पसंद नहीं आया। इस गाउन को पहनी ऐश की तस्वीरें जब सोशल मीडिया पर सामने आई, तो यूजर्स ने इसे 'डरावना', 'सबसे घटिया', 'बेकार' बताते हुए फॉइल पेपर तक से तुलना कर दी। **स्टाइलिस्ट पर निकला गुस्साः** सिर्फ गाउन को ही आलोचना नहीं मिली, बल्कि लोगों का ऐश्वर्या की स्टाइलिस्ट पर भी गुस्सा निकला। उन्होंने साफ जाहिर किया कि ऐक्ट्रेस को स्टाइल करने में काफी बड़ी कमी रह गई। कुछ ने इस बात को भी हाइलाइट किया कि वो तो ऐश्वर्या की खूबसूरती है, जिसने ओवरऑल अपीयरेंस को थोड़ा बहुत बचा लिया, नहीं तो एक नजर में ही ये लुक एकदम बेकार नजर आए।

सलमान ने बॉलीवुड में पूरे किए अपने तीन दशक, क्या-क्या हुआ 32 सालों में

मुंबई। सुपरस्टार सलमान खान ने भारतीय सिनेमा जगत में तीन दशक पूरे कर लिए हैं और उन्होंने अपनी सफलता का श्रेय अपने प्रशंसकों तथा शुभचिंतकों को देते हुए उनका आभार व्यक्त किया है। सलमान ने 1988 में फिल्म 'बीवी हो तो ऐसी' के साथ बॉलीवुड में

कदम रखा था। उसके बाद 29 दिसंबर 1989 को रिलीज हुई फिल्म 'मैंने प्यार किया' में पहली बार वह मुख्य?भूमिका में नजर आए। उन्होंने कहा कि कई उत्कृष्ट लोगों ने उन्हें इस मुकाम पर पहुंचाया है। सलमान ने पीटीआई भाषा से कहा, ''मैं अपने प्रशंसकों, शुभचिंतकों और उन सभी लोगों का आभारी हूं जिन्होंने मुझे इस मुकाम पर पहुंचाया। हर अभिनेता के जीवन में सबसे महत्वपूर्ण उसका फिल्मी सफर होता है और मेरा फिल्मी सफर छोटा न होकर बहुत मजेदार रहा है। सलमान खान ने 1988 में पारिवारिक नाटक बीवी हो तो ऐसी में एक सहायक भूमिका के साथ अपनी शुरुआत की। जिसके बाद उनकी भूमिका सूरज बड़जात्या की ब्लॉकबस्टर रोमांस मेन प्यार किया (1989) में उनकी सफल भूमिका थी जिसके लिए उन्हें सर्वश्रेष्ठ अभिनेता फिल्मफेयर पुरस्कार मिला था। 1990 के दशक की शुरुआत में, खान ने एक्शन ड्रामा बाघीः ए रिबेल फॉर लव (1990), एक्शन फिल्म पत्थर के फूल (1991), और रोमांस साजन (1991) में अभिनय किया, जो सभी आर्थिक रूप से सफल थे। हालाँकि, इस अवधि के दौरान उनकी अन्य रिलीज़, जिनमें सूर्यवंशी (1992), जाग्रति (1992), और दिल तेरा आशिक (1993) शामिल थी, व्यावसायिक रूप से विफल रही, जिसके परिणामस्वरूप उनके करियर में एक छोटा झटका लगा। 2011 में, खान ने अपनी निर्माण कंपनी सलमान खान बीइंग ह्यूमन प्रोडक्शंस के तहत बच्चों की फिल्म चिल्लर पार्टी का निर्माण किया था।

राज कपूर से ब्रेकअप के बाद आत्महत्या करना चाहती थीं नरगिस, फिर मिला सुनील दत्त का सहारा

मुम्बई। नरगिस दत्त ने अपने फिल्मी सफर की शुरुआत बचपन में फिल्म ''तलाश-ए-हक़'' 1935 में की थी। नरगिस दत्त जब बड़ी हुई तब उन्होंने 1942 में फिल्म तमन्ना से अपने आगे का सफर तय किया। नरगिस दत्त का असली नाम फ़ातिमा रशिद था। लेकिन बॉलीवुड की चमक में फ़ातिमा, नरगिस बन गई। नरगिस दत्त वो अदाकारा है जिन्होंने सिनेमा इंडस्ट्री को ऊंचाई पर पहुंचाया। नरगिस दत्त की फिल्म मदर इंडिया ने भारतीय सिनेमा को पहली ऑस्कर पुरस्कार दिलवाया। फिल्म मदर इंडिया में नरगिस दत्त ने साबित कर दिया कि आने वाले कलाकारों को बड़ी चुनौती का सामना करना पड़ेगा। नरगिस दत्त ने अपने फ़िल्मी सफर की शुरुआत बचपन में फिल्म 'तलाश-ए-हक़' 1935 में की थी। नरगिस दत्त जब बड़ी हुई तब उन्होंने 1942 में फिल्म तमन्ना से अपने आगे का सफर तय किया। इसके बाद नरगिस रुकी नहीं, उन्होंने लगातार हिट फिल्में दी। नरगिस दत्त 1957 में मदर इंडिया फिल्म के लिए एकेडमी अवॉर्ड के लिए नामांकित किया गया था, साथ ही इस फिल्म के लिए इन्हें सबसे अच्छी फिल्म अभिनेत्री का फिल्मफेयर पुरस्कार भी दिया गया था। इस मुकाम पर पहुंचने के बाद भी एक दौर आया जब नरगिस दत्त आत्महत्या करना चाहती थीं। जी हां सुनील दत्त से शादी करने से पहले नरगिस राज कपूर से प्यार करती थीं। वो राज के प्यार में इस कदर पागल थी कि जब राज कपूर नरगिस को छोड़ कर चले गये तब नरगिस को अगल होने का गम बरदाश्त नहीं हुआ। वो अपनी जिंदगी को खत्म कर लेना चाहती थी। तब नरगिस को सुनील दत्त का सहारा मिला।

सुनील दत्त से शादीः मदर इण्डिया की शूटिंग के दौरान सुनील दत्त ने उनके सामने विवाह का प्रस्ताव रखा जिसे उन्होंने सहज स्वीकार का लिया था। 11 मार्च 1958 को नरगिस ने सुनील दत्त से विवाह कर लिया और फिल्म इंडस्ट्री को अलविदा कह दिया। सुनील दत्त एक मशहूर फिल्म अभिनेता थे। उनके तीन बच्चे हुए, संजय, अंजू और प्रिया। वर्तमान में संजय दत्त फिल्म कलाकार है तथा प्रिया दत्त राजनीती से जुड़ी हुई है।

समाज सेवाः नरगिस एक अभिनेत्री से ज्यादा एक समाज सेविका रही हैं। उन्होंने नेत्रहीन और विशेष बच्चों के लिए काम किया था। वे भारत की पहली स्पास्टिक्स सोसाइटी की पेट्रन बनी थी। उन्होंने अजंता कला सांस्कृतिक दल बनाया जिसमें तब के नामी कलाकार-गायक सरहदों पर जा कर तैनात सैनिकों का हौसला बढ़ाते थे, उनका मनोरंजन करते थे। बांग्लादेश बनने के बाद 1971 में उनका दल पहला था जिसने वहां कार्य किया था।

इनका निधन 1981 में अगनशय कैंसर की वजह से हो गया था। इनके निधन से कुछ ही वर्षों पूर्व पुत्र संजय दत्त ने भारतीय सिनेमा में कदम रखा था। इनके निधन से ही तीन दिन बाद संजय दत्त की पहली फिल्म रोकी रिलीज हुई।

संजय की चिंता करते हुए ली आखिरी सांसः कैंसर के बाद उन्हें बेटे संजय की काफी फिक्र रहती थी। इलाज करवाने के लिए जब वो अमेरिका जा रही थीं तब उन्होंने सुनील को खत लिखकर संजय को लेकर अपनी चिंता जाहिर की थी। उन्होंने लिखा था- 'इस बात का खास ध्यान रखना कि संजय दोबारा बुरी आदतों में ना पड़े।' 1981 में उनकी मृत्यु मुंबई में ही हुई। नरगिस की याद में 1982 में नरगिस दत्त मेमोरियल कैंसर फाउंडेशन बनाया।

गिरते कैरियर ग्राफ पर बोली कैटरीना, कहा बुरा वक्त बहुत कुछ सिखाता है...

मुम्बई। अभिनेत्री कैटरीना कैफ ने कहा कि है वह अपने कैरियर में सभी तरह के उत्थान और पतन की शुक्रगुजार हैं क्योंकि इसने उन्हें एक अभिनेता के तौर पर परिपक्व होने में मदद की। 2000 के दशक में 'मैंने प्यार क्यूं किया', 'नमस्ते लंदन' और 'सिंह इज किंग' जैसी और अन्य फिल्मों में अभिनय से अपनी पहचान बनाने वाली कैटरीना हिन्दी फिल्म जगत की शीर्ष अभिनेत्रियों में से एक है। 'जीरो' फिल्म के अपने गीत 'हुस्न परचम' जारी करने के मौके पर संवाददाताओं के साथ बातचीत में कैटरीना ने कहा, ''मैं खुद को काफी भाग्यशाली मानती हूं कि इन सभी वर्षों में काफी सारी खूबसूरत चीजों का अनुभव मिला। मैंने उत्थान और पतन देखा है, सबसे

खराब समय और सबसे अच्छा समय। जिस चीज से मैं गुजरी हूं उसके लिए मैं खुद को भाग्यशाली मानती हूं।'' उन्होंने बताया, ''आज मैं खुद को भाग्यशाली मानती हूं कि 'जीरो' जैसी एक फिल्म में काम करने में सक्षम हूं और इसका हिस्सा इसलिए हूं क्योंकि आनंद सर, शाहरूख खान, अनुष्का शर्मा में इस तरह की प्रतिभा है। कैटरीना ने कहा कि वह खुश हैं कि उन्हें इस तरह का अवसर मिल रहा है।

रामानंद सागर की 'रामायण' के लिए पहली पसंद नहीं थे अरुण गोविल, निर्माता ने ऑडिशन में ही कर दिया था रिजेक्ट

मुम्बई। टीवी शो रामायण में भगवान राम का किरदार निभाने वाले अभिनेता अरुण गोविल ने खुलासा किया है कि वह इस किरदार के लिए पहली पसंद नहीं थे। एक नए इंटरव्यू में अरुण ने कहा कि रामायण बनाने वाले रामानंद सागर ने उनका ऑडिशन लिया था लेकिन उन्हें रिजेक्ट कर दिया था लकिन आखिर में उन्हें ही इस भूमिका के लिए चुना गया। अरुण ने कहा कि भगवान राम का किरदार निभाने से उनके मन पर गहरा प्रभाव पड़ा। रामायण का निर्माण, लेखन और निर्देशन रामानंद सागर ने किया था। 78-एपिसोड का यह धारावाहिक मूल रूप से 1987 से 1988 तक दूरदर्शन पर प्रसारित किया गया था। इस शो को तब काफी लोकप्रियता मिली जब इसे कोविड-19 महामारी के दौरान दोबारा प्रसारित किया गया। अब एक बार फिर से रामायण सोमवार, 3 जुलाई से टेलीविजन पर लौटने के लिए पूरी तरह तैयार है। समाचार एजेंसी एएनआई से बात करते हुए, अरुण ने कहा, '1977 से, मैंने राजश्री पिक्चर्स और सागर साहब के साथ अभिनय करना शुरू किया। मैंने आनंद सागर के निर्देशन में बनी फिल्म बादल में भी काम किया, और मैंने विक्रम और बेताल में भी काम किया और तभी मुझे पता चला कि रामानंद सागर 'साहब' हैं।' रामानंद सागर रामायण बना रहे थे, इसलिए मैंने उनसे संपर्क किया, मैं भगवान राम का किरदार निभाना चाहता था। हालांकि, उस समय पौराणिक कथाओं में काम करना बहुत मानक बात नहीं थी, और मैं बहुत सारी व्यावसायिक फिल्में कर रहा था। मेरे दोस्तों और परिवार ने कहा कि ऐसा करना आपके लिए अच्छा नहीं है। अरुण ने कहा, 'उन्होंने (रामानंद सागर) मेरा ऑडिशन लिया और ऑडिशन में उन्होंने मुझे रिजेक्ट कर दिया। उनके बेटे प्रेम सागर, मोती सागर और आनंद सागर ने मुझसे भरत और लक्ष्मण का किरदार निभाने के लिए कहा, लेकिन मैंने कहा कि, 'मैं चाहता हूं' भगवान राम की भूमिका निभाने के लिए और अगर मैं इसके लिए उपयुक्त नहीं हूं तो कोई बात नहीं', बाद में उन्होंने इस भूमिका के लिए किसी और को चुना।' हालांकि, कुछ दिनों के बाद उन्हें शो के निर्माताओं ने इस भूमिका के लिए बुलाया और आखिरकार उन्हें पौराणिक शो का हिस्सा बनने का मौका मिला।

फिल्म अबाणा से अपना फ़िल्मी सफर आरम्भ कराने वाली अभिनेत्री साधना

मुम्बई। भारतीय सिनेमा की प्रसिद्ध अभिनेत्री रही हैं। उन्होंने फ़िल्म अबाणा से अपना फ़िल्मी सफर आरम्भ किया था। साधना ने हिन्दी फ़िल्मों से जो शोहरत पाई और जो मुकाम हासिल किया, वह किसी से छिपा नहीं है। साधना का पूरा नाम साधना शिवदासानी (बाद में नैय्यर) था। वह अपने माता-पिता की एकमात्र संतान थीं। अपने बालों की स्टाइल की वजह से भी साधना प्रसिद्ध थीं, उनके बालों की कट स्टाइल साधना कट के नाम से जानी जाती है। साधना के पिता का नाम शेवाराम और माता का नाम लालीदेवी था। माता-पिता की एकमात्र संतान होने के कारण साधना का बचपन बड़े प्यार के साथ व्यतीत हुआ था। 1947 में भारत के बंटवारे के बाद उनका परिवार कराची छोड़कर मुंबई आ गया था। इस समय साधना की आयु मात्र छः साल थी। साधना का नाम उनके पिता ने अपने समय की पसंदीदा अभिनेत्री साधना बोस के नाम पर रखा था। साधना ने आठ वर्ष की उम्र तक अपनी शिक्षा घर पर ही पूरी की थी। ये शिक्षा उन्हें उनकी माँ से प्राप्त हुई थी। रूपहले पर्दे पर अपनी दिलकश अदाकारी से घर-घर में पसंद की जाने वाली साधना का विवाह आर.के. नैय्यर के साथ हुआ था, जिस कारण वह साधना नैय्यर के नाम से भी जानी गईं, किंतु उनका साधना नाम ही ज़्यादा प्रसिद्ध रहा। जब साधना स्कूल की छात्रा थीं और नृत्य सीखने के लिए एक डांस स्कूल में जाती थीं, तभी एक दिन एक नृत्य-निर्देशक उस डांस स्कूल में आए। उन्होंने बताया कि राजकपूर को अपनी फ़िल्म के एक ग्रुप-डांस के लिए कुछ ऐसी छात्राओं की ज़रूरत है, जो फ़िल्म के ग्रुप डांस में काम कर सकें। साधना की डांस टीचर ने कुछ लड़कियों से नृत्य करवाया और जिन लड़कियों को चुना गया, उनमें से साधना भी एक थीं। इससे साधना बहुत खुश थीं, क्योंकि उन्हें फ़िल्म में काम करने का मौका मिल रहा था। राजकपूर की वह फ़िल्म थी- श्री 420। डांस सीन की शूटिंग से पहले रिहर्सल हुई। वह गाना था- रमैया वस्ता वइया..।साधना शूटिंग में रोज़ शामिल होती थीं। नृत्य-निर्देशक जब जैसा कहते साधना वैसा ही करतीं। शूटिंग कई दिनों तक चली। लंच-चाय तो मिलते ही थे, साथ ही चलते समय नगद मेहनताना भी मिलता था। एक दिन साधना ने देखा कि श्री 420 के शहर में बड़े-बड़े बैनर लगे हैं। फ़िल्म रिलीज हो रही है। ऐसे में एक्स्ट्रा कलाकार और कोरस डांसर्स को कोई प्रोड्यूसर प्रीमियर पर नहीं बुलाता, इसलिए साधना ने खुद अपने और अपनी सहेलियों के लिए टिकटें ख़रीदीं। दरअसल, साधना यह

चाहती थीं कि वे पर्दे पर डांस करती हुई कैसी लगती हैं, उनकी सहेलियाँ भी देखें। सहेलियों के साथ साधना सिनेमा हॉल पहुँचीं। फ़िल्म शुरू हुई। जैसे ही गीत रमैया वस्तावइया.. शुरू हुआ, तो साधना ने फुसफुसाते हुए सहेलियों से कहा, इस गीत को गौर से देखना, मैंने इसी में काम किया है। सभी सहेलियाँ आंखें गड़ाकर फ़िल्म देखने लगीं। लेकिन गाना समाप्त हो गया और वे कहीं भी नज़र नहीं आईं। तभी सहेलियों ने पूछा, अरे तू तो कहीं भी नज़र ही नहीं आई। साधना की आंखें उनकी बात सुनकर डबडबा गईं। उन्हें क्या पता था कि फ़िल्म के संपादन में राजकपूर उनके चेहरे को काट देंगे। लेकिन यह एक संयोग ही कहा जायेगा कि जिस राजकपूर ने साधना को उनकी पहली फ़िल्म में आंसू दिए थे, उन्होंने आठ साल बाद उनके साथ दूल्हा दुल्हन में हीरो का रोल निभाया। 1958 में साधना ने अपनी पहली सिंधी फ़िल्म अबाणा की थी। इस फ़िल्म को करते समय उनकी आयु 16-17 वर्ष थी। अभिनेत्री शीला रमानी इस फ़िल्म की नायिका थीं और साधना ने इस फ़िल्म में उनकी छोटी बहन का किरदार निभाया था। उनकी देवआनंद के साथ एक फ़िल्म साजन की गलियाँ कुछ कारणों से थियेटर तक नहीं पहुँच सकी और प्रदर्शित नहीं हो पाई। साधना ने कई कला फ़िल्मों में भी अभिनय किया। रोमांटिक और रहस्यमयी फ़िल्मों के अलावा उन्हें कला फ़िल्मों में भी बहुत सराहा गया। उनकी हेयर स्टाइल आज भी साधना कट के नाम से जानी जाती है। चूड़ीदार कुर्ता, शरारा, गरारा, कान में बड़े झुमके, बाली और लुभावनी मुस्कान यह सब साधना की विशिष्ट पहचान रही है। चार फ़िल्मों में साधना ने दोहरी भूमिका निभाई थी। साधना की जो बेहद कामयाब फ़िल्में रही है, उनमें- लव इन शिमला, मेरे महबूब, आरज़ू, वक़्त, वो कौन थी, मेरा साया, हम दोनों, वंदना, अमानत, उल्फ़त, बदतमीज, इश्क पर ज़ोर नहीं, परख, प्रेमपत्र, गबन, एक फूल दो माली और गीता मेरा नाम आदि का नाम प्रमुखता से लिया जा सकता है। साधना के प्रमुख नायकों में जॉय मुखर्जी, देव आनंद, सुनील दत्त, मनोज कुमार, शम्मी कपूर, राजेन्द्र कुमार, राज कपूर, फ़िरोज़ ख़ान, शशि कपूर, किशोर कुमार, संजय ख़ान और वसंत चौधरी आदि का नाम आता है। इन दिनों साधना प्रशंसकों के बीच नहीं आती।

फिल्मो में देशभक्ति की पहचान मनोज कुमार

मुम्बई। बॉलीवुड में जब भी देश प्रेम की बात की जाती है तो प्रसिद्ध अभिनेता, निर्माता व निर्देशक मनोज कुमार को जरूर याद किया जाता है।

अपने देश के लिए मर मिटने की भावना को फिल्मों में मूर्त रूप प्रदान करने के लिए मनोज कुमार का भारतीय सिनेमा जगत में प्रमुख स्थान रहा है। 1967 में बनी फिल्म उपकार से देशप्रेम पर बनी फिल्मों की सफल शुरुआत के पश्चात, उन्होंने देशभक्ति की खुशबू में डूबी पूरब और पश्चिम, शोर व क्रांति जैसी कई हिट फिल्में दीं। मनोज कुमार ने अपनी फिल्मों के जरिए लोगों को देशभक्ति की भावना का गहराई से एहसास कराया, जिसने उन्हें हर दिल अजीज फिल्मकार बना दिया। इसी देशप्रेम की बदौलत उनके चाहने वाले उन्हें 'मिस्टर भारत' कहकर पुकारा करते थे। यूं तो मनोज कुमार की हर फिल्म यादगार रही परंतु उन्हें हरियाली और रास्ता, वो कौन थी?, हिमालय की गोद में, दो बदन, उपकार, पत्थर के सनम, नीलकमल, पूरब और पश्चिम, रोटी कपड़ा और मकान और क्रांति जैसी फिल्मों के लिए जाना जाता है। फिल्म जगत के इस प्रसिद्ध फिल्मकार मनोज कुमार (वास्तविक नाम : हरिकिशन गिरि गोस्वामी) का जन्म 24 जुलाई 1937 को अबोटाबाद, पाकिस्तान में हुआ। दिल्ली विश्वविद्यालय के हिंदू कॉलेज से स्नातक करने के बाद मनोज ने फिल्म इंडस्ट्री में प्रवेश करने का निर्णय लिया।

अपनी जवानी के दिनों में वे बॉलीवुड सुपरस्टार दिलीप कुमार से इतने प्रभावित थे कि शबनम (1949) फिल्म में दिलीप कुमार के नाम मनोज कुमार को हमेशा के लिए अपना लिया। निर्देशक लेखराज भाकरी की 1955 में बनी फिल्म 'फैशन' से बॉलीवुड में अपनी शुरुआत करने वाले मनोज कुमार के करियर को इस फिल्म ने कोई खास फायदा नहीं पहुंचाया था। करियर की इस खराब शुरुआत के बाद वह दौर भी आया जब उन्हें 1960 में बनी फिल्म 'कांच की गुड़िया' में अभिनेत्री सईदा खान के अपोजिट पहला लीड रोल मिला। इस फिल्म से दर्शकों के बीच मिली पहचान का मनोज कुमार ने पूरा फायदा उठाया और फिर पीछे मुड़कर नहीं देखा। इसके बाद पिया मिलन की आस, रेशमी रुमाल, हरियारी और रास्ता, वो कौन थी और हिमालय की गोद में जैसी हिट फिल्मों की लाइन लगा दी। सस्पेंस थ्रिलर फिल्म 'वो कौन थी' में मनोज कुमार ने साधना के साथ काम किया था। इस फिल्म को, 'लग जा गले' और 'नैना बरसे' जैसे सदाबहार गीतों के लिए आज भी याद किया जाता है।मनोज कुमार शहीद-ए-आजम भगत सिंह से बेहद प्रभावित हैं और इसी भावना ने उन्हें फिल्म 'शहीद' में देश के इस अमर सपूत को जीवंत करने की प्रेरणा दी थी। यह वही फिल्म थी जिसने इस महान अभिनेता को सच्चे देशभक्त की छवि प्रदान की। फिल्म में मनोज की परफार्मेंस से खुश हुए प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री ने उन्हें फिल्म उपकार बनाने की प्रेरणा दी, जिसे बॉलीवुड में आज भी देशप्रेम पर बनी खूबसूरत फिल्मों में गिना जाता है। इस फिल्म ने उन्हें फिल्मफेयर का सर्वश्रेष्ठ निर्देशक का पुरस्कार दिलाने के साथ ही 'मेरे देश की धरती' गाने से नई पहचान भी दिलाई।इसके बाद तो जैसे मनोज कुमार के दिल में बरसों से हिलौरें ले रहा देशप्रेम जाग उठा और जन्म हुआ सुपरहिट फिल्म पूरब और पश्चिम का। 1970 के मध्य में मनोज की एक के बाद एक तीन हिट फिल्में आईं। जीनत अमान के साथ सामाजिक मुद्दों पर बनी रोटी कपड़ा और मकान (1974) के लिए उन्हें सर्वश्रेष्ठ निर्देशक का दूसरा फिल्मफेयर अवॉर्ड दिया गया। इसी दौरान उन्होंने हेमामालिनी के साथ संन्यासी (1975) और दस नंबरी (1976) रिलीज हुई जो बॉक्स ऑफिस पर सफल रही।

ब्राइडल पैकेज से लेने से पहले...

ऐसे मौके पर आपकी सुंदरता को निखारने वाले मेकअप का चुनाव करना एक बहुत ही महत्वपूर्ण और जिम्मेदारी भरा काम है। इसलिए पैकेज का चयन करते समय ध्यान रखें कि इससे मेकअप की जरूरत पूरी हो रही है या नहीं, ताकि लास्ट मिनट पर किसी तरह की कोई कमी न रह जाए। ऐसे चुनें सही पैकेज। 1- बजट का हो खयाल : प्रोफेशनल मेकअप आर्टिस्ट ढूंढ रही हैं तो बजट 15 हजार से लाख-दो लाख तक भी जा सकता है। अच्छा होगा कि पहले दो-तीन जगह पता करें, सबकी तुलना करें और जो भी पैकेज आपके बजट में आता हो, उसका चुनाव करें। 2- कॉम्प्लीमेंट्री ऑफर्स : कुछ ब्राइडल पैकेजेस में दुलहन के साथ उसके करीबियों का मेकअप भी शामिल होता है। वेडिंग सीजन शुरू होते ही आपको ऑनलाइन और ऑफलाइन कई स्पेशल ऑफर्स दिखेंगे। सारी बातों को ध्यान में रखें और अपनी जरूरत के हिसाब से ही कोई पैकेज चुनें। 3- प्री-पोस्ट पैकेज : कई पैकेजेस शादी की अलग-अलग रस्मों के दौरान भी सर्विस देते हैं। जैसे मेहंदी, संगीत, शादी और फिर रिसेप्शन में आप इनका फायदा उठा सकती हैं। प्री-पोस्ट ब्राइडल मेकअप पैकेज लेकर आप अपनी शादी को खास और यादगार बना सकती हैं। 4- एक्स्ट्रा चार्ज : पैकेज लेने से पहले यह भी जरूर जान लें कि क्या इसमें हेयरस्टाइल और ज्यूलरी शामिल होगी। पता कर लें कि क्या पैकेज के तहत आपको शादी का जोडा पहनाने में मदद दी जाएगी क्योंकि कई बार लहंगे या गाउन को जरा सा ठीक करने पर भी एक्स्ट्रा चार्ज ले लिया जाता है। बेहतर होगा कि पहले ही सारी बातें स्पष्ट पूछ लें ताकि पैकेज में किसी तरह के हिडन चार्ज से बच सकें। 5- एक ट्रायल भी लें : शादी के कुछ दिन पहले मेकअप और हेयर ट्रायल जरूर लें। ट्रायल से आपको और मेकअप आर्टिस्ट को आइडिया मिल जाएगा कि आपकी स्किन टोन पर कौन सा मेकअप अच्छा दिखेगा या फिर कौन से लुक में आप ज्यादा आरामदायक महसूस कर रही हैं। ट्रायल लेने में झिझकें नहीं। समय कम होने पर भी इसे नजरअंदाज न करें। 6- समस्या का हल निकालें : अगर आपको स्किन से जुडी कोई समस्या है या किसी खास प्रोडक्ट से एलर्जी है तो मेकअप आर्टिस्ट को जरूर बताएं ताकि समय रहते उपचार हो सके और एलर्जी वाले प्रोडक्ट का इस्तेमाल न हो। क्या हो पैकेज में - पैकेज में शादी के पहले 2-3 हफ्ते से लेकर शादी के दिन तक की तैयारियों का विशेष ध्यान रखा गया हो।

स्वत्वाधिकारी
प्रकाशक एवं मुद्रक
डॉ. दीपक अरोरा
श्री आधुनिक प्रिन्टर्स एण्ड पैकेजर्स प्रा.लि.
1- मिर्जापुर रोड नैनी प्रयागराज उ.प्र. 211008 से मुद्रित एवं एम2ए/25 एडीए कालोनी नैनी प्रयागराज 211008 (उ.प्र.) से प्रकाशित
सम्पादक
डॉ.दीपक अरोरा
मो 0 न0 09415608783
RNI No. UPHIN/2012/41154
website:www.adhuniksamachar.com
नोटः- इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी0आर0बी0 एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होंगे।